

श्री राधाभाधव-युगलमुर्ति-प्रसाद

[illegible]

उसने किया : तु सदा दुष्कृतानुजिह्विनीं श्री सदा का ही विमान
 किया कर, उसने एक क्षण के लिए भी काली न भूल, वह मेरी
 लज्जिताया है हे सदा "तु सदा" इस सदा-मनुष्य नाम का नाम
 कहती रह सदा है वेद तु श्री सदा की परम परम परम सदा से
 विभक्त होकर इस श्री सदा का (श्री दुन्दुभिन) में सदा का
 किया कर।

महाराष्ट्र शासन, विद्यार्थी विकास विभाग



॥ श्री श्रीगोपीजनवल्लभायनमः ॥



प्रकाशक

सर्वेसर्वा ठाकुर श्री राधा-माधव
श्री सेवाकुंज प्रकाशन
श्री राधा-माधव-सेवा कुंज
माली नागौरियों का बास,
जोधपुर (राज.)

प्रथम प्रकाशन

माघ शुक्ल पूर्णिमा श्री कृष्ण से ५२२८ वि सं २०५९,

१६ फरवरी २००३

प्रतिया : ५०००



पुस्तक प्राप्ति स्थान

श्री राधा-माधव-सेवा कुंज
माली नागौरियों का बास, जोधपुर (राज.)
फोन नं ०२९९-२५४८७८५



अक्षर संयोजन

राज डाकिक्स

माली नागौरियों का बास
धीधली का चौक ऊपर जी गल्ली,
जोधपुर (राज.) फोन नं. ०२९९-२५४२५६७

इस पुस्तक को यह इसके किसी भी अंश को प्रकाशित करने, उद्धृत करने अथवा किसी भी भाषा में अनुदित करने का अधिकार सबको है। इनमें ठाकुरजी व लाडली श्री श्यामशर्मा के नाम रूप, गुण धाम लीलाओं आदि का संग्रह है। नाम रूप गुण, धाम व लीलाओं में ही ठाकुर जी व लाडलीजी पूर्ण रूप से समाये हुए हैं अतएव साक्षात् ठाकुरजी व लाडलीजी ही आप तक आपको स्तारवादित करने, कृतार्थ करने योग्य हैं। इनका अवश्य लाभ उठावें।

नवींछावर : निरुध्वाध्याय (यह निवेदन है)

॥ श्री श्रीराधिकायै नमः ॥

नम्र निवेदन और क्षमा प्रार्थना

सर्वसाधनहीनस्य पराधीनस्य सर्वथा ।
पापपीनस्य दीनस्य कृष्ण एव गतिर्मम ॥

वाणी गुणानुकथने श्रवणौ कथायां, हस्तौ च कर्मसु मनस्तव पादयोर्न
स्मृत्यां शिरस्तव निवास जगत्प्रणामे, दृष्टिः सतां दर्शनेऽस्तु भवतनूताम् ॥
(श्री मद्भागवत १०/१०/३८)

प्रभो! हमारी वाणी आपके मङ्गलमय गुणों का वर्णन करती रहे।
हमारे कान आपकी रसमयी कथा में लगे रहे। हमारे हाथ आपकी सेवा में
और मन आपके चरण कमलों की स्मृति में रम जाय। यह सम्पूर्ण जगत्
आपका निवास स्थान है। हमारा भरतक सबके सामने झुका रहे। रूढ़ि
आपके प्रत्यक्ष शरीर है। हमारी आँखें उनके दर्शन करती रहे।

मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी में है कि श्वास-श्वास में प्रभु की
स्मृति बनी रहे, वो गीठे लगे, उनकी खाद सताती रहे और समस्त अङ्गों
से उनका सेवन होता रहे। इससे व्यवहार में प्रेम, अधरों पर सहज
मुस्कान, मन में प्रसन्नता तथा सन्तोष होगा और मानव अपने को कृतकृत्य
अनुभव करेगा। गोपी भाव प्राप्त हो जायेगा। गोपी वही है जो समस्त
इन्द्रियों से श्रीकृष्ण को रस का आस्वादन कराती रहे। सन्त महापुरुष और
शास्त्र एक स्वर से कहते हैं कि ऐसी स्थिति वाले पुरुष का ही जीवन धन्य
है, वो ही आप्तकाम होकर प्रभु प्राप्ति करेंगे, अतः थोड़ी-थोड़ी देर में
श्रीप्रिया-प्रियतम से हृदय से करुण स्वर में यह प्रार्थना करते रहना चाहिये
कि वो ऐसी कृपा करे कि हम उन्हें कभी भूलें नहीं। यदि जीवन भर ऐसा
करते रहेंगे और यदि प्रारब्धवश अन्त समय में होश इत्यादि नहीं रहेगा, तो

भी वह प्राण-प्यारा स्वयं हमें याद करेगा, और हमारा काम हो जायेगा मनुष्य जीवन सफल हो जायेगा, जीवन का परम लाभ मिल जायेगा।

जीवमात्र के परमलाभ की प्राप्ति हेतु जो कुछ अच्छा लगा इस श्रीराधामाधव प्रभु की कृपा से 'युगलमूर्तिप्रसाद ग्रन्थ' में संकलित करने की चेष्टा की गई है। जो आप श्रीमान् के कर-कमलों में बड़े ही संकोच के साथ समर्पित किया जाता है, क्योंकि इसमें महापुरुषों के वचन हैं, वेद शास्त्रों का सार है, भावुक-भक्तों के आँसु हैं, भक्तों की निधि है, रसिकों का जीवन है, प्रेमियों का हृदय है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशन में प्रभु के प्यारे कई भक्तों का सहयोग मिला है, वो हमारे अभिन्न हृदय हैं, उनकी तारीफ करना आत्म प्रशंसा होगी, न वो तारीफ चाहते हैं, वे तो ठाकुर सेवा करके ही कृतकृत्य हैं। अपने को धन्य मानते हैं जो ठाकुर ने सेवा का मौका दिया।

आप सब के श्री वरणों में एक दिनस्र प्रार्थना है कि श्रीराधामाधव-युगल-मूर्ति प्रसाद ग्रन्थ का संग नित्य स्वाध्याय रूप से करें। ए बार तो यह ग्रन्थ आदि से अन्त तक अवश्य स्वाध्याय करें फिर जो आ आपकी रुचिकर लगे उसे नित्य नियम से पढ़े-पढ़ावे व इसका प्रचार करें। यह आपका है, आपके लिए ही साक्षात् ठाकुर आप पर कृपा करने आ तक पधारे है। आप हृदय खोलकर इनका स्वागत करें, आस्वादन कराते यही हृदय की अभिलाषा है।

इसे मात्र ग्रन्थ रूप में ही न देखें ये साक्षात् श्रीराधामाधव आप कृतकृत्य करने आपके कर-कमलों में पधारे हैं। श्रीउद्धव श्रीमद्भागवतजी में श्री शोकजी से कहते हैं—

स्वकीयं यद्वेत्तेजस्तत्तु भागवतेऽदघात् ।

तिरोधाय प्रविष्टोऽयं श्रीमद्भागवतार्णवम् ॥



श्री उद्धवजी कहते हैं कि— शोनक जी! तब भगवान् ने अपनी सारी शक्ति भागवत जी में रख दी, ये अन्तर्धान हो कर इस भागवत समुद्र में प्रवेश कर गये।

तेनेयं वाङ्मयी मूर्तिः प्रत्यक्षा वर्तते हरेः ।

सेवनाच्छ्रवणात्पाठादर्शनात्पाप नाशिनी ।

(श्री मद्भागवत-३/६२)

श्रीमद्भागवताख्यम् प्रत्यक्षः कृष्ण एव हि ।

स्वीकृतोऽसि मया नाथ मुक्त्यर्थं भव सागरं॥

(श्री मद्भागवत-६/३०)

इसलिए ये भगवान् की साक्षात् शब्दमयी श्रीविग्रह है। इसके सेवन, श्रवण पाठ अथवा दर्शन से ही मनुष्य के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। श्रीमद्भागवत के रूप में आप साक्षात् श्रीकृष्णचन्द्र ही विराजमान हैं। नाथ! मैंने भवसागर से छुटकारा पाने के लिये आपकी शरण ली है।

हैं श्रीगुजराजकुमार ठाकुर श्रीकृष्ण और हैं श्रीवृषभानुराज गन्दनी श्री राधे कोई एक अभाग जन्तु मरतक पर अंजली बाध कर दोनों में लूणदबाकर आर्त हृदय से प्रार्थना करता है कि कभी इस दीनहीन को आप दोनों की प्रत्यक्ष सेवा प्रदान करके कृतकृत्य करेंगे हालाँकि यह इस सेवा का अधिकारी नहीं है फिर भी आप इस पर ऐसी कृपा करें।

विद्वज्जनों से प्रार्थना है कि हमारी अयोग्यता से जो इसमें चुटि रह गई हो, उसे आप क्षमा करें व सुधारकर पढ़ें ये राधर नम्र निवेदन प्रार्थना है।

“श्री हरिःॐ तत् सत्”



अनुक्रमणिका

१	मङ्गलाचरण (श्रीकृष्ण परक)	१
२	मङ्गलाचरण (श्रीराधा परक)	२
३	श्री राधाकृष्णकटाक्षस्तोत्रम्	५०
४	श्री कृष्णकृष्णकटाक्षस्तोत्रम्	५५
५	श्री मधुसूक्तम्	५७
६	श्रीमङ्गलगीतम्	५८
७	श्रीकृष्ण स्तुति	५९
८	अथ श्रीराधा कवच	२०
९	श्री राधिकानाम गुणगान	२४
१०	श्री राधागुणगान	२८
११	श्री राधानगरकारस्तोत्रम्	३२
	श्री राधाजी के सोलह नाम	३३
	श्री राधाजी के अष्टाईस नाम	३३
	श्री राधाजी के सैंतीस नाम	३४
१२	श्री राधाजी का ध्यान	३५
१३	श्री ब्रह्माण्ड पुराणोक्त श्री राधा स्तोत्रम्	३७
१४	श्री राधिकाजी की श्रावण स्तुति:	३९
१५	आरती श्री वृन्दावनसुता की	४०
	आरती श्री गिरिवर घाटी की	४१
१६	श्री राधा मालीसा (श्री वृन्दावनजी कवि)	४२
१७	श्री राधाकृष्णगुणल कीर्तन	४५
१८	श्री राधाष्टकम्	४७
१९	श्री श्रीराधारानी की चिन्मय गुणावली	४९
२०	आरती श्री कुञ्जविहारी की व स्तुति	५०
२१	श्री राधा स्तवन एवं दोहे	५२
२२	वन्दना, प्रार्थना एवं दोहे	५७
२३	श्रीराधा विषयक - दोहे	६१
२४	श्री राम विषयक - दोहे	६२
२५	प्रेम भर दोहे	६३
२६	दोहे - श्री राममहिमा	६५
	पद एवं सवैया	६५
२७	गणवान की प्रतिज्ञा	६७



२८.	भक्त की अभिलाषा	६७
२९.	गाये जा राधे-राधे	६८
३.	राधे तेरे चरनों की एवं बरसाने की महिमा	७०
३१.	राधे-राधे कल्याणमयी	७१
	मन धूल मत जड़यो	७१
	वृषभानु की लली	७२
	प्रबल प्रेम के घाले पढ़ कर	७२
	महारी हुण्टी सिकाते महाराज	७३
	श्री युगल महामंत्र	७३
३२.	प्रातः स्मरण पंचकम्	७४
३३.	किशोरी तेरे चरनन् की	७५
३४.	कदम की छोंह हो	७५
३५.	भक्त की आर्त पुकार	७६
३६.	आप सब नियेर अरु दूरि	७७
	आजली देखो सुनो	७७
३७.	श्री कार्पण्य वंजिका स्तोत्र	७८
३८.	श्री राधवेन्द्र सरकार की आरती (जय जानकी नाथा)	८२
३९.	प्रातः कालीन प्रार्थना	८३
४०.	श्री राम कथा की महिमा एवं श्री तुलसी वन्दना	८४
४१.	श्री रामायणजी की प्रारम्भ विधि एवं मूल रामायण	८५
४२.	श्री रामायणजी की आरती	८७
	श्रीराम-स्तुति एवं श्रीरामायण जी के कथा की विसर्जन विधि	८८
४३.	श्री भगवान के श्रीवचन एवं घर आया लक्ष्मण राम	८९
	आनन्द आयो रे	९०
४४.	जो पे तुलसी न गावती	९१
	श्री गंगाजी की महिमा	९१
४५.	श्री कनक भवन अवध्याजी वं शृंगार-आरती के समय की स्तुति	९१
४६.	श्री हनुमान चालीसा एवं मंगल कामना	९२
	श्रीराधा नाम की महिमा	९४
४७.	शेरे नाथ (प्रार्थना) लकुरजी के अमनिया अर्पण करने का पद	९५
४८.	पुष्पाञ्जली	९६
४९.	श्री हनुमत् स्तवन एवं एकमुखि हनुमान कवच	९७
५०.	श्री हनुमानजी की आरती	९८
५१.	गजलगीता	९९
५२.	श्री गणपति महाराज की महिमा व प्रार्थना	१०१
५३.	श्री गणेशजी के सर्व विघ्ननाशक बारह नाम	१०२
५४.	लक्ष्मी प्राप्ति के लिये स्तोत्र एवं श्री सूर्य के बारह नमस्कार	१०४



५५.	सद्विचार	१०६
५६.	मगधत प्राप्ति का सुगम साधन- नमः लाली श्री हनुमच्छन्द की भक्ताना	१०७
५७.	शिखा (चोटी) धारण की महत्ता एवं आवश्यकता	१०८
५८.	चोटी के विषय में विदेशी विद्वानों के विचार	१०९
५९.	पंचांग एवं चार सुगम साधन पं. पृ. स्वामी श्री लमसुखदास जी महाराज	११०
६०.	सत्संग के निखरे मोती	१११
६१.	स्वास्थ्य के लिए व प्रार्थना	११२
६२.	यात्रा दिवाण और छीत फल	११३
६३.	श्री तुलसी विषयक पुराणवचन	११४
६४.	श्री तुलसी कीर्तन	११५
६५.	शास्त्रानुसार प्रदक्षिणा	११६
६६.	स्वास्थ्य की रक्षा एवं श्री रुनिपीडनाशक स्तोत्र	११७
६७.	श्री नवग्रहस्तोत्रम् एवं कवच	११८
६८.	कृपया ठिकाना नोट कर लीजिए	१२०
६९.	द्वादशज्योतिर्लिंगानि व अंशती	१२१
७०.	वर्षटपञ्जरी भाषाटीकया सहित	१२४
७१.	श्री गोपिका गीतम्	१३०
७२.	शिक्षा गुरु श्री कृष्ण की शिक्षा प्रणाली	१३८
७३.	श्री श्रीशिवकाराहस्यनामस्तोत्रम्	१४०
७४.	षोडश गीत (पूजा श्री हनुमानप्रसाद जी पीछर)	१४६
७५.	मुष्णिका	१४९
७६.	श्री हनुमानप्रसाद जी पीछर के सद्गुणेश	१८२
७७.	ऋग्वेदीय श्री रुचिकल्पनिघन्	१८६
७८.	अथर्ववेदीय श्रीशक्तिकातापनीयोपनिषद्	१८९
७९.	श्री राधास्वामिजी	१९२
८०.	प्रिया प्रसाद	१९६
८१.	श्री राधानाम सुधा रचयिता पं. धामीराजी शारत्री	२०९
८२.	श्री राधा ध्यान (पद)	२१२
८३.	श्री लघाकृष्णकटक्षस्तोत्राज का प्रधानुवाद	२२२
८४.	वैष्णव ग्रन्थों के ६४ अपराध	२२५
	बर्तमान प्रकार के सेवा अपराध	२२७
	नाम के दस अपराध	२२८
८५.	श्री राधाजी का कीर्तन वृन्दावन में राधा-राज	२२९
८६.	ग्रन्थ में दूईवी पुराणानि गाननि	२३१
८७.	क्षमा प्रार्थना एवं कातर प्रार्थना	२३२

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ श्री गोपीजनवल्लभाय नमः ॥

ॐ

ॐ श्री गीत पातु ॐ

॥ श्रवणं पठनं स्मृतिं तन्मयं नित्यम् ॥

(नित्य स्वाध्याय योग्यं गन्धं नित्यं संवनीयं महाप्रसादः)

॥ श्री राधाकृष्णभ्यां नमः ॥

मङ्गलाचरण (श्री कृष्ण परक)

कस्तूरी तिलकं ललाट पटले वक्षःस्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।
सर्वीङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली
गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालबुद्धामणिः॥

जिनके मस्तकपर कस्तूरीका तिलक है, वक्षःस्थलमें कौस्तुभमणि है, नासिकाय में आति सुन्दर मोतीकी बुझाक है, करतलमें वंशी है, हाथों में कङ्कण है, सम्पूर्ण शरीर में हरिचन्दनका लेप हुआ है और कठने नगोहर मोतियोंकी माला है, बजाइनाओं से घिरे हुए है, ऐसे गोपाल-बुद्धामणिकी बलिहारी है।

फुल्लेन्द्रीवरकविमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्साङ्गमुदात्तकौस्तुभघरं पीताम्बरं सुन्दरम्।
गोपीनां वयसोत्पलार्चितराजं गोमोपसङ्गवृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे॥

जिनका मुखचन्द विकसित कमलके सदृश है, जिनको मोरमुकुट अतिप्रिय है, जिन्होंने वक्षःस्थलपर श्रीवत्स चिह्न और सुन्दर कौस्तुभ मणि धारण किये हैं, जो पीताम्बरधारी एवं सुन्दर हैं गोपायनाङ्गोंके लयन कमलोंसे जिनका सुन्दर शरीर सम्पूजित है। गो और गोपियोंके समूहसे आवृत है, उन मधुर मुखलिका वजाते हुए दिव्य भूषण-भूषित गोविन्दको मैं भजता हूँ।

एकोऽपि कृष्णस्य कृतः प्रणामो
दशाश्वमेधाऽवभृद्येन तुल्यः।

दशाश्वमेधी पुनरेति जन्म
कृष्णप्रणामी न पुनर्भवाय ॥

भगवान् श्रीकृष्ण के लिये किया गया एक बारका भी प्रणाम दस अश्वमेधयज्ञ के अनुष्ठान की समाप्ति पर किये जाने वाले अवभृथ-स्नान के बराबर (फलप्रद) है। सन चूँटा जाय तो एक बार किया गया यह प्रणाम दस अश्वमेधयज्ञ से भी बढ़कर होता है, क्योंकि दस अश्वमेध पारने वाला व्यक्ति फिर से जन्म ग्रहण करता है, किन्तु भगवान्



श्रीकृष्ण को प्रणाम करने वाला फिर जन्म ग्रहण नहीं करता अर्थात् मुक्त हो जाता है ।।

गोविन्द गोविन्द हरे मुरारे

गोविन्द गोविन्द मुकुन्द कृष्ण ।

गोविन्द गोविन्द रघाङ्गपाणे ।

गोविन्द गोविन्द नमो नमस्ते ॥

हे गोविन्द! हे गोविन्द! हे हरे! हे मुरारे! हे गोविन्द! हे गोविन्द! हे मुकुन्द! हे गोविन्द! हे गोविन्द! हे रघाङ्गपाणे! हे गोविन्द! हे गोविन्द! आपको बार-बार नमस्कार है।

कृष्णाय वासुदेवाय देवकीनन्दनाय च

नन्दगोपकुमाराय गोविन्दाय नमो नमः ॥

हे देवकी को आनन्दित करनेवाले वासुदेव श्रीकृष्ण तथा हे नन्दगोपकुमार गोविन्द! आपको बार-बार नमस्कार है ।।

नमो ब्रह्मण्यदेवाय गोब्राह्मणहिताय च ।

जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥

ब्राह्मणों के हितार्थी, गौ और ब्राह्मण का कल्याण करने वाले भगवान को नमस्कार है। जगत का हित करने वाले कृष्ण गोविन्द को बार-बार नमस्कार है ।

कृष्ण कृष्णेति कृष्णेति यो मां स्मरति नित्यशः ।

जलं भित्त्वा यथा पद्मं नरकादुद्धराम्यहम् ॥

नित्यं वदामि मनुजाः स्वयमूर्ध्वबाहु-

र्यो मां मुकुन्द नरसिंह जनार्दनोति ।

जीवो जपत्यबुद्धिर्न मरणे रणे वा

पापानकाष्ठसदृशाय ददाम्यभीष्टम् ॥

श्री कृष्ण ने (स्वयं) कहा- जो निरन्तर 'कृष्ण', 'कृष्ण', 'कृष्ण' कहकर मेरा स्मरण करता रहता है, उसको नरक से भी उसी तरह निकाल लेता हूँ, जैसे जल फोड़कर कमल निकल आता है । हे मनुष्यो! मैं स्वयं ऊपर भुजा उठाकर सदा कहा करता हूँ कि जो जीव मुझे प्रतिदिन मरण-काल में या रणको स्थिति में मुकुन्द, नरसिंह, जनार्दन- इस तरह जपता रहता है, उस व्यक्ति को मैं उसकी अभीष्ट वस्तु दे देता हूँ । भले ही उसका हृदय पत्थर या काँचकी तरह कठोर हो।

कृष्ण त्वदीयपदपङ्क्तजपिपुरान्ते

अष्टौव मे विशतु मानसराजहंसः ।

प्राणप्रयाणसमये कफवातपित्तैः

कण्ठवरोधनविधौ स्मरणं कुतस्ते ।

हे कृष्ण! आपके चरण-कमलरूपी पिण्ड में मेरा मन रूपी राजहंस आज ही प्रवेश कर जाय, क्योंकि शरीर से प्राण निकलते समय कण्ठ कफ, वात और पित्त से अवरोध हो जाता है, उस अवसरपर आपका स्मरण कैसे हो सकता है?

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

मङ्गलाचरण (श्री राधा परक)

सङ्केत- निखिल निगमागम अंगोपर रस-रीति प्रकाशक, सफल ससिद्धिजन वन्दित वरण, हिताकार, वरी-स्वरूप, श्रीमदाचार्य व्यास-नन्दन श्रीहित हरिवंशचन्द्र महाप्रभु अपने गुरु के प्रारम्भ में स्वच्छ-प्रभाव वर्णनात्मक मङ्गलाचरण करते हैं।

मूल- यस्याः कदापि वसनाञ्चल खेलनोत्थ,
धन्यातिधन्य पवनेन कृतार्थमानी।
योगीन्द्र दुर्गमगतिर्मधुसूदनोऽपि
तस्या नमोस्तु वृषभानुभुवो दिशोऽपि ॥

भावार्थ- किसी समय जिनके नीलाञ्चल के हिलने से उठे हुए धन्यातिधन्य पवन को स्पर्श करके योगीन्द्रों के लिये अति दुर्गम गति मधुसूदन ने भी अपने आपको कृतकृत्य माना मैं उसी श्रीवृषभानुनन्दिनी की दिशा को प्रणाम करती हूँ।

प्रथम जिनकी दिशा को नमस्कार कर चुके हैं अब उसी की महिमा को नमस्कार करते हैं -

ब्रह्मेश्वरादि सुदुरुह पदारविन्द
श्रीमत्पराग परमाद्भुत वैभवायाः।
सर्वार्थसार रस वर्षिकृपाद्रदृष्टे
स्तस्या नमोस्तु वृषभानु-भुवो महिम्ने॥

जिनके परम कमल ब्रह्मा शंकर आदि के लिये भी अत्यन्त दुरुह हैं, जिन सरपकमलों का शोभाजन पराग परम अद्भुत वैभवशाली है, एवं जिनकी कृपा रस बीनी दृष्टि समस्त अर्थों के भी सार रस (प्रेम) का वर्णन करती है, मैं उसी श्रीवृषभानुनन्दिनी की महिमा को नमन करती हूँ।

महिमा को नमस्कार करके श्रीप्रियाजी की प्रति आपने उनसे अपनेपन का भाव प्राप्त किया है, अतएव अब कुछ समीपता से उनके श्रीचरण रेणु का स्मरण करते हैं -

यो ब्रह्मरुद्र शुक नारद भीष्म मुख्यै -

सालक्षितो न सहसा पुरुषस्य तरय।
सद्योवशीकरण चूर्णमनन्तशक्तिं
तं राधिकाचरणरेणुमनुस्मरामि॥

जो परम पुरुष श्रीकृष्ण, ब्रह्मा, शङ्कर, शुकदेव, नारद और भीष्म जैसे प्रमुख (भागवतों) को भी सहसा आलक्षित नहीं होते, उनकी श्रीकृष्ण को तत्काल हर में करने वाले अनन्त शक्ति भूषण श्रीराधिका-चरण रेणु का मैं अनुस्मरण करती हूँ।

पुनः उसी चरण रेणु की महिमा का गान करते हैं -

आधायमूर्धनियदापुरुन्दार गोप्यः
काम्यं पदं प्रियगुणैरपि पिच्छमीलेः।
भावोत्सवेन भजतां रस कामधेनुं
तं राधिका चरण रेणुमहं स्मरामि॥

जिस चरणरेणु को उदार गोपियों ने अपने अपने मरतक पर धारण करके मयूज-पिचध्वारी स्वामनुन्दार के सधुर गुणों सहित अपना मनोवाञ्छित पद प्राप्त किया तथा जो चरणरेणु भाग्य सन्तुल्लाह पूरेक लेवन करने वाले (भाग्य मन्त्री) के लिये रसदाता कामधेनु ही है, मैं उसी श्रीराधिका-चरण रेणु का स्मरण करती हूँ।

जब श्रीप्रियाजी के परम स्वभाव लक्षण का वर्णन करते हुए उन्हें अपने हृदय में स्फुरित देखना चाहते हैं -

वैदग्ध्यसिन्धुरनुशाग रसैक सिन्धु
वात्सल्य सिन्धुरतिसान्द्रकृपक सिन्धुः।
लावाण्य सिन्धुरमृतच्छविरुप सिन्धुः
श्रीराधिका स्फुरतु मे हृदि केलि सिन्धुः॥

जो विदग्धता की सिन्धु, अनुशाग रस की एकमात्र सिन्धु, वात्सल्य-भाव की सिन्धु, अत्यन्त घनीभूत कृपा की एकमात्र सिन्धु, लावाण्य की सिन्धु और छवि रूप अमृत की आधार सिन्धु है। वे केलि सिन्धु श्रीराधा मेरे हृदय में स्फुरित हैं।

अब श्रीलासिनीजी की कृपावलोकन की याचना करते हैं -

पत्रावली रचयितुं कुचयोः कपोले
वद्धं विचित्र कवरी नव मल्लिकाभिः।
अङ्गं च भूषयितुमाभरणैर्घृताशे
श्रीराधिके मयि विधेहि कृपावलोकम्॥



हैं श्रीलोकों। मैंने तो केवल यही आज्ञा धारण कर रखी है और आप में गुह्य पर अपनी कृपा दूँगी का ऐसा ही विधान करे कि मैं आपके युगल-कवच भण्डाल और गोपनीय गह (विचित्र-विचित्र) प्रकाशनी रखना करूँ। नलिनका के नवीन नवीन गुणों को गूँथकर विचित्र रीति से आभूषण करके-बनाने करूँ और आपकी सुन्दर लकीरों में तदनुरूप आभरण आभूषित करूँ।

अब युगल जीवन की एक जाँगी -

करे कमलमद्भुतं भ्रमयतोर्मिथोऽर्पित

स्फुरत्पुलक दोलता युगलयोः स्मरान्मत्तयोः॥

सहास-रस-पेशलं मद करीन्द्र-भञ्जीशते

गतिं रसिकयोर्द्वयोः स्मरत चारु वृन्दावने॥

अद्भुत कमल को हृदयों में धुमाते हुए, एवं परस्पर स्तननीय पर पुलकित भ्रमस्तथा अर्पित किये हुए, ज्ञानोन्मत्त वृन्दावत-वैद्यरी, शरीरक युगल की सहास-रस-सुन्दर, शत-शत मदपूर्ण करीन्द्र-गतिमान् भञ्जीमुखों के रत्नान् गति का (हैं मेरे मन!) तु स्मरण कर ?

जब युगल शिखार के मिलन रस को अपने हृदय में डेलने की भावना करते हैं -

अन्योन्यहास परिहास विलास केली

वैचित्र्य जृम्भित महारस-वैभवेन।

वृन्दावने विलसतामहृतं विदग्ध -

हृदेन केनचिदहो हृदयं मदीयम्॥

अहो! पारस्परिक हास-परिहास युक्त विविध-विलास केलि की विचित्रता से लच्छलित महारस-वैभव के द्वारा श्रीवृन्दावन में विलास करने वाले किन्हीं विदग्ध युगल ने मेरे हृदय को अपहरण कर लिया।

जब श्रीस्वामिनीजी के एकान्त विलास का की छटा का अभिसिद्धन प्राप्त करने की प्रार्थना करते हैं -

श्रीराधिके सुरतरङ्गि नितम्ब भागे

काशीकलाप कल हंस कलानुलपैः।

मन्जीरसिञ्चित मधुव्रत गुञ्जिताङ्घ्रि घ्नः

पङ्कजैः शिशिरयस्य रसच्छटाभिः॥

हे राधिके! हे सुरत-कैलि-सन्निहत नितम्ब भागे! अहो! आपका यह काशी-



कलाप क्या है मानो कल हैसी का वज्र-कल अनुलाप है। और चरण-कमलों के गुणों की मन्द मन्द झनकार ही मानो मतवाले भ्रमों का गुञ्जन है। स्वाभिनी! आप अपने इसी सतुर-रस को छटा से मुझे जीतल कर दीजिए।

* * *

अब अद्भुत प्रेम प्रवाह रुपा की प्रियाजी का सान्निध्य प्राप्त करने की राधिका कर्त्त है -

श्रीराधिके सुरतरङ्गिणि दिव्यकेलि

कल्लोल मालिनी लसद्वदनारविन्दे।

श्यामामृताम्बुनिधि सङ्गमतीव्रवेगि -

न्यावर्त्तनाभि रुचिरे मम सन्निधेहि॥

हे दिव्यकेलि तरङ्गमाले! हे शोभमान् वदनारविन्दे! हे श्यामसुन्दर-सुधा-सागर सङ्गमार्थ तीव्र वेगवती! हे रुचिर नामित्य गम्भीर मैत्र से शोभायमान सुरत-ललिते! (मन्दाकिनी रूपे!) हे श्रीराधिके! आप मुझे अपना समीप्य प्रदान किजिए।

* * *

अब श्रीरतिलालिजी अपनी स्वाभिनीजी का प्रेमालिङ्गन प्राप्त करने की आशिलापा करती है -

दृष्ट्वैव चम्पकलतेव चमत्कृताङ्गी

वेणुध्वनि व्यक्त निशम्य च विह्वलाङ्गी।

सा श्यामसुन्दर गुणैरनुगीयमानैः

प्रीता परिष्वजतु मां वृषभानुपुत्री॥

जो अपने प्रियतम श्रीलालजी को देखते ही चम्पकलता को समान मध-अङ्ग से चमत्कृत हो उठती हैं और कभी मन्द-मन्द वेणु ध्वनि को सुनकर जिनकी समस्त अङ्ग विह्वल हो उठते हैं। अहो! वे श्रीवृषभानुनन्दिनी मेरे द्वारा गाये हुए अपने प्रियतम श्यामसुन्दर के गुणों को श्रवणकर क्या कभी मुझे प्रीतिपूर्वक आलिङ्गन करेंगी ?

* * *

अब श्री वृषभानुनन्दिनी का नाम प्रकट करते हैं -

अमन्द प्रेमाकृतलथ सकल निर्वन्धहृदयं

दयापारं दिव्यच्छवि मधुर लावण्य ललितम् ।

अलक्ष्यं राधाख्यं निखिलनिगमैरप्यतितरां

रसाम्भोधेः सारं किमपि सुकुमारं विजयते॥

तीव्र प्रेम के कारण जिनकी हृदय ने समस्त बन्धन (आग्रह) शिथिल हो चुके हैं जो दया की सीमा है। एवं जिनकी दिव्य छवि लावण्य माधुर्य से अति ललित हो रही है वे निखिल-निगमों को भी अत्यन्त अलजित, रस समुद्र की सार

हृदय) कोई एक अनिर्वचनीय सुकुमार है। उन श्रीराधा की जगह है, विजय है।

श्रीलालजी का विमोहन करने वाली श्रीप्रियाजी की परिधियों (रोदा) करने की आकांक्षा करते हैं-

येणुः करान्निपतितः स्खलितं शिखण्डं
भ्रष्टं च पीतवसनं ब्रजराज सूनोः।
यस्याः कटाक्ष शरपात विमूर्च्छितस्य
तां राधिका परिचरामि कदा रसेन॥

जिनके नयन-वाणी की वोट से श्रीब्रजरजकुमार की नुरली हाथ से छुट गिरती है। शिर का मोर मुकुट खिसक चलता है और पित्तम्बर भी स्थान-ध्रुत हो जाता है, यहाँ तक कि वे मुर्च्छित होकर गिर पड़ते हैं। अहा! क्या मैं कभी ऐसी श्रीराधिका की प्रेम पूर्वक परिधियाँ ऊँहूँगी ?

श्रीस्वामिजीजी की परिधियाँ ही मुझे जन्म जन्म मिलती हैं अब वह अभिलाषा करते हैं-

तस्या अपार रस सार विलास-मूर्ते
रानन्द कन्द परमाद्भुत सौम्य लक्ष्म्याः।
ब्रह्मादि दुर्गमगतेवृषभानुजायाः
कैङ्कर्यमेव ममजन्मनि-जन्मनि स्यात्॥

जो अपार रस सार की विलास-मूर्ति, आनन्द की मूल एवं ब्रह्माद्भुत सुख की सम्पत्ति है एवं जिनकी गति ब्रह्मादि को भी दुर्गम है। उन श्रीवृषभानुजाम्बिका जी का कैङ्कर्य ही मुझे जन्म जन्मान्तरों में प्राप्त होता रहे।

फिर भी उपलब्धानुराग ही -

पूर्णानुराग रसमूर्ति तडिल्लतामं
ज्योतिः परं भगवतो रतिमद्रहस्यम्।
यत्प्रादुरस्ति कृपया वृषभानु गेहे
स्यात्किङ्करी भवितुमेव ममाभिलाषः॥

एक रहस्यमयी परम ज्योति है। जो परस्पर परमदुरुप भगवान् श्रीकृष्ण को भी अपने आध में रग लेती है। जिसकी कान्ति विद्युत्त्वता के समान देदीप्यमान है। जिस को पूर्णतम अनुराग-रस की मूर्ति है। अहा! कृपापूर्वक ही वह श्रीवृषभानु भवन में प्रादुर्भूत हुई है। मेरी तो यही अभिलाषा है कि उसी की दासी हो रहूँ।



श्रीप्राणाजी के सुकुमार बरण गल्लियों को अपने सिर पर धारण करने की अभिलाषा करने हैं -

सत्प्रेम सिन्धु मकरन्द रसौघधारा

सारानसमभितः स्रवदाश्रितेषु।

श्रीराधिके तव कदा चरणारविन्दं

गोविन्द जीवनधनं शिरसा वहामि॥

जो अपने आश्रित-जनों पर सत्प्रेम (महाप्रेम) समुद्र के समुद्र मकरन्द-रस को प्रबल धारा अनवच्छेद रूप से धारी और से बरसाते रहते हैं तथा जो गोविन्द के जीवन-धन हैं श्रीराधिके। आपके उन चरण कमलों को मैं कदा अपने सिर पर धारण करूँगी।

श्रीवृन्दावन*का महत्व वैकुण्ठ से भी अधिक है। इसका प्रकारा करते हुए अब यह प्रकट करते हैं कि श्रीराधिका-किङ्करीयों के अतिरिक्त यह वृन्दावन सबके लिए अगम्य है-

किं ब्रूमोन्यत्र कुण्ठीकृतकजनपदे धाम्न्यपि श्रीविकुण्ठे

राधा माधुर्यं वेत्तामधुपतिरथ तन्माधुरीं वेत्ति राधा।

वृन्दारण्य-स्थलीयं परम-रस-सुधा-माधुरीणां धुरीणां

तद्वृन्दं स्वादनीयं सकलमपि ददौ राधिका किङ्करीभ्यः॥

अन्यत्र की तो बात है वहाँ श्रीविकुण्ठ नाम भी (श्रीराधा माधुर्य के जन्म) से। कुण्ठित प्रदेश बन गया है, क्योंकि श्रीराधा के माधुर्य को केवल श्रीमाधव ही जानते हैं। और श्रीमाधव के माधुर्य को केवल श्रीराधा जानती हैं। और आरवाकनीय युगल को परम रस सुधानाधुरी-अग्रगण्य श्रीवृन्दारण्य स्थली ने श्रीराधा-किङ्करी-गणों को सम्पूर्ण रूप से प्रदान कर दिया है।

की राधा-सुधा-निधि श्रीवृन्दारण्यस्थली महामुखी की प्रताप से साकार

अथानप्रेमविबोधिनी मधुरिमाधाराधरे स्मेरिणी

नीरी प्रेमवती शुभा च सुमना प्रेमाधिसवर्धिनी।

जण्डे मण्डितकुण्डला कटितटे धत्ते मुदा किङ्करीणी

लीलाः काव्यं देहिनी विजयते वृन्दावनस्थाधिनी॥

शुद्धस्वर्णविहगिनी परिलसन्नाप्रव्वसन्मोहिनी

नानारत्नविलासिनी मधुरिमाधाराधरे वशिनी।

कृष्णधर्मतरंगिणी जितवर्धि प्रेमाभूतालापिनी

अथानप्रेमविबोधिनी विजयते राधासुधादेहिनी॥

राधां रासेश्वरीं रुक्मां ओषिण्डमोहिनीं पराम् ।
 कृष्णप्राणाधिकां राधां जन्मति परमेश्वरीम् ॥
 राधे वृन्दावनाधीशे कृष्णामृतमहिनि ।
 कृपया त्रिजगदाञ्जलदास्त्वं मङ्गं प्रदीयताम् ॥
 वन्दे वृन्दावनाञ्जलां राधिकां परमेश्वरीम् ।
 ओषिकां परमां श्रेष्ठां ह्यविर्जीं शक्तिरूपिणीम् ॥
 त्वं मे प्राणाधिका राधे प्रेक्षसी च वलज्जले ।
 यथा त्वं च तथाहं च ओदो हि नावयोर्धुक् ॥
 यथा क्षीरे च धावत्यं यथाञ्जो वाहिका सति ।
 यथा पृथिव्यां बन्धश्च तथाहं त्वयि संततम् ॥
 तप्तकाञ्चनगौराङ्गी राधे वृन्दावनेश्वरि ।
 वृषभानुसुते देवि त्वां जन्मति हरिप्रिये ॥
 जवीजां हेमगौराङ्गीं प्रवरेन्वीकलम्बराम् ।
 वृषभानुसुतां वन्दे वृन्दावनिप्रियासिनीम् ॥
 तप्तकाञ्चनगौराङ्गीं रङ्गिणीं प्रमदप्रकृतिम् ।
 वृषभानुसुतां वन्दे वृन्दावनिप्रियासिनीम् ॥
 जवीजां हेमगौराङ्गीं पूजन्निन्दवतीं सतीम् ।
 वृषभानुसुतां देवी वन्दे राधां जलप्रसूम् ॥
 राधां रासेश्वरीं रुक्मां ओषिण्डमोहिनीं पराम् ।
 वृषभानुसुतां देवीं जन्मति श्रीहरिप्रियाम् ॥
 मलामावस्तरूपा त्वं कृष्णप्रिया वरीयसी ।
 प्रेमशक्तिप्रवे देवि राधिके त्वां जन्मत्यहम् ॥
 राशोत्सवविभ्रासिनि जन्मसो परमेश्वरि ।
 कृष्णप्राणाधिके राधे परमानन्दविग्रहे ॥

नमस्ते श्रियै राधिकायै परायै
 नमस्ते नमस्ते मुकुन्दप्रियायै ।
 सदानन्दरूपे प्रसीद त्वमन्ताः
 प्रकाशे स्फुरन्ति मुकुन्देन राघवम्



भजामि राधामरविन्दनेत्रा
 स्मरामि राधा मधुररिगतारव्याम् ।
 वदामि राधा करुणामरादाम्
 ततो ममान्यास्ति गतिर्न कापि ।।
 येय राधा यश्च कृष्णो रसाब्धि-
 रैहम्बैकः क्रीडनार्थं द्विषामूत् ।
 देहो यथा छाया शोभमान-
 शृण्वन् पतन् गतिं तद्धाम नित्यम् ।।

- ॐ नमः -

। श्री राधाकृष्णभ्यां नमः ।।

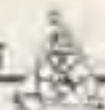


श्रीराधाकृपाकटाक्षस्तवराज

मुनीन्द्रवृन्दवर्निशो प्रशोकशोकहारिणि
 प्रसन्नवक्त्रपद्मे निकुंजभूषितारिणि ।
 प्रजेन्द्रभानुवर्निनि प्रजेन्द्रसूनुसमते
 कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥२॥

राजा वृषभानुकी लाडिली श्रीराधिके। मुनीन्द्र-वृन्द आपके चरणोंकी वन्दना करते हैं, आप तीनों लोकोंका शोक दूर करनेवाली हैं, आपका मुखकमल सदा प्रफुल्लित रहता है, आप निकुंज-भवनमें बिलास करनेवाली और श्रीवज्रराजकुमारकी ससिनो हैं, आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका पात्र कब बनायेंगी।

प्रशोकपृष्ठवल्लरीवितानजण्डपरिधते
 प्रवालवालपल्लवप्रभारुणादधिक्योजले ।
 वराशवस्तुराचरे प्रभूतसम्पदालये
 कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ३॥



अपार ऐश्वर्यकी मण्डार श्रीराधिके! आप असोकवृक्षकी लताओंके चितानसे सुशोभित मण्डपमें विराजमान रहती हैं, आपके वीरमल वरण मूंगे तथा नवीन लाल-लाल पल्लवोंके सद्गुण अलङ्कारके हैं। आपके वरद हस्त सदा अभय दान देनेके लिये उद्यत रहते हैं, आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका पात्र कब बनायेंगी?

अनङ्गरङ्गमङ्गलप्रसन्नभङ्गुरभुवां

सुविभ्रमैः सराम्भ्रमैर्बुलन्तबाणपातकैः ।

निरन्तरं प्रक्षीकृतप्रतीतनन्दनन्दने

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥३॥

प्रेम-कीटाके रंग-मंचपर मङ्गलमय प्रसंगमें बौकी मुकुटियोंके साथ सहसा प्रेम विस्मयकारक कटाक्षरूप बाणोंकी वर्षासे श्रीनन्दनन्दनको विश्वासपूर्वक निरन्तर उत्तम कर देनेवाली श्रीराधिके! आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका पात्र कब बनायेंगी?

तडित्पुवर्णचम्पकप्रदीप्तशौरकिङ्करे

गुह्यप्रभापरास्तकोटिशारङ्गेषुमण्डले ।

विचित्रविचित्रलंचरच्छकोरशावलोचने

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥४॥

श्रीराधिके! आपका श्रीविग्रह बिजली रवण तथा चम्याके पुष्पके समान लुनहली कान्तिसे इदीप्तमान गौर वर्णका है, आपके मुखकी प्रभा करोड़ों शारदीय चन्द्र-मण्डलोंके परास्त करनेवाली है, आपके नेत्र चंचल चकोर-शावकके समान विचित्र भावमङ्गिमासे संवरित होते हैं, आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्ष का पात्र कब बनायेंगी?

मदोन्मत्तवातिग्रोघने प्रमोदमानमण्डिते

प्रियानुरागसज्जिते कलाविलासपण्डिते ।

अनन्यधन्यकुञ्जराजकामकेतिकोविदे

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥५॥

प्रियात्मके अनुरागमें अनुरक्त श्रीराधिके! आप अपने अपूर्व रूप-यौवनके मदमें नत्त, प्रमोदमय गानसे विभूषित, कीडाकलामें कुशल और सर्वातिशय महिमाशाली कुञ्जराज श्रीकृष्णकी प्रेम-कीडाओंको जाननेवाली हैं, आप मुझे इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका अधिकारी कब बनायेंगी?

अशेषप्रभावधीरहीरहारभूषिते

प्रभूतशातकुम्भकुम्भकुम्भिकुम्भसुस्तवि ।

प्रशस्तमन्दहस्यचूर्णपूर्णसौख्यसागरे

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥६॥

अनन्त हाव-भाव, धीरता और रत्नहारसे विभूषिता श्रीराधिके! आपके चरोज सुवर्ण-कलश राधा हस्ति-कुम्भके समान उन्नत एवं सुन्दर हैं तथा आपका प्रशस्त मन्द-हास्य तरंगोत्त परिपूर्ण आनन्दसिन्धुके समान है, आप मुझे इस लोकमें अपने



अनन्ताकीटिविष्णुभोक्तृप्रपञ्चाचिंते

हिमाद्रिजपुष्पमणिविरजिजावरप्रदे।

अपारसिद्धिगुह्यदिग्धसत्पदाबुलीबद्धे

कदा करिष्यसीह मां कृपाकटाक्षभाजनम् ॥ ११॥

श्रीराधे! अनन्ता कीटि विष्णुलोकोंकी अविद्यात्री श्रीलक्ष्मीजीसे भी आप पृथि
हैं, आप श्रीपार्वती, इन्द्राणी एव सरस्वतीजीका भी वर प्रदान करनेवाली हैं, आपके म
पद्मों के एक नखमात्रका ही ध्यान अपार सिद्धियोंकी वृद्धि करनेवाला है, आप मु
इस लोकमें अपने कृपाकटाक्षका पात्र कब बनायेंगी?

मरेश्वरि त्रिवेश्वरि स्वयेश्वरि सुरेश्वरि

त्रिवेदभारतीश्वरि प्रमाणशास्त्रेश्वरि।

रमेश्वरि क्षमेश्वरि प्रमोदकान्तेश्वरि

व्रजेश्वरि व्रजाधिपे श्रीराधिके नमोऽस्तु ते ॥ १२॥

व्रजेश्वरी श्रीरादिके! आप सम्पूर्ण यज्ञों तथा शुक्ल-यज्ञोंकी ईश्वरी हैं। स्वयेश्वरी
आप वेदगणों (ऋक्, यजुः, साम) त्रिवेद-मन्त्री एवं प्रामाणिक सत्-ज्ञानोंकी ईश्वरी हैं।
व्रजाधिपे! आप रमा, क्षमा एवं प्रमोद-कान्तकी ईश्वरी हैं,* आपको नमस्कार है।

इतीवमद्भुतस्तव विशम्भ भानुवन्दिनि

करोतु संततं तव कृपाकटाक्षभाजनम्।

अपेरादेव संपितात्रिरूपवर्जनाशनं

व्रजेश्वरि व्रजेश्वरि व्रजेश्वरि व्रजेश्वरि ॥ १३॥

हैं श्रीवृषभानुवन्दिनी श्रीरादिके! मेरी इस अद्भुत स्तुतिकी श्रवण कर आ
सदाके लिये इस चीजकी कृपावलोकनकर पात्र बना लीजिये। उक्त अमिलाषाकी पू
होते ही मेरे सखित, प्रारब्ध एवं कियमाण-ये तीनों तरुहों के कर्म विनष्ट हो जायेंगे अ
तत्क्षण श्रीव्रजेश्वरानन्दनके मण्डल (नित्य तथा दिव्य लीला) में मेरा प्रवेश हो जायेंगे।

राक्षसां च सिताष्टम्यां वशस्यां च विशुद्धया।

एकादश्यां त्रयोदश्यां च पठेत्सायकः सुरीः ॥ १४॥

यं यं कामयते कामं तं तं प्राप्नोति सायकः।

राधाकृपाकटाक्षेण भक्तिः स्यात् प्रेमलक्षणा ॥ १५॥

जो विद्वान् सायक शुद्ध-बुद्धिपूर्वक पूणिषा शुक्ल-पक्षकी अष्टमी, दश
एकादशी या त्रयोदशीके दिन उक्त श्रीकृपाकटाक्ष-रतौत्रका पाठ करेगा, वह साय
जिस - जिस इष्ट वस्तुकी कामना करेगा, वह सब उससे मिल जायेगा। साय
श्रीराधाजी के कृपाकटाक्षके प्रभावसे प्रेमलक्षणा-भक्ति भी प्राप्त हो जायेगी।

कन्तमात्रे नाभिमात्रे हजमात्रे कण्ठमात्रके।

राधाकुण्डलसे लिखता वः पठेत्सायकः शतम् ॥ १६॥

तस्य सर्वाधीश्वरिः स्वाद् वाडिष्ठतार्थफलं लभेत्।

पुण्यवत् च लभेत् साक्षाद् दृष्ट्वा पश्यति शक्तिकाम्॥१७॥

जो साधक जघा, नाभि, छाती तथा कस्तूरपर्यन्त राधा-कुण्डको जलमें खड़ा होकर इस स्तौत्रका सौ बार पाठ करेगा, उसके समस्त प्रयोजन सिद्ध हो जायेंगे तथा उसे मनोवांछित फल और ऐश्वर्य की उपलब्धि होगी एवं साक्षात् श्रीराधिकाजी का दर्शन प्राप्त होगा।

तेन सा तत्क्षणादेव तुष्टा वलं महावरम्।

येन पश्यति नेत्राभ्यां तत्प्रियं श्यामसुन्दरम्॥१८॥

उसके कारण ये उसी क्षण प्रसन्न होकर उसे महान् वर प्रदान करेंगी। जिसके फलस्वरूप वह श्रीराधिकाजीके प्रियतम श्रीश्यामसुन्दरका भी अपने नेत्रोंसे साक्षात् दर्शन करेगा।

नित्यलीलाप्रवेशं च इदंति श्रीव्रजाधिपः।

अतः परस्परं प्राप्यं वैष्णवाणां न विद्यते॥१९॥

ऐसे भक्तको श्रीव्रजेश नित्यलीला-प्रवेशका अधिकार प्रदान करते हैं, जिससे बढकर वैष्णवोंके लिये प्राप्त करनेयोग्य अन्य कोई वस्तु नहीं है।

साधार्थ - इस स्तौत्र से श्री राधा - कृष्ण का साक्षात्कार होता है। उसकी विधि इस प्रकार है कि (गोवर्धन पर्वत के निकट) श्री राधाकुण्ड के जल में जघाओं तक या नाभि पर्यन्त या छाती तक या कान्त तक जल में खड़े होकर इस स्तौत्र को १०० बार पाठ करे। इस प्रकार कुछ दिन पाठ करने पर सम्पूर्ण मनोवांछित पदार्थ प्राप्त हो जाते हैं। ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। दर्शनार्थी भक्त को इन्हीं नेत्रों से साक्षात् श्रीराधाजी का दर्शन होता है। श्री राधा जी प्रकट होकर प्रसन्नतापूर्वक महान् वरदान देती हैं। (अथवा अपने चरणों का महावर (यावक) भक्त के भस्तक पर लगा देती हैं) वरदान में केवल अपनी प्रिय वस्तु ही यही मांगना चाहिये। तब तत्काल ही श्याम-सुन्दर प्रकट होकर दर्शन देते हैं, प्रसन्न होकर श्री व्रजराजकुमार नित्य लीलाओं में प्रवेश प्रदान करते हैं। इससे बढकर वैष्णवों के लिए कोई भी वस्तु नहीं है। किसी-किसी को राधा कुण्ड के जल में १०० पाठ करने पर एक ही दिन में दर्शन हो जाता है। किसी-किसी को महीनों में होता है। इस लिए जब तक दर्शन न हो पाठ करते रहें। किसी-किसी को अपने घर से ही १०० पाठ रोज करने से कुछ दिनों में इष्ट प्राप्ति हो जाती है।

॥ इति छान्दोग्योपनिषद् शिव गौरी सङ्गदे श्री राधा कृष्ण कटाक्ष स्तवसङ्गः सम्पूर्णः ॥

॥ ओपिजन बल्लभाय नमः ॥

॥ श्रीकृष्णकृपाकटाक्षस्तोत्रम् ॥

अग्रे प्रपञ्चकण्ठं समस्तापापकण्ठं

स्वभावादिपारम्यं सर्वैव नन्दनन्दनम् ।

सुपिच्छसुच्छं तत्कं सुजादवेणुहस्तकं

अजङ्गइसाजं नमामि कृष्णबालरम् ॥१॥

वृज-भूनि में एकमात्र आगूषण, समस्त पापोंको नष्ट करनेवाले तथा अपने भक्तोंके चित्तोंको आनन्दित करनेवाले नन्दनन्दनों में सर्वदा मजता है। जिनके मस्तकपर मनोहर मोर-पखवा मुकुट है, हाथों में सुरीली बीलुरी है तथा जो जैन-तट्टके सागर है, उन नटनागर श्रीकृष्णचन्दको मैं नमस्कार करता हूँ।

अजोज्ज्वलोचनं विशाकुलोललोचनं

विश्रुतगोपशोचनं नमामि पद्मलोचनम् ।

कलारविन्दभूधरं रिमताप्रलोकसुन्दरं

महेन्द्रमानदारणं नमामि कृष्णधारणम् ॥२॥

कामदेवका मान-मर्दन करनेवाले, बड़े-बड़े सुन्दर घबल मेंवाले तथा वृजगोपीका शोक हरनेवाले कमलचयन भगवान्को मैं नमस्कार करता हूँ। जिनोंने अपने करकगलापर गिरिराजको धारण किया था तथा जिनकी मुरकान और चितवन अत्यन्त मनोहर हैं, देवराज इन्द्रका मान-मर्दन करनेवाले हम श्रीकृष्णरूप मजराजको मैं नमस्कार करता हूँ।

कदम्बसुकुण्डलं सुचाल्मण्डलमण्डलं

प्रजाङ्गैकवल्लभं नमामि कृष्णदुर्लभम् ।

दशोदया समोदया सगोपया सबन्धया

युतां सुखैकदावकं नमामि गोपनायकम् ॥३॥

जिनके कानोंमें कदम्ब-पुष्पोंके कुण्डल हैं, परम सुन्दर कपोल है तथा वल्लभनायक जो एकमात्र प्राणाधार है, उन दुर्लभ श्रीकृष्णचन्दको मैं नमस्कार करता हूँ। जो गोपनायक और नन्दजीके सहित अतिप्रसन्ना यशोदाजीसे युक्त है और एकमात्र आनन्ददायक है, उन गोपनायक गोपालको मैं नमस्कार करता हूँ।

सदैव पादपद्मं नदीयमानसे त्रिप
दधानमुत्तमालोकं नमामि नन्दबालकम् ।
समस्तसौम्यशोभनं समस्तलोकशोभनं
समस्तनोपमानसं नमामि नन्दलालकम् ॥४॥

जिनहीने अपने चरणकमलोंकी ओर मनकाय सरोवरमें स्थापित कर रखा है। उन जीी सुन्दर बालकवाले नन्दकुमारकी मैं नमस्कार करता हूँ। जो समस्त लोका को दूर धरनेवाले, समस्त लोकोंका जलन-घोषण करने वाले और समस्त ब्रह्माण्डकी इश्वर है, उन नन्दजीकी लालसात्म्य श्रीकृष्णचन्दकी मैं नमस्कार करता हूँ।

भुजं सरयताटकं भवस्थिकर्णधारकं
वज्रोज्ज्वलितचोदकं नमामि चित्तचोदकम् ।
दृढवृत्तान्तमोक्षिणं सदासखित्तमणिं
दिने दिने जयं जयं नमामि जगत्समभवम् ॥५॥

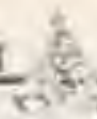
जो भूमिका नार उतारनेवाले, सरयताटक के कर्णधार और चित्तको पुरानेवाले हैं, उन यशोदाकुमारकी मैं नमस्कार करता हूँ। जिनके कमनीय कटाक्षवाले, दिव्य लसिकाद्वारा चित्तकार सेवित, नित्य नूतन नन्दकुमारकी मैं नमस्कार करता हूँ।

शुभाकरं सुखाकरं कृपाकरं कृपापरं
सुरप्रियमिन्द्रकन्दनं नमामि गोपनन्दनम् ।
नदीनोपमानसं नदीनकोशिलम्पदं
नमामि मेघसुन्दरं तटिलप्रभातरम्पदम् ॥६॥

जो सुखीयें भाण्डार, सुखके सागर, कृपानिधान और देव-शकुन्तीकी भासा करनेवाले हैं, उन कृपालु गोपालकी मैं नमस्कार करता हूँ। जिनकी शरीर-जानि शयन मेधकी-सी है और लसपर विजलीकी-सी आभावाला अत्यन्त सुन्दर पीतान्वर कहला रहा है, उन नित्य नूतन लीलविहारी, नदभागार गोपालकी मैं नमस्कार करता हूँ।

समस्तनोपमानसं हृदयपुष्पैकमोक्तां
नमामि कुञ्जमध्यमं प्रसन्नं जालुशोभनम् ।
विक्रमकाशदायकं कुञ्जचन्द्रशायकं
रसास्त्रवेणुनायकं नमामि कुञ्जनायकम् ॥७॥

जो समस्त गोपीकी आनन्दित करनेवाले, हृदयकमलकी विजित करनेवाले और देदीप्यमान सूर्यके समान शोभायमान हैं, उन कुञ्जमध्यमकी श्यामसुन्दरकी मैं नमस्कार करता हूँ। जो कामनाओंकी गली-गली धुन करने वाले हैं और जिनकी चार चितवन भाण्डार समान बीजनेवाली हैं, सुभाषर वेणु कलाकर गान करनेवाले उन कुञ्जनायककी मैं नमस्कार करता हूँ।



विष्णुधर्मोपिकाजनीमनीश तल्पशायिनं
 नमामि कुरुष्वतवे प्रयुस्त्वहंपाथिकम् ।
 विष्णोरिष्यन्तिरक्षितं कुरुष्वतं सुशोभितं
 नमोऽस्तुतौदाधरिणं नमामि श्रीविहारिणम् ॥८॥

जो तत्पुत्र गोपिकाओं के समस्त सुकोमल शय्यापर शयन करनेवाले तथा
 कुरुष्वत में बढ़ती हुई दातामिका धन कर जानेवाले हैं, उन श्रीकृष्णचन्दको मैं नमस्कार
 करता हूँ। श्रीवृषभानुकिशोरोंकी अङ्गुलान्तिले जिनके अङ्गु इलक रहे हैं, जिनके नेत्रों में
 अजल शोभा दे रहा है, गजराजको मोक्ष देनेवाले तथा श्रीजीके साथ विहार करनेवाले
 (श्रीकृष्णचन्द) को मैं नमस्कार करता हूँ।

बड़ा तड़ा यथा तथा तथैव कृप्याप्तकथा
 भवा सदैव जीयतां तथा कृपा विधीयताम् ।
 प्रमाणिकाष्टकद्वयं जपत्यधीरवः पुमान्
 भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान् ॥९॥

मुझपर ऐसी कृपा हो कि जब-तब मैं जैसी भी परिस्थिति में रहूँ, तब
 श्रीकृष्णचन्दकी सत्कथाओंका गान करूँ। जो पुरुष इस द्व्यष्टक प्रमाणिका छन्द
 (श्लोक) का पाठ या जप करेगा, वह जन्म-जन्ममें नन्दनन्दन श्यामसुन्दरकी भक्तिसे
 युक्त होगा।

इति श्रीमवाचनार्कलचार्यकृत श्रीकृप्याष्टकं सम्पूर्णम्

॥ श्री मधुराधिपते नमः ॥

॥ श्री मधुराष्टकम् ॥

अधरं मधुरं वदनं मधुरं वराजं मधुरं हसितं मधुरम् ।
 इदं मधुरं गमने मधुरं मधुराधिपतेरक्षितं मधुरम् ॥१॥
 वदनं मधुरं धरितं मधुरं वराजं मधुरं वलितं मधुरम् ।
 वलितं मधुरं क्षमितं मधुरं मधुराधिपतेरक्षितं मधुरम् ॥२॥
 देणुर्मधुरो रेणुर्मधुरः पाणिर्मधुरः पादौ मधुरौ ।



कृत्य मधुरं कलं मधुरं मधुराधिपतेरहितं मधुरम् । १॥
 नीलं मधुरं पीतं मधुरं भुजं मधुरं रूपं मधुरम् ।
 रूपं मधुरं शिखरं मधुरं मधुराधिपतेरहितं मधुरम् । २॥
 करणं मधुरं तरणं मधुरं हरणं मधुरं रक्षणं मधुरम् ।
 शमितं मधुरं शमिर् मधुरं मधुराधिपतेरहितं मधुरम् । ३॥
 गुंजा मधुरा माला मधुरा यमुना मधुरा वीवी मधुरा ।
 हलिलं मधुरं कमलं मधुरं मधुराधिपतेरहितं मधुरम् । ४॥
 खेपी मधुरा लीला मधुरा दुर्लभं मधुरं दुर्लभं मधुरम् ।
 दृष्टं मधुरं शिष्टं मधुरं मधुराधिपतेरहितं मधुरम् । ५॥
 गोपा मधुरा गाधो मधुरा यष्टिगोधुरा दृष्टिर्गोधुरा ।
 दलितं मधुरं फलितं मधुरं मधुराधिपतेरहितं मधुरम् । ६॥

॥ इति श्रीमद्भक्तलताभाचार्यकृतं मधुराष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री श्री राधादेव्यै नमः ॥

॥ श्रीमद्भक्तगीतम् ॥

भक्तखर श्रीजयदेवकविविचयितम्

क्लितकनकाकुसुममङ्गल धृताकुण्डलं ए ।
 कलितललितमङ्गल जय जय देव हरि । १॥
 दिनमणिमङ्गलमण्डनं भवखण्डनं ए ।
 मुनिगगनागसहस्रं जय जय देव हरि । २॥
 कालियविषाक्ष गङ्गाजन जनरञ्जन ए ।
 यदुकुसुमसिन्धुदिनेश जय जय देव हरि । ३॥
 मधुसूदनरत्नविनायक गुरुदासन ए ।
 सुरकुलवीर्यविदान जय जय देव हरि । ४॥



जमलजमलदललोचन भासाद्यन ए ।
 त्रिभुवनभवननिधान जय जय देव हरे ॥५॥
 जितकरुताकृतभूषण जितदुष्ण ए ।
 समरशमितदशकण्ठ जय जय देव हरे ॥६॥
 अभिनवजलधरसुन्दर धृतमन्दर ए ।
 श्रीमुखवन्दचकोर जय जय देव हरे ॥७॥
 तव भरणे प्रणता वलनिति भावय ए ।
 कुरु कुशलं प्रणतोषु जय जय देव हरे ॥८॥
 श्रीजयदेवकवेरिद कुल्लो मुदम ए ।
 मङ्गलमुज्ज्वलगीति जय जय देव हरे ॥९॥

॥ श्रीकृष्ण नन्दोत्तम गुरुन ॥

॥ श्रीकृष्ण-स्तुति ॥

यसुदेवसुतदेवं कंसचाणूरमर्दनम् ।
 देवकीचरन्मनन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

श्रीकृष्णचन्द्र कृपालु भावु मल ।
 हरण-भव-भव दारण ।
 त्रयवक्त्र लोचन, त्रय-मुख ।
 कर वक्त्र, पद-वक्त्रारण्य ॥१॥
 श्रीपाद ओकृत-वल्लरी-
 द्विज-जीव-ओदुत-वल्लरी ।
 चरणविन्दनं भजे,
 आर्यीक गुरु-भक्ति-दुर्लभं ॥२॥

सकलपाप हनन अनेक छवि,
लोचनीनयन मज्जित ॥
विजयक-वदन, विन्दोद-मूर्ति,
भूरि भुज कलशकर ॥३॥
लिल कोक-विष्ट, बिलोल कुण्डल,
अरुण वनल-ओषध ॥
गुणजावतल विचित्र, लज्ज अग्रातु,
रज-रज-ओषध ॥
कच कुटिल, सुन्दर लिङ्गक-भू,
रज-रज-रज-रज ॥
अपराध 'मुक्तदीप्त'
जल बिहार पुष्प-कानन ॥५॥

॥ श्री श्री राधिकादे नमः ॥

॥ अथ श्रीराधा कवच ॥

पार्वत्युवाच

केशव-वाणिन् भगवन् भक्तनुग्रहकारक ॥
राधिका कवचं पुनः कथयस्व मे प्रभो ॥१॥
यद्यपि करुणा नाथ आदि मां दुःखतो भयन्तु
त्वमेवशान्तिं नाथ शूलपाशे पिनाकधुक ॥२॥

पार्वतीने कहा — हे केशववासिन ! भक्तोपर अनुग्रह करनेवाले हैं प्रभो !
श्रीराधिकाजीका कवच कथ्य मुझको सुनाओ ॥१॥ हे त्रिलोक और धनुष वाण
करनेवाले नाथ ! मैं आजकी शरणमें हूँ, यदि मुझपर भूत कृप है तो दुखके भयों में
अपना कवच दीजिए ।

शुभुष्य गिरिपते तुभ्यः कदम्ब पृष्ठे-सुधिरण्य
 सर्वस्वकार तुभ्यः सर्वज्ञान-कर परम् ॥ १ ॥
 हरिभक्ति-प्रद राजात् भुक्ति-मुक्ति-प्रसादनम्
 त्रैलोक्याकर्षणं देवि हरितान्निध्यकारकम् ॥ ४ ॥

श्री शिवजी बाले-इ गिरिजाज-कुमार सुने। वह शायीन कवच दुमका सुना रहा है जो बड़ा पत्थर है लम्बूने बाणों को चीनांशका और सब प्रकारसे वह कवचजला है। (३)। सुध, सोन और नीलका लक्षण एवं शरीरमनु-रक्षण भीजिला दलेकला है। ते देवी। वह कवच शिवजीका लक्षणसे कम लपटा है और लपकका प्रभुजी ली-लिस पड़ेका देता है। (४)।

सर्वत्र जयद दीर्घे सर्वे शत्रु-भयावहम् ।
सर्वथा पैव भूतानां पत्नीवृत्ति हर पर ॥१॥
षट्पुष्पां वृत्ति-लोकं सदानन्द-कोर परम् ।
सत्तत्पुष्पांस्वमेधानां सद्गान्धर्व फल-दायकम् ॥२॥

यह सभी अनुष्ठानों द्वारा प्राप्त, सर्वत्र विद्यमान मान्यताओं और सभी प्राविधिकी अनुष्ठानों को सम्मिलित है। १६। इस व्यवस्था करने से राज्य की आन्तरिक स्थिति है। न्यायिक, साहित्य, सामाजिक, आर्थिक आदि की प्रकारकी मुक्ति प्राप्त हो जाती है एवं जातीय शान्ति और सन्तुष्टि का रूप प्राप्त होता है। १७।

इदं कथञ्चमशास्त्रं राघवायार्जुनं यः प्रोचते ।
 स नाप्नोति फलं तस्य विजयस्य परे पदे ॥ ४७ ॥
 कथितं यदादेर्जुनस्य हृदयं कथितं ।
 राघवाय देवतादेस्तु स जीवन्मृत्युम् ॥ ४८ ॥

इस काल में बिना रुटि कोई अमल शीघ्र ही सञ्चालित हो जाता है। यह सब बातें ध्यान में रखकर ही कार्य करना चाहिए।

वर्माश्रमकामर्मादिषु	विनियोगः	प्रकीर्तितः ।
श्रीराघा मे विदधातु	संसाधनाधिकार	तथा ॥६॥
श्रीमती	नेत्र-सुखल	कर्मागोपेन्द्र-सन्दिप
हरेप्रियानासिका	त	भूयुगशशिरोमना ॥१०॥



धर्म अर्थ, वस्तु और ११६ इन्द्रजाल में दुसरा चित्रण किया जाता है।
[कवचके मुक्त कवचके भावार्थ इस प्रकार जलना चाहिये] बालकाजी मेरे कलाक और
ललाटकी रक्त करे, सीमली दोनों गलाकी और गोविन्दभक्तिनी दोनों कानोंकी रक्षा करे
तथा सीतारिपिका की और हाथी सोमनाथी दोनों भुजुटिकाकी रक्षा करे। १५॥

ओष्ठ पातु कृपा देवी अक्षर योगिता तथा।

वृषभानुसुता यताम्बिकुलं गोपनन्विनी। १६॥

चन्द्रावली पातु गण्ड जिह्व कृष्ण-प्रिया तथा।

कण्ठ पातु हरि-प्रणा हृदय विजया तथा। १७॥

सीधपादकी तपस्वी होटीकी और गण्डकाजी नीचे की होटीकी रक्षा करे
कण्ठकी रक्षिकी वृषभानु-सुता और होटीकी गोपनन्विनीकी रक्षा करे। १६॥
कंधीकी [कंधी] की चन्द्रावलीकी रक्षा करे और सीकृष्णप्रियाकी जीभकी रक्षा करे।
सीतारिपिका कंधी और विजयाकी हृदय की रक्षा करे। १७॥

बाहू द्वौ-चन्द्र-वदना उदरं श्रीदानस्वसा।

कटियोगाचिता पातु पादौ सौमदिकालथा। १८॥

नखौश्चन्द्रमुखी पातु गुल्फौ गोपालवल्लभा।

जानु देशं जया पातु गोपी चर-वल तथा। १९॥

चन्द्रवदना दोनों भुजुओंकी, गुल्फ-जलभाष पेटकी, योगाचिता कंधरकी और
सौमदिका दोनों पैरोंकी रक्षा करे। १८॥ चन्द्रमुखी नखोंकी गोपालवल्लभा गुल्फों
[टल्लों] की जया भुजुओंकी और गोपी चर-वल (मेरी) रक्षा करे। १९॥

शुभ-प्राण पातु पृष्ठं कक्षौ श्रीकान्तवल्लभा।

जानु-देशं जया पातु हरिणी पातु सर्वतः। २०॥

वक्ष्यं याणी सदा पातु चन्द्रागरं चनेश्वरी।

पूर्ण दिशं कुम्भरताकृष्णप्राण य परिचक्षणः। २१॥

शुभप्राण पीठकी, वृष्टिर्षा की श्रीकान्तवल्लभा जानुदेशकी जया और हरिणी
पैरें सारी औरों रक्षा करे। २०॥ चक्षुः वक्ष्यकी रक्षा करे, चनेश्वरी खजानेकी
कृष्ण-सापूर्व दिशाकी और कुम्भ-प्राण परिचक्षण दिशाकी रक्षा करे। २१॥

उत्तरा हरिता पातु दक्षिणी वृषभानुजा।

चन्द्रावली निशमेव दिवा ध्वेष्टित-मेखला। २२॥

सौभाग्यदा मय दिने चायाई काम-रूपिणी।

सैदी इत पातु मां हि गोपिनी रजनी ध्वे। २३॥

उत्तर दिशाकी हरिता, दक्षिण दिशाकी वृषभानुजा रक्षिकी चन्द्रावली और
ध्वेष्टित-मेखला दिशाकी रक्षा करे। २२॥ सौभाग्यदा कामरूपिणी सायाई
जातकाल रौद्री और रात्रिक अवसान सोनेपर गोपिनी हमारी रक्षा करे। २३॥



हेतुदा सप्तवे यत्तु कंतुमाला दिवाग्रीके ।

शेषाञ्जलिक समये शनिदा नन्दलक्षिषु । ११ ।

योगिनी मोग-समये रात्री हति-प्रदा सदा ।

कामेशी कौतुकीनित्यं यौते रत्नावलीमम् । १२ ।

कामेशी हेतुदा-दिन पद्धिः अत्रास्य कंतुमाला, अपराह समय राधा और सम्पूर्ण संधियाँ में शनिता रखा करे । ११ । उपलोकक समय योगिनी रतिप्रदा तत्काल समय, योगिक समयमें रत्नावली और कामेशी एवं कौतुकी नित्यप्रति भरी रखा करे । १२ ।

सर्वदा सर्व जायतु शशिका कृष्ण-शानला ।

इत्येतत्कथितं देवि कथं वरमद्भुतम् । १३ ।

सर्व-रक्षा कर नाम महाशक्त कर परम् ।

प्राप्तमध्याह्न-समये सायाह्न प्रपठेद्यदि । १४ ।

कृष्णशानला श्रीराधिकाजी तादा शर्वादा तब कामेशी मरी रक्षा करे । जिन स्थितियों में भी किसी चला नहीं की गई है उन शक्तियों को लक्षित करे । तै देवि । वह अद्भुत कथन हमने तुम्हें सुना दिया । १३ । इसका नाम है सर्व रक्षा करक, यदि इसे कोई बात कथन और सायाह्न पढ़ता है तो इससे बड़ी मारी रक्षा हो जाती है । १४ ।

सर्वार्थ-सिद्धिस्तस्य सदा यद्वन्मनसि यति ।

राज-द्वारे समाया व सप्तामे शत्रु संकटे । १५ ।

प्राप्तार्थनाशतनये य प्रतेत्प्रयतो नर ।

तस्य सिद्धिर्भवेददेवि न भय विद्यते क्वचित् । १६ ।

श्रीराधाकृतकर्म पढ़नेसे उस शत्रुकाट मने जैसी कामना हो जाती ही सिद्धि हो जाती है । राजद्वार, समा सप्ताम और शत्रुओं द्वारा पहुँचने हुए स्थितियों में, प्राप्त और सब सिद्धि होने के लिये यदि कसुछ कामना इसका पठ करे तो वह ही उसका कार्यसिद्ध हो जाता है और उसके कहीं भी भय नहीं रहता । १५, १६ ।

अनाथिता शशिका य तैम सत्य न शंका ।

मंगलास्नाद्वरेणामग्रहणायफल लभेत् । १७ ।

तापल तस्य भवति य प्रतेत्प्रयतः शुचि ।

हरिद्रोचनाचन्द्रामण्डिता हति वन्दनम् । १८ ।

कुप्या लिखिता भुजे य क्षणदेव मस्तके भुजे ।

कम्पे य देवदेवेशि ॥ हरिर्नाम सदाय । १९ ।

सोमपुत्र जगती श्रीराधिकाजीकी अनाथना कर ही, मंगलास्ना और शत्रुनाश

सात रमणाले जो जलु जाता हे निरबाहेर वही जलु इस काकाकें छेनवालेली मित जाला हे. दुसरी रमणाले कुंदुली मीनवावर इस काकाकी निरबाहेर जो काहे मलाकें भुला जे कडेन वीर जे लो हें दावदुसरी। जे हरिके मलाकें लो पाव हे। २५-२६।

कवचस्य प्रसारेण ब्रह्मा लुपि विना हरि

सहायं वाहं निघातं करोमि कुरुते तन्वा । १८ ॥

द्विष्यवाय विशुद्धाय विशाखगुणशालिने ।

दत्तात ॥ कवचमालाधमनन्त्र ॥ धर्मशास्त्रम् ॥ १२९ ॥

उत्तराखण्ड इस कथनके प्रसाद से सृष्टि करने हेतु और विशुद्ध पालन करने हेतु और नैतिकता के इसी पालन के तहत प्रसादों के सृष्टि का प्रयास करता है। (२८)। यह प्रयास प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन के लिए प्रसादों के सृष्टि का प्रयास है और प्रसादों के सृष्टि का प्रयास है। नतीजा यह है कि प्रसादों के सृष्टि का प्रयास है, इसमें किसी प्रकार का प्रसाद नहीं करता प्रसाद। (२९)।

[illegible]

॥ श्रीगोपीजनदत्तमाघ नमः ॥

॥ श्रीराधिकानाम गुणगान ॥

*संक्षिप्तव्याख्याऽथ अथो अति सुखं च शान्तिश्च ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मार्तुण्ड्यं वा शब्दकोऽवधारणं कर्तव्यं तत्र भक्तिः प्रीतिः सुखं तस्य वा शब्दकोऽवधारणं तु हृदयैव-वाच्यविशेषो ज्ञातिः कर्तव्यः ।

‘र’ इत्याहारावधलो ‘दा’ च विवर्णितप्रत्ययः ।

यतोऽवाप्नोति सुखं च सा न राधा प्रकीर्तिता ॥

रा शब्दका अर्थ है पापा और रा का अर्थ है निर्वोध-मोक्ष। भक्त-जन उनसे निर्वोध, मुक्ति प्राप्त करता है, इसलिए उन्हें रागा कहा गया है।

રેલ્વે વિ. ઇન્ડિયનનાથ વર્કસીએ (શાખા-૬/અસ.)

आप्यस्य अर्जुनस्य च हृत्सुं च योगसुखम् ॥१॥

अध्यक्ष प्राधुपति सचिव/सहायक सचिव अध्यक्ष/सचिव

अथपुनरुक्तपदोक्तिः प्रपञ्चयन्ति च (अथवा ॥२॥)



राधा नामके पहले अक्षर 'र' का उच्चारण करते ही करोड़ों जनता की साँसें धड़कने लगे—अनुभूति समझें योग नष्ट हो जाती है। आखण्ड (१) के उच्चारणसे सर्वज्ञान (ब्रह्म) मृत्यु और योग आदि मिट जाते हैं। 'र' के उच्चारण से जायुकी बुद्धि होती है और आकार के उच्चारण से जीव भयवशवश मुक्त हो जाता है। इसप्रकार राधा नामके ध्वनि स्मरण और उच्चारण से कामयोग, योगवास और भयवशनादि एक ही राधा नष्ट हो जाते हैं—इसमें कोई शंका नहीं।

ऐहो हि विष्णुनां भक्तिं हारुं कृष्णपदाम्बुजे ।
सर्वोपगतं सदानन्दं सर्वसिद्धसौधमिदं परम् ॥१॥
धकारः सहस्रान्नं च तत्पुण्यकाम्यमेव च ।
इहानि सार्धितस्तत्त्वं तत्पञ्चान्नं हरे सजम् ॥२॥
आकारस्तोत्रां रतिं वातमूर्तिं हरे वधा ।
योगशक्तिं योगमतिं सर्वकालं हरिस्मृतिम् ॥३॥
सुतपुत्रिस्तस्मरणयोगात्मजोहृष्यात्तं च किल्बिषम् ।
रोमशोकवज्रामृत्यु वेपन्तं नात्र संशयः ॥४॥

राधा नामके अन्तर्गत राकारके उच्चारणसे मनुष्य श्रीकृष्णचरण कमलमें निश्चल भक्ति और भगवान्‌की दासत्वकी प्राप्ति करके लभता अभिलषित फलार्थ, सदानन्द और समस्त सिद्धिवा की खान ईश्वर की प्राप्ति करता है तथा धकारका उच्चारण उसे सार्धित, साक्ष्य भगवान्‌की स्वतन्त्रता तत्पञ्चान्न और तत्पञ्चान्न तनकी साथ रहनेकी स्थिति प्रदान करता है। आकारका उच्चारण करने पर सिद्धी समान औररदागीपन तंजोराशि योगशक्ति योगमति और सर्वकाली श्रीहरिकी स्मृति प्राप्ति होती है। इस प्रकार 'राधा' नामके भजन, उच्चारण, स्मरण और रादीगसे मोहजाल तथा पाप्मनशिका नाश हो जाता है और शोक, शोक, मृत्यु तथा योगराज वलकी भयसे कांपने लग जाते हैं।

भगवान् श्रीकृष्णमें श्री शिवजीसे कहा है—

सकृदेव प्रपन्नो वा जतिप्रवाजेतिव्यक्तं सुत ।
सैवाद्यन्वन्वज्जवेन स ज्ञानेति न संशयः ॥१॥
यो ज्ञानेव प्रपन्नश्च जतिप्रवां न महेश्वर ।
न कदापि स चाप्नोति ज्ञानेव ते मयोक्तिम् ॥२॥
सकृदेव प्रपन्नो वरदावारसीति वदेवपि ।
साधनेन विनाप्येव ज्ञानाप्नोति न संशयः ॥३॥
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन जतिप्रवां स्मरणं प्रजेत् ।
आश्रित्य जतिप्रवां यद्वा न वलीकर्तुमर्हति ॥४॥
इव रहस्वं परमं ज्ञानं ते पारिशीर्तितम् ।

(पद्म पुरा ८२/८३-८४)

“कल! जो व्यक्ति केवल एक बार हम दीवोंकी शरणमें आकर अपना एकमात्र मेरी प्रिया (श्रीराधा) की ही शरण में आकर अपनी अनन्य भावसे सेवा करता है, वह निरन्तर मुझको प्राप्त होता है। अतएव! इसको विपरीत जो केवल मेरी शरणमें आ गया है, पर मेरी प्रियाकी शरण में नहीं आया, वह मुझको कभी प्राप्त नहीं होगा। वह मैं सत्य कहता हूँ। जो व्यक्ति एक बार भी हम लोगों के शरण आकर “मैं तुम लोगोंका हूँ” यों कह देता है। वह बिना ही साधन मुझको प्राप्त होता है—इसमें कोई शन्देह नहीं है, अतएव सब प्रकारसे प्रयत्न करके मेरी प्रियतमा राधाकी शरण ग्रहण करें। हे कल! यदि तुम्हें वरानें करना चाहते हो तो मेरी प्रियतमा (राधा) का आश्रय ग्रहण करें। मैंने आपसे यह परम रहस्यकी बात कही है। आपसे इस प्रयत्नपूर्ण गुप्त ही संकेतना।

देवशक्तं वन्द्यं कृष्णं स्तुतिभिः

देहन्वैकः प्रीडनार्थं विद्याभूम् ।

देशी कथा छाया गोमयानः ॥

सुखम् पठन् वाति तन्नाम सुखम् ॥

“जो ये राधा और जो ये कृष्ण आनन्दरसके सागर हैं, वे एक ही लीला करने के लिये ही रूप बने हैं। जैसे छाया से देह लीनित होती है, उसी प्रकार श्रीराधा श्रीकृष्ण शोभायमान हैं। इनके प्रतिष्ठित पदों—सुखमें से और इनमें सुख परम— साधकों प्राप्त होता है।

तव मे प्राणाधिका लब्धे तव प्राणाधिकोऽप्यहम् ।

न विनिवायवोर्भिन्नजेकम् तव वैव हि ॥

भगवान् श्रीकृष्णने कहा है—हे राधा! तुम मेरी प्राणाधिका हो, मैं भी तुम्हारा प्राणाधिक हूँ। हम दोनोंमें कुछ भेद नहीं है, हम सदा ही एक हैं।

तथा ब्रह्मस्वरूपश्च श्रीकृष्णः प्रकृतेः परः ।

तथा ब्रह्मस्वरूपा च विनिवायः प्रकृतेः परः ॥

जैसे श्रीकृष्ण विनायकपदी प्रकृतिसे परे ब्रह्मस्वरूप है, वैसे ही श्रीराधाजी प्रकृति से परे विनिवाय ब्रह्मस्वरूपा हैं। भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है—

दे शयिकावां नवि कोनावे हरी

कुर्यान्ति भेदं कथिबो जना मुखि ।

ते काजसूत्रे प्रपतन्ति दुःखिता

रम्योऽवापत् किञ्च चन्द्रमास्करौ ॥

‘इस पृथ्वीपर जो कुबलि मानव शयिकाओं और दुःख कोनाओं—हरिजें भेद—बुझि करती हैं, वे जलक चन्द्र—सूर्यका प्रदितान है तब तक काज—सूत्र नामक नटकमें पड़े हुए दुःख मोलते रहते हैं।’

श्री भगवद्गीताके प्रति स्वयं भगवान् के वचन हैं—

इमां तु सतिष्यं विविधं शक्तिर्कं परदेवताम् ।
 इत्येवम् परितः प्रपन्नाः सख्यः कृतसहस्रकाः ॥
 नित्याः सर्वा इमा रूढं दशहं नित्यविद्युतः ।
 सखायः पितरौ शोभा शोभा पुन्दावनं जग ॥
 सर्वमेतन्नित्यमेव चित्तानन्दरसात्मकम् ।
 इदमानन्दकन्दारुचं विविधं पुन्दावनं जग ॥
 सर्वमेतन्नित्यमेव चित्तानन्द रसात्मकम् ।
 इदमानन्दकन्दारुचं विविधं पुन्दावनं जग ॥

हे सतिष्यजी मेरी प्रिया है—इन्हें परमदेवता समझिये । इनकी चारों ओर और भी
 पौष्टि लक्ष्मी-सखियाँ हैं, जिनसे मैं नित्य-विद्युत हूँ इसी प्रकार से सब भी मिली है । मेरे
 पिता, माता, सखा, शोभा, सौ और यह सब पुन्दावन सभी नित्य और सर्वविद्यात्मक रसमय
 हैं । मेरे इस पुन्दावनका नाम आनन्दकन्द जानो ।

पुन्दावने नित्यनिकुञ्जभाषे
 कदम्ब - जम्बू - विटपागाराधे ।
 सार्धं नुकुन्देन विराजमानं
 रत्नरत्नं शशाङ्ककङ्कणमुष्मम् ॥

(पदम पाठ्य ५१-५२-५३)

मैं उन श्रीसखाजी के परदल्ल सुगन्ध रत्नरत्नकरता हूँ जो पुन्दावने कदम्ब
 और जम्बू तुम्हें के मध्य भगवान् श्रीकृष्णके साथ निकुञ्जवन में विराजमान रहती है ।

मयाज्ञे सत्तारक्षणसुन्दरगावलिष्ठ
 सौन्दर्यमोहित सत्तारक्षणसुन्दरस्य ।
 मयाज्ञे वासमुज्ज्वलतनुं कदाहं
 त्वन्निन्दितविस्तारभक्ततः कदाहम् ॥

इदमाह । आपकी सौन्दर्यरत्न भगवान् नारायणकी अर्धाङ्गिनी श्रीलम्बादेवी ने
 भी नहीं पायी जाती, आपके प्रियताम शशाङ्कसुन्दर भी अपने उस सौन्दर्यकी द्वारा जो
 भगवान् लम्बीकान्तके अगशोभयसे भी श्रेष्ठ हैं, जगतके समस्त जीवों को रोषित किए
 लेते हैं । मेरा कैसा रोमाञ्च कब होगा जब मैं आपके श्री विराहकी अपने प्रियतामकी नाम
 मुझसे आविष्टित देखूँगा?

॥ इति श्री राधिका नाम गुणयान ॥

॥ श्री गोपिका भावाभिव्यक्ति ॥

मैंने राधना लगाई है राधा नाम की ।
 मेरी पलकें में राधा, मेरी अलकें में राधा ।
 मैंने मीन मराई है राधा नाम की ॥ मैंने
 मेरे मैनों में राधा, मेरे बैनों में राधा ।
 मैंने बैनी गुथाई है राधा नाम की ॥ मैंने
 मेरी चुनरी में राधा, मेरी चुनरी में राधा ।
 मैंने लक्ष्मी लगाई है राधा नाम की ॥ मैंने
 मेरे बालों में राधा, मेरे हाथों में राधा ।
 कानि किंकरनी बजाई है राधा नाम की ॥ मैंने
 मेरे दाढ़े बांधे राधा, मेरे आंग पीछे राधा ।
 रीम रीम रस छाई है राधा नाम की ॥ मैंने
 मेरे अंग अंग राधा, मेरे सग-सग राधा ।
 गोपाल बंशी बजाई है राधा नाम की ॥ मैंने

॥ श्रीराधाकृष्णाम्बा नमः ॥

॥ श्रीराधागुणगान ॥

‘रा’ शब्दं कुर्वतस्त्रस्तो क्कामि अकिञ्चनमात्रम् ।

‘द्या’ शब्दं कुर्वतः पश्चाद् क्कामि अव्ययलोभतः ॥

भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं कि, जिसरा मन में किसीकी मुठसे ‘रा’ सुन जाता है, उसी शब्द उसे अपनी उत्तममक्ति देम देता है और ‘द्या’ शब्द उच्चारण करने पर तो मैं प्रियान्ता श्रीराधाका नाम अव्यय करनेके लोभसे उसकी पीछे-पीछे चलता हूँ।

‘रा’ शब्दोच्चारणादेव स्त्रीलो भवति मायवः ।

‘द्या’ शब्दोच्चारणात् पश्चाद्द्यावत्वेव ससंभ्रमः ॥

‘रा’ शब्दका उच्चारण करनेपर उसी सुनते ही मायव हमारी फूल जाते हैं और ‘द्या’ शब्द उच्चारण करने पर मैं सत्करके साथ चलके पीछे-पीछे टोड़ने लगते हैं।

‘रा’ शब्दोच्चारणस्ततो रति स्त्रीर्षु सुदुर्लभा ।

‘द्या’ शब्दोच्चारणाद् दुर्गे द्यावत्वेव हरे पदम् ॥



यह शब्दके सम्भारणसे भक्त परम दुःख मुक्ति पद की प्राप्ति होत है। और यह शब्दके सम्भारणसे निश्चय ही ईश्वरके हीयरेके धाममें पहुँच जाता है।

सहज भवति श्रीकृष्ण उ च त च परस्परम् ॥

सहजोः सर्वतः स च सदा सन्तो व्यवसित च ॥

राधा श्रीकृष्णकी आराधना करती है और श्रीकृष्ण राधाकी। वे दोनो परस्पर आराध्य-आराधक हैं। राधा कहती है कि उनमें सभी दृष्टियों में पूर्ण समता है।

कृष्णप्राणाधिपेयी सा तवयीवो विभुर्वतो ॥

सर्वेश्वरी तस्य त्वत्वं तवाहीवो न तिष्ठति ॥

सर्वोक्तिं सकलाद् वाग्व्यस्तपसाद् सधेति कीर्तेता ॥

देवी माण्डूक्य १. ५४-५८

ये श्रीराधा भगवान् श्रीकृष्णके प्राणों की अजेयता देखे हैं। इसलिए भगवान् इनके अधीन रहते हैं। ये भगवान् के सत्की तिया अधीन रहते हैं। इन श्रीराधाके बिना भगवान् राण मर भी नहीं उठर सकते हैं। ये सम्पूर्ण कामनाओं को सिद्ध करती हैं। इसी कारण इन देवीका नाम श्री 'राधा' कहा गया है। (इनकी पूजा अभिषाग है)।

त्वत्पादाब्जे मज्जतीति सततं आसु प्रजो ॥

पानु स्तिष्ठतं पदं मयुष्यत्वं उवा मयु ॥

सर्वीय प्रपञ्चाद्यसर्वं मयजन्मनि जगन्मि ॥

त्वदीवचरणजम्बोजे वैति मतिं शुद्धमिदम् ॥

तव स्मृतौ गुणेषित स्वप्ने माते विषादिनाम् ॥

मवेज्जितमज्जं सतामेतन्मम मवीपिताम् ॥

प्रभो! तुम्हारे चरण-सरोजमें मैं। भगवानी भक्त निरन्तर डूबता रहो और जैसे वह मयुष कलकला मयुषान करता है वैसे ही वह प्रेमरस पान करता रहो। जन्म-जन्ममें तुम्हीं मेरे प्राणनाथ होओ और मुझे अपने पद-चरण में मयुष्यत्व प्रदान करो। प्रभो! मेरे सनकी यही एकमात्र राह है। मर गित स्वप्न और जगत्सर्व स्वी अनुसंधानों में दिन रात केवल तुम्हारी ही स्मृति और गुणों में डूबा रहो।

अज्जापः सकृदेव श्रीकृष्णपतेराकर्षकस्तावापा-

स्य प्रेमयतां सततपुल्लभार्थेषु सकृदेतुधत्त ॥

वज्जामाधिकमन्त्रजापपरः प्रीत्या स्वयं माधव

श्रीकृष्णोपि तवद्विमुक्तं सकृन्तु जे सधेतिवर्णनम् ॥

एक बार की जिसका विषय हुआ जब श्रीकृष्णकी उसी बात अन्वयान कर रहा केनकायल होता है, जिसमें प्रेम केवलानों को अधिकतम सुखपूर्व की प्राप्ति करता हुआ तुम्हें प्रीति होता है। जाना श्री कृष्णकी भी प्रीतिपूर्वक जिस वाक्य की अतिशय-व्याख्या तबद्विमुक्त कर करता है 'राधा' ऐसा वह अर्थ-संगत अनुसंग नाम मेरे

हृदयमें स्फुरित हो।

रेचित किन्तव फिर वृषभाजुपुत्री
 को फिरकर क्षणजपिलि जगभिलाष ।
 राधेति नामक्य श्री रसने जगई
 राधा वने वस तद्विदितजोऽभिजापम् ॥

उरें मरे चित। तू सदा वृषभानुनन्दिनी श्रीराधाका ही चिन्तन किया कर। उन्हीं एक धाम के लिये भी जगो ने भूल-यह मेरी अभिलाषा है। हे रसने! तू नाम इस लक्ष्मी-मयूर नामका जब कभी यह तन्मा है देह। तू श्री राधाजी परमावतन वरदा नजारी निराल होकर इस श्रीराधा वन (कुन्दावन) में सदा वास किया कर।

जगति जगति शिखं वरदा कलपयन्मया
 जगह कलति राधा ग्रथिताबीधवाया ।

यज्जगज्जगविषाथोऽतीर्थवतानि
 चरणरत्नलि तस्य द्वारवेगे लुटंगित

कमल राधाजीको दूर करनेवाली कलपावली श्रीराधा जिसको मर और जाली में सदा निवास करती है अजगत्। उसके द्वारापर एक भजन, राधासमा, योग, तीर्थ और जग अन्ति लकी वाकर जगकी चरण-रजने लोटने है।

राधाकलपितमलवज्जगरीके-
 राधाबाक किलरज्जगदुल्लखीके ।
 राधावसो मुखरज्जगदुल्लखीके-
 राधाविहार विपिने समी जगो मे ॥

श्रीराधाजीके चरणमाली द्वारा सत्पूज्य प्रलयवाली लताजारी अलकृत श्रीराधाजीके चरणमाली की विल से राधायमान मनोहर लक्ष्मी से मणिकत एव श्रीराधाके कीर्तिमान से महदहाते प्रसन्नचित्त भावने प्रक्षिप्तमूह से लक्षित श्रीराधाजी के रज जगमुक्त विहायन श्रीकुन्दावन में मर मन निरंतर वना करे।

हे राधे वृषभाजुपुत्राये हे पूर्णचन्द्रावने ।
 हे काले कमनीयकोकिहरवेपुष्पावनाधीश्वरी ॥
 हे मत्प्राणपरावणे च रसिके हे सर्व सुखेश्वरी ।
 आभत्य त्वरिते त्वमग्रमनिदा मा दीवताजगद्वय ॥
 हे राधे वृषभाजुपुत्राये सर्वेश्वरी राधिके ।
 हे कृष्णवदनपंकजजगन्निन्दे कृष्णप्रिये मारुषी ॥
 हे कृष्णवदनवरी गुणगुरौ वागीश्वरी ।
 हे श्री श्रीललितादिप्रियन्दिन्यवलीके परीजम् ॥



स्वामिनि श्रीराधिकाजी से प्रार्थना

इस खोर कूपा की कर दो, स्वामिनि श्री राधे ।
 दासी की झोली भर दो, स्वामिनि श्री राधे ।
 मैं तो राधा राधा सदा ही रहूँ ।
 कभी द्वारे से लाइली के न हूँ ।
 मेरे हीरा कमल पग धर दो, स्वामिनि श्री राधे ।
 दासी की झोली भर दो, स्वामिनि श्री राधे ॥ इक...
 मेरी आस न टूटने पाये कभी ।
 इस तल से प्राण न जाये जभी ।
 मुझे भिज दर्शन का घर दो, स्वामिनि श्री राधे ।
 दासी की झोली भर दो, स्वामिनि श्री राधे ॥ इक....
 मुझे प्रीति की रीति सिखा दीजै ।
 भिज वाम का मन्त्र बता दीजै ।
 कृपा की व्यास सब हर दो, स्वामिनि श्री राधे ।
 दासी की झोली भर दो, स्वामिनि श्री राधे ॥ इक...

देखौ री, यह नन्द का छेरा

देखौ री, यह नन्द का छेरा बगल मारे जाता है ।
 बरखी-री तिरछी चितवन की पैनी छुरी मारता है ॥
 इस को पायल देछ वेदरही मंद-मंद मुखमाला है ।
 ललित किशोरी जखन भिगर पर गीतपुरी मुखमाला है ॥
 श्री ललित किशोर जी

एक गोपी दूसरी से कहती है कि 'हे सुन्दरी मैं तुम्हारे शील स्वभाव से बहीभूत होकर तुम्हारे हित की एक बात कहती हूँ कि तुम समुद्रा पर मत जाना, यदि जाना हो तब तो कटका-कात की और तो जाना ही मत, क्योंकि वहाँ कोई एक ऐसी अदभुत से भी अदभुत विमल से भी निर्मल उज्ज्वल से भी उज्ज्वल अदभुत ऐसी है जो ललित भी वेश के केवल एक ही होने में लग गई हो तो है कमल जगती। फिर तुम्हें अपने पति का घर नहीं सुझता ।'

॥ श्रीराधानमस्कारस्तोत्रम् ॥

श्रीभारतयथा उवाच

नमस्ते परमेशानि रासमण्डलवासिनि ।

रासेश्वरि नमस्तोऽस्तु कृष्णप्राणाधिकं प्रिये ॥१॥

भगवान् नारायण कहते हैं—भगवती परमेशानि। तुम रासमण्डलमें विलज्जमान रहती हो। तुम्हें नमस्कार है। रासेश्वरि। भगवान् श्रीकृष्ण तुम्हें प्रीति से भी अधिक प्रिय मानते हैं। तुम्हें नमस्कार है।

नमस्त्रैलोक्यजननि प्रसीद करुणार्णवे ।

ब्रह्मविष्णुवादिभिर्देवैर्वन्द्यमानपदाम्बुजे ॥२॥

करुणार्णवे। तुम त्रिलोकी की जननी हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम मुझपर प्रीति होने की कृपा करो। ब्रह्मा, विष्णु आदि समस्त देवता तुम्हारे चरण जल की उपासना करते हैं।

नमः सरस्वतीरूपे नमः सावित्री शङ्करि ।

मङ्गल यन्मावतीरूपे षष्टिमङ्गलवन्दिने ॥३॥

जगदम्बा। तुम सरस्वती, सावित्री शङ्करी तथा मङ्गलवाती षष्ठी और मङ्गल वन्दिनी इन रूपों में विलज्जमान हो। तुम्हें नमस्कार है।

नमस्ते तुलसीरूपे नमो लक्ष्मीस्वरूपिणि ।

नमो दुर्गे भगवति नमस्ते सर्वरूपिणि ॥४॥

तुलसी रूपे। तुम्हें नमस्कार है। लक्ष्मीस्वरूपिणि। तुम्हें नमस्कार है। भगवती दुर्गे। तुम्हें नमस्कार है। सर्वरूपिणि। तुम्हें नमस्कार है।

मूलप्रकृतिरूपा त्वा मज्जामः करुणार्णवान् ।

संसारनागरादरसानुद्धराम्ब दयां कुरु ॥५॥

जननी। तुम मूलप्रकृति स्वरूपा एवं करुणाकी सागर हो। हम तुम्हारी उपासना करते हैं। अतः तुम इस संसार-सागरसे उद्धार करनेकी कृपा करो।

इदं स्तोत्रं त्रिसात्रं न पठेद् राधां स्मरन् नर ।

न तस्य दुर्लभं किञ्चिद् कदापि न मदिष्यति ॥६॥

जो दुरूप विष्णुसत्त्ववाले शम्भु भगवती स्तुति करके हुए इस स्तोत्र का पठ करता है उसको निश्चय कभी कोई दुर्लभ नहीं हो सकती।



देहान्ते च वसेन्नाथ गोलेके रासमण्डले ।
इदं रहस्यं परमं न बाह्येह तु कस्यचित् ॥१०॥

(इही भागवत १.१५.५०-५१-५२)

‘जायु सजाता होनेपर गरीबको त्यागकर वह बड़-भागी पुरुष सोलहकामें जाकर रासमण्डलमें निरंतर स्थान पाता है। यह परम रहस्य जिस-किरीके सातमे मती कहना चाहिये’ ॥ परमान् श्री राधाराम आचार्य ॥

श्रीराधाजीके सोलह नाम

राधा रासेश्वरी रासजसिनी रसिकेश्वरी ।
कृष्ण प्रानाधिका कृष्णप्रिया कृष्णस्वरूपिणी ॥१॥
कृष्णयामाङ्गसम्भूता परमानन्दरूपिणी ।
कृष्णा वृन्दावती वृन्दा वृन्दावनविनोदिनी ॥२॥
चन्द्रावली चन्द्रकान्ता शरच्चन्द्रनिभानना ।
नामान्येतानि साराणि तेषामन्यन्तराणि च ॥३॥

(२. श्रीकृष्णजामयजु)

अर्थ—श्रीराधाजीके अठार नाम— राधा रासेश्वरी रासजसिनी रसिकेश्वरी, कृष्णप्रानाधिका कृष्णप्रिया कृष्णस्वरूपिणी कृष्णयामाङ्गसम्भूता परमानन्दरूपिणी, कृष्णा वृन्दावती, वृन्दा, वृन्दावनविनोदिनी, चन्द्रावली चन्द्रकान्ता और शरच्चन्द्रप्रभातिका । ये सारभूत सोलह नाम उन राधय नामों के ही अन्तर्गत हैं।

श्रीराधाजी के अट्ठाईस नाम

राधा रासेश्वरी रम्या कृष्णमंत्राधिदेवता ।
सर्वाद्या सर्ववन्द्या च वृन्दावनविहारिणी ॥१॥
वृन्दासाम्या रसरोषमोहीनन्दलपुजिता ।
राधा सत्यपरा सत्यमाना श्रीकृष्णवल्लभा ॥२॥
वृष्णानुसूता गोपी मूलप्रकृतिशेखरी ।
गावर्वा राधिकाऽऽरम्या रुक्मिणी परमेश्वरी ॥३॥
परात्परतरा पूर्णा पूर्णचन्द्रनिभानना ।
मुक्तिमुक्तिप्रदा नित्य भवशयधिनिशिनी ॥४॥

(श्री राधाजीमिश्र, २)

अर्थ—१. राधा २. रासेश्वरी ३. रम्या ४. कृष्णमंत्राधिदेवता ५. सर्वाद्या ६. सर्ववन्द्या ७. वृन्दावन विहारिणी ८. वृन्दासाम्या ९. राधा १०. अशेषमोहीनन्दलपुजिता ११. राधा १२.



राधापरा १३ सारदापरा १४ श्रीकृष्णवल्लभा १५ कृष्णानुसुता १६ गोपी १७ मूलनक्षत्रि
१८ ईश्वरी १९ गान्धर्वी २० सौम्या २१ अम्बिका २२ हरिमती २३ जगदीश्वरी २४ ललाटेय्य
२५ पूजा २६ पूजोदयललाटेय्य २७ बुक्तिकुण्डलिका २८ मन्मथललाटेय्य २९ अम्बिका
कालिका जी माता काली है वी जीवन्मुक्त हो जाती है। यही कालिका श्री ब्रह्मदेवी से काला है।

श्रीराधिकार्जी के सैंतीस पवित्र नाम

राधा रासेश्वरी रम्या रामा च परमात्मना ।
रासोदया कृष्णकान्ता कृष्णव्या रत्नास्थिता ॥१॥
कृष्णप्राणविदेवी च महाविष्णोः प्रसूरयि ।
सर्वाद्या विष्णुनद्या च सत्या नित्या ललाटेय्ये ॥२॥
ब्रह्मस्वरूपा परमा निर्लिप्ता निर्गुणा परा ।
वृन्दा वृन्दावनेशा च विरजातटवासिनी ॥३॥
गोलोकवासिनी गोपी गोपीशा गोपमातृका ।
सानन्दा परमानन्दा नन्दनन्दनकामिनी ॥४॥
वृष्णानुसुता शान्ता कान्ता पूर्णतमा च सा ।
काम्या कलावतीकन्या तीर्थपूता सती शुभा ॥५॥
सप्तविंशच्च नामानि वेदोक्तानि शुभाणि च ।
सानन्दाणि पुण्यानि सर्वनामसु नारद ॥६॥
यः पठेत् सयत् शुद्धो विष्णुनक्तो जितेन्द्रिय ।
इहैव निश्चला लक्ष्मी लब्ध्वा याति हरे पदम् ॥७॥
हरिमतिं हरेर्दास्य लभते नात्र संशयः ॥

(नारद पत्राक्ष २/४/६८-७५)

अर्थ :- १ राधा २ रासेश्वरी ३ रम्या ४ परमात्मनान्ता ५ रासोदया ६

कृष्णकान्ता ७ कृष्णव्या रत्नास्थिता ८ कृष्णप्राणविदेवी ९ महाविष्णो १० प्रसू ११
सर्वाद्या १२ विष्णुनद्या १३ सत्या १४ नित्या १५ ललाटेय्य १६ परमाब्रह्मस्वरूपा १७
निर्लिप्ता १८ निर्गुणा १९ परा २० वृन्दा २१ वृन्दावनेशा २२ विरजातटवासिनी २३
गोलोकवासिनी २४ गोपी २५ गोपेश्वरी २६ गोपमातृका २७ सानन्दा २८ परमानन्दा २९
नन्दनन्दनकामिनी ३० वृष्णानुसुता ३१ शान्ता ३२ कान्ता ३३ पूर्णतमा ३४ काम्या ३५
कलावतीकन्या ३६ तीर्थपूता ३७ सती और ३८ शुभा— ये सैंतीस अति उत्तम, पवित्र नाम
हैं। नारद। सारे नामों की अपेक्षा अत्यन्त पवित्र और सब नामों में सारभूत ये नाम हैं।
जो विष्णुनक्त जितेन्द्रिय पुरुष संप्रत्यक्ष होकर इनका पाठ करता है वह इस लोकमें
जबाला लक्ष्मी को प्राप्त करता-अन्तमें श्रीहरि के पद को प्राप्त होता है। उसे हरिमति
उन्हा हरि का दासभाव मिलता है इसमें कुछ भी संदेह नहीं है।



॥ राधामुमुक्षुपुत्रान् ॥ २४ ॥ भवामि ॥

॥ श्रीराधाजी का ध्यान ॥

श्वेताचम्पकवर्णाभा कोटिचन्द्रसमप्रभाम् ।
 शरत्पार्वणचन्द्रास्या शरत्पङ्कजलोचनम् ॥ १ ॥
 सुश्रोणी सुनिताम्बा च पद्मदिम्बाचरा यशम् ।
 मुक्तापङ्कजितविनिन्दैकदन्तापङ्क्तिभनोहराम् ॥ २ ॥
 ईशब्दास्यप्रसन्नास्या भक्तानुग्रहकातराम् ।
 वाङ्मिश्रुद्धांशुकाशाना रत्नमालाविभूषिताम् ॥ ३ ॥
 रत्नकैयूरदलया रत्नगञ्जरीर रञ्जिताम् ।
 रत्नकुण्डलपुष्पेन द्विद्विजैः दिशजिताम् ॥ ४ ॥
 सूर्यप्रभाप्रतिङ्गति गम्भिरस्थलदितज्जिताम् ।
 अमृत्स्वरत्ननिर्माण पैरेककङ्किभूषिताम् ॥ ५ ॥
 सद्गतसारनिर्माण किरीटभूकुटीज्वलाम् ।
 रत्नागुलीयसयुक्ता रत्नपाशकशोभिताम् ॥ ६ ॥
 विप्रती कबरीभार मालतीमालभूषिताम् ।
 रूपादिष्ठातृदेवी च गजेन्द्रमन्दगामिनीम् ॥ ७ ॥
 गोरीभिः सुप्रियाभिश्च संवेष्टा श्वेतावामरैः ।
 कस्तूरी बिन्दुभिः सार्द्धगम्भिरन्दनबिन्दुना ॥ ८ ॥
 सिन्दूरबिन्दुना चारु रीमज्जाद्यस्थलोज्ज्वलाम् ।
 रासं रासंस्वरयुता राधा रासंस्वरी भजे ॥ ९ ॥

[प्रवृत्ति अण्ड ३४/१०-१५, १२]

श्रीराधा जी अक्षयान्ति १४८४वर्षों की मन्मथ गौर हैं। वे अपने अर्ध में करीब
 धनदमयों की सम्पन्न मनोहर कान्ति धारण करती हैं। उनका मुख शरत्पङ्कज की
 पुष्पिका की भाँसा की लज्जित करता है। उनके नेत्र शरत् जाल की पद्मल कलशों
 की सीमा की सीमा की हैं। उनके शरीर में एव निरन्तर कलश की सीमा है। अपने



प्राण हुए निम्नपञ्चमों वाली भावनाएँ हैं। वे शीत सुन्दरी हैं। बुद्धि की चेतना को तिरस्कृत करके अपनी इन्द्रियों को उनके मुख की मन्दोदरा को बढ़ाती हैं। उनके चरण पर मन्द मुस्कान उजिये प्रान्ता खिलती रहती है। वे भक्तों पर अमृत करन के लिए व्याकुल रहती हैं। अमृतमुद्र विनाय उनके उनके शीतल को आकाशित करते हैं। वे रत्नों के हार से विभूषित हैं। सनम्य कपूर और जगन धारण करती हैं। रत्नों के ही बने हुए मजीर उनके पैरों की शोभा बढ़ाते हैं। रत्नगिर्मित विविध कण्डाल उनके दाँतों कानों की शीतल करती हैं। सुशोभा की प्रतिमाएँ कपोल-पुगल से वे सुशोभित होती हैं। समृद्ध रत्नों के बने हुए कण्डहार उनके शीतलपदों को विभूषित करती हैं। उभय रत्नों के लालाची से निर्मित किरौट-बुलुट उनकी राजदलारों को आसक्त किए रहते हैं। रत्नों की बुद्धि और जगत् (जेन का घना आदि) उनकी शोभा बढ़ाते हैं। वे रत्नों के मुखों और कानों से अमृत के अमृत धारण करती हैं। वे रत्नों के अमृत देवी हैं और गजराज की गोति बन्द मणि से बरती हैं। जो उन्हें अमृत धारि हैं। ऐसे गगन किशोरियों श्वेत चंदर लज्जतमयी शोभाएँ हैं। कलूरी की बंदी, मन्दन के विन्दु और सिन्दूर की टीकी से उनके मनीहर सीमल का निम्न भाग आधारा उदीप्त दिखायी देता है। रास में रासेश्वर के सहित विराजित रासेश्वरी राधा का मैं भजन करता हूँ।

॥ इति राधायाम् ॥

श्री चक्रुजी से प्रार्थना

अब घुरि हो प्रान की प्यारी लगे ब्रजमठल गहि बसाये रही ।
रसिकों के समाज में भगत रहूँ, जग जाल ही गति बसाये रही ॥
निजवाली ए दानवी निहार कहीं छवि छल्ल ही नयन लकाये रही ।
अही बज्र बिलारी गही बिनारी मेरे बन्दे हो गीत बिलाये रही ॥

तिरछा है किरौट कपोल पर में, तिरछा बन्धन पड़ा रहता है
तिरछे करि काछनी है, निजमे सुख-सिन्धु लदा उमड़ा रहता है ॥
तिरछे पद कज जटम तर तिरछे दुग जान लड़ा रहता है ।
किस भौति निजाल कहीं दिल से तिरछा घनराग जल रहता है ।

- कृष्णकलीमृतम् ।

॥ श्रीब्रह्माण्ड पुराणोक्त श्रीराधा स्तोत्रम् ॥

मङ्गलाचरण

राधा पुरः स्फुरति पश्चिमावधौ राधा
 राधाधिराजमिह दक्षिणावधौ राधा ।
 राधा दाम्बु विविक्षते गगने च राधा
 राधावती नमः कभूत कुर्वन्निजनीलो ॥

श्रीनारायण उवाच

वि तद् मुहूर्तं ब्रह्मन् दक्षिणतन्मखिलैस्त्वै ।
 तमे ब्रूहि युगायुगं योगेश्वरी वरदा ॥१॥

ब्रह्मोवाच

कुरु मुहूर्तं मात मातायन मुखायुतम् ।
 सर्वे सम्पूजिता द्वे राधावृन्दावने वने ॥२॥
 राधा विस्मेषतः कृष्णद्वैपायन प्रेमविह्वलः ।
 राधा नम्रं अपन् ह्यायन् राधां दर्शय पर्यायि ॥३॥
 ॐ इत्य श्रीराधातोऽनन्तरं ब्रह्म
 ब्रह्मरुद्रोऽयं ब्रह्मः श्रीराधातोऽनन्तरं ब्रह्म विविक्षतः ॥४॥

श्रीकृष्णोवाच

गृहे राधा वने राधा पृष्ठे राधा पुरः स्थिता
 यत्र यत्र स्थिता राधा राधैवराध्यते नया ॥५॥
 विष्णु राधा सुतीराया मेरेराया हृदिस्थिता ।
 लम्बिष्ठाधिनी राधा राधैवराध्यते नया ॥६॥
 पूजा राधा उपे राधा राधिका सखिद्वये ।
 राधौ राधा शिरोराधा राधैवराध्यते नया ॥७॥

मरे राधा तुने राधा राधिका मोखोमरी ।
 लरे राधा रिमलरा राधैवाटखरी मया ॥४॥
 मरुदरे मरुटलरा मरुले राधिका तुम ।
 लीरदरे लुरदरी राधा राधैवाटखरी मया ॥५॥
 राधा पद्मावता पद्मा पद्मोद्गता तनुदगता ।
 पादरे विवेदिता राधा राधैवाटखरी मया ॥६॥
 राधाकृष्णगिरिका मिहं कृष्णोदरात्मकोद्गम ।
 कुरदखोरदरी राधा राधैवाटखरी मया ॥७॥
 रिद्धिजे राधिका नाम नेत्रजे राधिका तनु ।
 कृष्णरूपरा राधा राधैवाटखरी मया ॥८॥
 कण्ठजे राधिका कीर्ति मनोदजे राधिका तनु ।
 कृष्णोद्गमरी राधा राधैवाटखरी मया ॥९॥

॥ राधे कब तुम कृपा करोगी ॥

राधे कब तुम कृपा करोगी, ऊँचे बरखाने पारी ।
 पतित जान तुमराओं न राधे, अब तो अपनी कीजिए ।
 अबकी बार मोहं पार जमाऊँ, कण्ठे क्यूँ बंद जमाऊँ ॥ऊँचे॥
 फल है बदल का पुरानी, केन किनारे जमाऊँ ।
 मलकाह बलको झाड़ो खोजिगी, जाकर पार जमाऊँ ॥ऊँचे॥
 फल जल की गदकी है राधे, आई बालन तुमराहे ।
 कृपा बुद्धि अब होपर कीजिए, हे कृष्णानु तुमारी ॥ऊँचे॥
 फल नवन बोझ की खार, बैलों में बल काऊँ ।
 फल छिल तुमको कबहुँ न भूँ, प्रेम सुखाटल मिठाऊँ ॥ऊँचे॥
 मेरी तो अभिलाष बही है, तुमल करण में लखी ।
 तुमरावन की बलिबो कीजिए, राधे में राधे मित्र आवे ॥ऊँचे॥

॥ श्री श्री राधिकाधेननः ॥

:- श्री राधिकाजी की प्राक्तय स्तुति :-

भई प्रकट कुमारी कीर्ति कुलारी, जन हितकारी भवकारी ।
 अनुभूत धर्म भारी मुनिमजहारी वृषभानुदुलारी सुकुमारी ॥
 सुन्दर सिंहासन तेहि पर आसन, कोटि हुतासन मुनिकारी ।
 भित्त छत्र विराजैतरिकनन लजे निजनिज काये करधानी ॥
 सुर सिख सुजाना हजहि निशाना चंदे विमाना समुदाई ।
 वरपाहि बहुपूजा मंगलमूला, श्यामा अनुकूला भुन भाई ॥
 वेलाहि सब ठाढ़े लोचन गाढ़े सुख बाढ़े उर-अधिकाई ।
 अस्तुति मुनि करही आर्तकमरही पावन परही हरपाई ॥
 श्रांति जल अवे मज हरपाये अति सुखपावे नृपशानी ।
 राधा अतनाम पूजनकामा लखसुखधामा गुणशानी ॥
 राधे सन मुनिराई विनव सुजाई समग्र सुहाई मृदुबानी ।
 लालनि तनु लिये चरित सु किये यह सुख दीजे नृप-रानी ॥
 मुनि मुनिवर वाली राधा मुसकानी लीलाठानी सुखकाई ।
 लोका लखु लानी, लेखन लानी नृप बड आनी उर लाई ॥
 इत्यति अनुसजे प्रेम सुखजे तेहि सुख लखे मज भाई ।
 अस्तुति राधे कोरी प्रेम लोरी करनि कृपेरी तिरनाई ॥

गोरा

जिज सुख वृष भूप के, प्रकट भई श्यामा आया
 चरित किये पावन परम करधान मोव जिकार्या

॥ श्रीगुणभक्त्यकाशतयो नमः ॥



श्री राधा जी की आरती एवं वन्दना

श्री राधिका वन्दन

वज्र रातकुमार बल्लभा कुलसीमन्त्राणि प्रसीध मे ।

परिवारप्रसन्नते वधा पदवी मे व द्वावसी भवेत् ॥

-: आरति श्री वृषभानुसुता की :-

आरति श्री वृषभानुसुता की ।

अधु मूर्ति मोहन-भक्त की ॥ टेक ॥

विविध तापवृत्त भद्रुति नाशिनी

विमल विवेकविराज विक्कानिनी

कायक प्रभु-पद-द्विनि प्रकाशिनी

सुन्दरता छाँब सुन्दरता की ॥ १ ॥

सुख-मन-मोहन मोहन-मोहन,

सुन्दर मोहन-मोहन लोहनि,

अविरलमोहन-मोहन-मोहन

प्रिय भाविलका लखी लोहता की ॥ २ ॥

ललत लेख रस-सुनि-जनकी,

आकर इजित विजयगुण-जन की

आकर्षिणी कृष्ण-तन-जन की

इति-इत्युक्त लक्ष्मी लक्ष्मी की ॥ ३ ॥

कृष्णलक्ष्मी कृष्ण-लक्ष्मी

विमलवृन्द-विमल-विमल

ललतलक्ष्मी ललत-लक्ष्मी

भाव-वनादि शक्ति विशुता की ॥ ४ ॥

॥ श्री नोपीजव बल्लभा नमः ॥



॥ आरती श्री गिरिवर धारी की ॥

गाओ सखि आरति, पिया और प्यारी की ।

भानु दुलारी की ।

गिरिवर धारी की ॥

गावो सखि आरति ।

कंचन थार कपूर सजाओ

धूपदीप और चंदर दुलाओ ।

बलि बलि जाऊँ सखि, कुंज बिहारी की

॥ भानु दुलारी की, गिरिवर धारी की ॥

बैठे सिंहासन दिये गलबोही

तसिक जवन हिय बसत सदा ही ।

नयन लखो री छवि जुगल बिहारी की ॥

॥ भानु दुलारी की, गिरिवर धारी की ॥

मोर मुकुट, कुण्डल वन माला

मुरली अघर-घर बैठे नन्दलाला ॥

व्रज जीवन धन, हिय सुखकारी की ॥

॥ भानु दुलारी की, गिरिवर धारी की ॥

शीश चन्द्रिका की छवि न्यारी

नील वसन तन सोहत सारी ।

ललित किशोरी राधे, बरसाने वारी की ॥

॥ भानु दुलारी की, गिरिवर धारी की ॥

॥ श्रीराधा चालीसा ॥

टोका

श्रीराधे वृषभानुजा मत्तनि प्रणयार ।

तुम्हाविणि विहारिणी, प्रणयों वाटभार ॥

पैसो तैसो रावरो, कृष्ण-प्रिया सुखायाम ।

करुण मारुण विज वीजिवे, सुन्दरशुद्धव ललाम ॥

सखिका कृष्णकन्द पद उद मारुण

जवहरि मोडिन्द राधे मोडिन्द, जवहरि मोडिन्द राधे मोडिन्द

- चौपाई -

जव वृषभान कृष्णि श्री श्यामा ।

कीरति नंदिनि शोभा धामा ॥

नित्य विहारिनि श्याम अथार ।

अमित मोद मंगल वातार ॥

रास विहारिनि रास विस्तारिनि ।

रासवदि सुभन सुध मल आवनि ॥

नित्य किशोरी राधा जोरी ।

श्याम प्राण धन अति जिव जोरी ॥

करुणा रासवद हियहिं उमगिनि ।

ललिताकिर सखियन की संगिनि ॥

विनकर-कल्या कल विहारिनि ।

कृष्ण प्राण प्रिय मिय हलसावनि ॥

नित्य श्याम तुम्हरो सुभ आवे ।

राधा राधा कहि हरषावै ॥

मुरली में नित नाम उचारै ।

तुव कारण शोला वनु थारै ॥

प्रेम स्वरूपेणि अति सुकुमारी ।

श्याम प्रिया वृषभानु बुलारी ॥

नवल किशोरी अति छवि धामा ।

धुति लघु ललै कोटि रति कामा ॥

जोरंजी शक्ति सिद्धक कवना ।

सुभन सपस अनेकारे नवना ॥



जावक वृत्त दुःख पैकाज चरण ।
 गुप्तर मुनि प्रीतज मन हसना ॥
 संता रहचरि सेवा करही ।
 महा मोह मजल मन भरही ॥
 रसिकज जीवन प्राण अधारा ।
 राधा नाम सफल सुख-सारा ॥
 ब्रह्म अनीचर नित्य-स्वरूपा ।
 खान धरत निश दिन ब्रज-भूषा ॥
 उपजैत जानु अंश भुज खाती ।
 कोटिज उमा रमा ब्रह्मणी ॥
 निज नाम ओलोक विहारिनि ।
 जत रसक दुःख दोष बसावनि ॥
 शिव अण मुनि सनकादिक नाराय ।
 पार न पौहि दोष अरु भाराय ॥
 राधा गुण भुज रूप उजारी ।
 निरख प्रसन्न होत बनवारी ॥
 ब्रज जीवन मन राधा रानी ।
 महिमा अमित न जाय बसावनी ॥
 प्रीतज रस देह नलबोही ।
 बिरल नित पुनरावन मोही ॥
 राधा कृष्ण कृष्ण कहै राधा ।
 पुक रूप दोर प्रीति अनाथा ॥
 श्री राधा मोहन मन हसनी ।
 जत सुख वाक्य प्रफुलित बानी ॥
 कोटिक रूप धरे नैव नन्द ।
 दर्श करन हित ओकुल चैदा ॥
 रास कोलि करि तुम्हें रिझावें ।
 मान करौ जब अति दुःख पावें ॥
 प्रफुलित होत दर्श जब पावें ।
 विविध भाँति नित विनव सुजावें ॥
 गुनबाराज विहारिनि बाराजा ।
 नाम होत पूरण सब काजा ॥
 कोटिज बल तपस्या करहु ।
 विविध बेज ब्रत हिय में भरहु ॥



तऊ न श्याम अर्थाहि अपनाये ।

ऊब खनि राधा नाम न आवे ॥

वृन्दाविपिन स्वाश्रित्य राधा ।

लीला वपु तव अमित अनाया ॥

स्वयं कृष्ण पावै नहि पार ।

और तुम्हें को जानन हारा ॥

श्री राधा रस प्रीति अर्भोदा ।

सादर आज करत नित वेदा ॥

राधा स्वामि कृष्ण को अविहैं ।

ते सपनेहु जान कह्यो न तरिहैं ॥

कीरति कैंउरि आहिनी राधा ।

सुमिरत सकल मिटाहि अय बाधा ॥

नाम अमंगल मूल नरावन ।

त्रिविधि-ताप-हर हरि मन भावन ॥

राधा नाम लेइ जो कोई ।

सकजहि कामोदर बल होई ॥

श्रीराधा नाम परम सुखवाई ।

आजतहि कृपा करहि कदुराई ॥

वन्दुमति नावन पीछे फिरिहैं ।

जो कोउ राधा नाम सुमिरिहैं ॥

रस विहारिनि श्यामा प्यारी ।

करहु कृपा बरसाने वारी ॥

वृन्दावन है कारण तिहारी ।

ऊब ऊब ऊब बुधमानु बुलारी ॥

देहा

श्रीराधासर्वेश्वरी, रसिकेश्वर धनबधाम ।

बहु विस्तार वास मोहि, श्रीवृन्दावनधाम ॥

“राशिकाकृष्णचन्द्र पव ऊब बारग ।

ऊब हरि ओविन्द राधे ओविन्द ।

ऊब हरि ओविन्द राधे ओविन्द” ॥

॥ श्रीवृन्दावली कवि कृत राधा वालीरा सम्पूर्ण ॥

-: श्रीराधाकृष्णयुगल कीर्तन :-

जय राधे जय राधे राधे,
 जय राधे जय श्री राधे
 जय कृष्ण जय कृष्ण कृष्ण,
 जय कृष्ण जय श्री कृष्ण ॥
 श्यामा जोरी नित्य किशोरी,
 प्रीतम जोरी श्री राधे।
 रसिक रसीलो छैल छबीलो,
 गुण बरवीलो श्रीकृष्ण ॥
 रासविहारिणि रस विस्तारिणि
 पिय उरधारिणि श्रीराधे ॥
 नव नव रंगी नवलचित्रंगी,
 श्याम सुअंगी श्रीकृष्ण ॥
 प्राणपियारी रूपउजारी,
 अति सुकुमारी श्री राधे ॥
 जैन मनोहर महामोदकर,
 सुन्दर वरतर श्री कृष्ण ॥
 शोभाश्रेणी मोहामैनी,
 केकिलवैनी श्रीराधे।
 कीर्तियन्ता कामिनिकन्ता,
 श्री अनवन्ता श्रीकृष्ण ॥
 चन्दावदनि कुन्धारवनि,
 शोभासदनि श्रीराधे ।

परमहंस प्रजाअपारा,

अतिशुक्लमारा श्रीकृष्ण ॥

हंसानमनी राजतरुमनी,,

प्रीठाकमनी श्रीराधे ।

स्वरशाला नैन विशाला,

परम कृपाला श्रीकृष्ण ॥

कञ्चन चोखि रतिरस रेशि,

अति अलवेली श्रीराधे ।

सब सुख शानर सब गुण आनर,

स्व उज्जानर श्रीकृष्ण ॥

रमणी रम्या तलतरतम्या,

गुण आजम्याश्रीराधे ।

द्यानिवासी प्रभा प्रकासी,

लहखसुहासी श्रीकृष्णा ॥

शक्त्यासिदिनिअतिप्रिययादिनि,

तर उदमादिनी श्री राधे ।

अन अन टोना सरस सलोना,

सुख सुदोना श्रीकृष्णा ॥

राधानामिनि गुण अमिरामिनि,

श्रीहरिः प्रियस्वामिनि श्रीराधे ।

हरे हरे हरि हरे हरे हरि,

हरे हरे हरि श्री कृष्ण ॥

-: श्रीराधाष्टकम् :-

जैव मिलाकर मोहन सों, प्रणामु लली मन में सुस्थानी ।
शोह मलेह को वसरी और, कष्ट वह संघट में शरमाती ॥
देखि निहल गईं भजनी, वह लूतिका मन मोहि समाती ।
औरन की परवाह नही, अपनी एकुराइन राधिका रानी ॥१॥

खोलत खोलत कुन्जल में, प्रणामु लली तरु ओट छिपाती ।
दुहात दुहात जोष वधू, सबही अपने मन में अकूलाती ॥
जित्ब बिहार करे ब्रज में, वह लीला नहीं कष्ट जात न वाली ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी एकुराइन राधिका रानी ॥२॥

पूज्य की लज्जी सज्जी, वह चादनी किस रही है लुभाती ।
स्वच्छ गेह यज्ञा जलधार, नई कलियाँ ब्रज में विकलाती ॥
रास कियो हरि के संग में, अखियाँ जिनकी गई प्रेम दिवाती ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी एकुराइन राधिका रानी ॥३॥

भुज करे तन की मन को, अखि प्रेम सरोवर को यह पानी ।
हमें करिच्छे स्वात नहा, ब्रज की रज को निज बीज भटाती ॥
आल मिले ब्रजलण्डल की, जिनकी हमको इतनी ही सुखती ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी एकुराइन राधिका रानी ॥४॥

हम वृज मण्डल को रसिया, नित प्रेम करे हरि सौ मत्तगानी ।
ढोलत कृष्ण निकुन्जल में, गुन जान करे रस प्रेम कहांनी ॥
जो मन मोहन संभ रहे, वह शानु लली हमने पहचानी ।
औरन की परवाह नहीं, अपनी एकुराइन राधिका रानी ॥५॥

मनत लो अपने मन में, कबहुं नहि उदापत काम न हाति ।
काम जपे मन ही मन में, मानसोत्थ सौ जित प्रीत निभाती ॥

लोक बहुत विशिष्ट के जन में, सब कोही जाने कह्यो कहु वाली ।
औरत की परवाह नही, अपनी ठकुराइन साधिका रानी ॥३॥

नाम अग्रधन है अपनी, बहिं दूसरी सत्पति और कहानी ।
छोड़ अतारी अटा जन को, हमको कटिवा बूज भाँति छपानी ॥
दूक मिले रसिकों के साथ, अरु पावन को यगुन को पानी ।
औरत की परवाह नही, अपनी ठकुराइन साधिका रानी ॥३॥

काल करे ब्रज में फिर, दूसरे देशन की कहं राह न जानी ।
प्रेम लमाव लहो हिय में, अति है कबहुँ कियकी न जानी ॥
लोक रहे रसिकों के संग, अरु बात करे रस ही रस जानि ।
औरत की परवाह नही, अपनी ठकुराइन साधिका रानी ॥४॥

देखा

कुन्दलन के ही सदा रहे तुम्हारे माग ।
श्री चन्दननी सदा मो मन कहु निहाल ।
कुन्दन की सेवा मिले, मिले जात नजाल ।
क्या सदा ही रखियो राधा बल्लभ लाल ॥

॥ श्रीराधा कृष्ण चरण कमलभ्यो अर्पितम् ॥

॥ श्रीराधागण्यं पुरुषं नमामि ॥

उने प्रसिद्धं नदनीत् धीरम् ।
गोपाज्ञानां च दुष्कृतं धीरम् ॥
अनेक जन्मार्जित पाप धीरम् ।
श्रीराधागण्यं शिरसा नमामि ॥

श्री श्रीराधिकार्यै नमः



श्री श्रीराधारानी की चिन्मय गुणावली

१. वे माधुर्य की जीनी-जमनी प्रसिद्धा हैं।
२. वे चिन्मय जगत्तन्त्री हैं।
३. उनके लवज धरे चंचल हैं।
४. उनकी सुन्दरता अत्यन्त उज्ज्वल है।
५. उनकी दिव्य देह पर सज्जत कमलचेल प्रसिद्ध हैं।
६. वे अपने चिन्मय की अन्तर्भावने की कृपा को सज्जित कर करी हैं।
७. वे भावना कला में वक्ष हैं।
८. वे वाह्य ही अली प्रकार से मीठी बोली बोलती हैं।
९. वे निरवधारित आकर्षणों को प्रस्तुत करने में सुविधुषा हैं।
१०. वे अलीला पुत्रम् अज्ञा हैं।
११. वे सदैव अविनाश अनुकूल्यमयी हैं।
१२. वे अलीकक कुटिला हैं।
१३. वे अलीक कृपा हैं।
१४. वे सदैव लज्जयुक्ता हैं।
१५. वे सदैव सर्वांगशालिनी हैं।
१६. वे सदैव सत्यशीला हैं।
१७. वे अली अज्ञात हैं।
१८. वे अली कृपा के द्वारा प्रोद्यत हैं।
१९. वे सदैव प्रसन्न-विमुख अति के नमस्कार में रहित हैं।
२०. वे अलीकवासियों के प्रेम की अज्ञात रखती हैं।
२१. वे सभी प्रकार के अर्थों को आश्चर्य प्रदान कर सकती हैं।
२२. वे अलीक और विकृष्टों दोनों के प्रति वात्सल्यमयी हैं।
२३. वे अपनी अस्त्रियों-अस्त्रिकाओं के स्नेह पुरित व्यवहारों से सदैव अनुजहीना हैं।
२४. वे अली कृपा की सौख्य-सौख्यिकी में सज्जित रहती हैं।
२५. वे अली कृपा को अली-अलीक रूप में रखती हैं।

(श्री वैद्यन्य महाप्रभु की विधात, नामक पुराण से)

आरती श्री कुञ्जबिहारी की

आरती श्री कुञ्जबिहारी की, श्री गिरधर कृष्णदुर्गेशी की
जहाँ से वैभववर्नीजाता, बजाये हुरली मधुर बाजा
सकल में कुण्डल झलकाता, सब को आनन्द भंडारता
विष्णु छविराज बिलाली की ।

॥ आरती ॥

अपना राज अंग व्योमकाशि, राखिये चमक रही आली
सलल में उठे बलबाली, आकाश की जलक, कस्तूरी गिरक
पाँव की झलक, ललित छवि स्वर्ण धारी की ।

॥ आरती ॥

कलक भूत मोर सुकुट बिलसे, वैष्णव इरतन को तरले
कलम से सुसज राखि बरले, बजे हुरकन, मधुर गिरक
गुलाबिनी सन, अतुलरति भोजकुमारी की ।

॥ आरती ॥

उहाँ से प्रसन्न हुई भंजा, कण्ठ कलित हरिणी की भंजा,
स्मरणगते होत मोह भंजा, बसी शिव गीता, जटा को बीच
हरे अग्र कीच, चरण छवि, श्री बलबाली की ।

॥ आरती ॥

बलक रही अहुना तट देणू, बल रही वृन्दावन देणू,
सह बिजो मोपी ध्यात देणू, हस्ता हनु मण, चन्द्रनी चंद,
कटत भव पण्ड, तेर भुज बीच बिलाली की ।

॥ आरती ॥

— स्तुति —

त्वमेव	भाता	व	गिता	त्वमेव ।
त्वमेव	बधुभ्य	सखा	त्वमेव ॥	
त्वमेव	विद्या	दक्षिण	त्वमेव ।	
त्वमेव	सर्व	मम	देव देव ॥	

वस्तुदेव तुल देव कलकगुरु सर्वभम् ।



॥ किशोरी राधे ॥

श्रीगीता प्रेस गोरखपुर की पुस्तक 'महाभाव-कल्लोलिनी' से उद्धृत

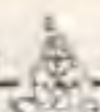
श्रीराधा-स्तवन

गवनीत-गुलाब तै कोमल हैं, हठी काज की मंजुलता इन में।
गुललाला गुलाल प्रबाल जया छवि, ऐसी न देखी ललाइन में॥
मुनि-मानस-मन्दिर मध्य वसै, बस होत है रूप सुगाइन में।
शु रे मन, तू चित-चाइन सौ, बृषभानु-कुमारि के पाइन में॥

कोऊ उमाराज, रमाराज, जमाराज कोऊ,
कोऊ रामचंद सुखचंद नाम नाधे में।
कोऊ ध्यावै यनपति, फनपति, सुरपति कोऊ,
कोऊ देव ध्यावै फल लेत पल आधे में॥
'हठी' की अघार निराधार की अघार तू ही,
जप-तप, जाग-जग्य-काछुवै न साधे में।
वाटें कोटि बाधे, मुनि धरत सनाधे, ऐसे,
राधे, नद खारे सदा ही अवराधे में॥

काहू को सदन समु-गिरिजा, गनेस-सेस,
काहू को सदन है कुबेर-ऐसे घोरी को।
काहू को सदन मच्छ-काछ, बलराम-राम,
काहू को सदन गोरो-सौचरी-सी जोरी को॥
काहू को सदन बोध दासन, बराह, व्यास,
एही निराधार सदा रहै मति मोरी को।
आनंद करन विधि-बदित चरन एक,
हठी को सदन मृषभानु की किशोरी को॥

कोऊ धन धाम कोऊ वाहे अभिराम, कोऊ



साहिबी सुरेस भाति लाख लहियतु है।
 जोऊ गजराज, महाराज, सुखराज जोऊ।
 तीरम-बरत-नेन अग दहियतु है।
 ऐसो पित चाहै, घरवा है दुनिया की 'हठी',
 चाहै हूँ एक तीन ठीक दहियतु है।
 जन रखवारी की सु प्रनु-प्राण प्यारी की,
 सुकीरति-दुलारी की नजर दहियतु है॥

होन हों, अधीन हों, तिहारै ब्रज-साहिबनी।
 हिय में मलीन, करुना की कोर दरिए।
 भारी भावसागर में ब्रुद्धत बचावी मोहि,
 काम क्रोध लोभ मोह लागे सब अरिए॥
 बुरा-भला जैसी, तेरे द्वार पर्यौ हौ तौ,
 मेरे गुन-औंगुन तू मन में न धरिए।
 कीरति-किसोरी, वृषभानु की दुहाई तोहि,
 लच्छ-लच्छ भाति सौ 'हठी' को पछ करिए॥

जन-दुख-हरनी, धरनी-पति ध्यावै तोहि
 तेरी जग करनी विधि बरनी बडे थान की।
 धिता कैसा घेरा मन डेरा-सौ भ्रमत फिरै,
 हूँ नहि डेरा, सुधि खान की न पान की॥
 ध्यावत बने न मोहि, तेरोई कहावत हौ,
 'हठी' पे कृपा की कोर राखि दया-दान की।
 औंगुननि भरौ हौ कहत कर जोरि अद,
 मेरो पछ करि तू किसोरी वृषभानु की॥

जाकी कृपा सुक ग्यानी भए, अतिदानी और ध्यानी भए त्रिपुरारी।
 जाकी कृपा बिधि बेद रचे, भए ब्यास पुरानन के अधिकारी॥
 जाकी कृपा ते त्रिलोकी-धनी सु कहावत श्रीब्रजचंद बिहारी।
 लोक-घटी ते 'हठी' को बचाउ, कृपा करि श्रीवृषभानु-दुलारी॥

चंद-सौ आनन, कंचन-सौ तन, हौ लखि कैं दिन मोल बिकानी।
 औ-अरविद-सी ओखिन को 'हठी' देखत मेरिसे ओखि सिथानी॥
 राजति है मनमोहन के संग, वारी में कोटि रमा, रति, बानी॥

जीवनगुरि सबे ब्रज की उकुरानी हमारी है राधिका शनी ।।

वामीकर-चौकी पर चपक-बरन हठी

अंग जु चमकें चारु घण्टा चलावती ।

तारा-सी तरंगना-सी अतर लगघटै रति

मुकुर दिखावै दिजे बीजन दुलावती ।।

कमला करनि जोरै, विमला सुतून तारै

नवला लै मरजी की अरजी सुनावती ।

सुरन की शनी सुरपालन की रानी,

दिगपालन की रानी द्वार भुजरा न पावती ।।

फटिक सितान के महल महरानी बैठी

सुरन की रानी जुरि आई मन-भावती ।

कोऊ जलदानी, पानदानी, पीकदानी लिए

कोऊ कर बीन लै सुहाए गीत गावती ।।

कोऊ और द्वारै चारु चौदनी-से चौजवारे

हठी लै गुगुन सौ अलकें बनावती ।

नोलिन के, मनिन के, पन्वन के, प्रबालन के

लालन के, हीरन के द्वार पहिनावती ।।

चंद की कला-सी, नवला-सी सखी संग वारी,

रमा, रमा, उमा, हठी उपमा की को रही?

कीरति-किसोरो वृषमानु की दुलारी राधा

आली बनमाली की सहज चित बो रही ।।

भौन लै निकसि प्यारी पाय धारे बाहिर ली,

लाली तरवान की उमड़ि इक और ही ।

बगर-बगर अरु डगर-डगर बर,

जगर-मगर धान्यो ओर दुति हो रही ।।

चौदनी के आंगन, बिछौना नीके चौदनी के

चौदनी-सी दुति, अँखियान सुख लहो है ।

चौदनी-सी चौर चारु, चौदनी के आभूषन

चपक के गातन बखानी जाकौ कह्यो है ।।

हठी आसपास बैठी सुधर-सुजान सखी,



जिन्हें देखि रति को गुमान जास कहां है।
राधे मुखचंद की निकाई बजचंद आज,
जबनि-अकास लौ प्रकारा फैलि रह्यो है।।

सागन-महल-चौक, घोंदनी बिछीना ताने,
जरी को बितान-तान भान-जोति मंद की।
लालन की चाले लाल सारी कोरदार अंग,
औदन की लाली जिमि लाली जीवद की।।
रमा-सी, रमा-सी जहाँ दासी बैनका-सी हवी,
ठाढी कर जोरै तैऊ, छीनै जोति चंद की।
गधे बंद-शानी, धीर करति भवानी, राधे
बैठी सुखदानी महारानी नद-नद की।।

चदन लिपायी चौक, घोंदनी-चंदोटे ताने,
घोंदनी-बिछीनी फैली लहर सुगद की।
घोंदनी की साज नीकी चंद-सम चमकन,
बानगी और चंदमुखी चंद जोति मंद की।।
घोंदनी-सो चार साध घोंदनी-सी फैली हवी,
घोंदनी-सी हौसी, कै मिताई सुधा-कंद की।
चदन जी नीकी बैठी चदन लगाय भाल,
चंद-से चदन राधे रानी बजचंद की।।

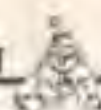
ध्यावत महेशहू, गनेसहू, धनेसहू,
दिनेसहू, फनेसहू त्यों गुनेस मन मानी है।
तीनों लोक जपत, त्रिताप की हरनहारि,
नवी तिद्धि, सिद्धि, मुक्ति भई दरबानी है।।
कीरति-दलारी संत वरन विहारी धन्य
जाकी कित नित विधि चंदन बखानी है।
साधा काज पल में, अराधा छिन आमा हठी,
माधा हरिबे को एक रात महारानी है।।

बैठी रग भरी है रेगीली रग रावटी में
कहाँ ली बखानी सुदराई सिरताज की।
चौदनी की चपक की, चंचला-चमीकर की,
इंदुमा, तिलातमा की सीमा कौन काज की।।
मोतिन के हार गये मोतिन सौ मौम भरे
मोतिन सौ देनि गुहरी हठी सुखसाज की।
चाल गजराज मृगराज की-सी लक, दुज-
राज-सी वदन राजी रानी बजराज की।।

बड़ी ही प्रताप, बड़ी ही सुहाग, बड़ी ही प्रभाव सुभाविक राखी।
बड़ी गुन-मान, बड़ीयै भुजान, सरूप-निधान पुरानन साखी।।
बड़े-बड़े देव-दिवेशन की घरनीं मुख देखन कौ अभिलाषी।
बड़ी दिलदार, बड़े-बड़े हार, बड़े-बड़े चार, बड़ी-बड़ी आँखें।।

रमा-रमा-सी उमा-सी, हठी बिगला नवला रति रूप छली सी।
चौदनी-चपा-चमीकर-सी चपला चमकावत जात चली सी।।
भागन आज लखी भरी नैनन, रावरी आवत देखि भली-सी।
जात चली गलि भानुलली अलि! मंजुल कोमल कज-कली-सी।।

मोरपखा, गर गुज की माल, किए नव भेष, बड़ी छवि छाई।
पीतपटी-दुपटी कटि में, लपटी लफुटी हठी मो मन भाई।।
छूटी लटें, हुलें कुंडल कान, बजै गुरली-धुनि मद सुहाई।
कोटिन काम गुलाम भर, जब कान्ह है भानु-लली बनि आई।।



महाभाव-कल्लोलिनी से उद्धत



श्रीराधानाथद-चरण बंदौ बारंबार

वन्दना एवं प्रार्थना

(पद)

(राग टोड़ी-तीन ताल)

बंदौ राधा-पव-रजपावन।

स्वाज्ञ-सुसेवित, परम पुन्यमय, त्रिविध ताप विनसावन ॥

अलूपा परम अपाशित गहिना सुर-सुवि-मन तरसावन ।

सर्वकार्यक रसिक कृष्णघन दुर्भग ललज जिहावन ॥

(श्लोक १)

मन्मथ-मन्मथ मन मथत जाके सुधमित अंज ।

सुख-पेकन-मकरंद नित पियत स्याम कृष्ण कृष्ण ॥१॥

जाके अल सुगंध कौ नित जात ललचात ।

तल चाहत नित परनिषी जाको मधुनय जात ॥२॥

मधु-रसगंधि वचनावली सुनिबे कौ नित कान ।

हरि के लालाहत रहत, तजि बुरभा कौ ज्ञान ॥३॥

जाके मधुर प्रसाद कौ मधु रस चाखन हेतु ।

हरि-रसना अकृष्णत अति तजि तुस्त्यज धृति-सेतु ॥४॥

जाकी तख-दुति लखि लजत कोटि कोटि रवि-चंद्र ।

बंदौ तिन राधा-चरण-पकज सुचि सुखकंद ॥५॥

(श्लोक ३)

श्रीराधाशर्मा-चरन वरों बारंबार ।
 जिन के कृपा कटाच्छ ते शीघ्र नैककुमार ॥
 जिन के पद-रज-परन ते स्वाम होय वैभान ।
 वरों जिन पद-रज-कननि मधुर रसनि के स्नान ॥
 जिन के वरनन हेतु जिन विकल रहत धनस्याम ।
 जिन चरणन में वरी मन मेरी आरों जाम ॥
 जिन पद पंखज पे मधुप मोहन कृष्ण मंडरान ।
 जिन की जिन ओंकी करन मेरी मन ललचान ॥
 ऐ अछर को सुनत ही मोहन होत विशोर ।
 वरों निरंतर नाम तो 'राधा' जित जन मोर ॥

...

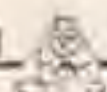
वरों श्रीराधाचरण पावन परम दवार ।
 श्रव-विधात-अन्वान हर प्रेमभक्ति-दातार ॥

(श्लोक ४)

श्रीराधाशर्मा चरन विनयों बारंबार ।
 विनय-पावन लाल करि, करों प्रेम-संधार ॥
 तुम्हरी अनुकंपा अमित आवरत, अकल, अपार ।
 मोपर लख अहेतुकी वरनन रहत नवार ॥
 अनुभव करवाये तुला जाते मिट विकार ।
 शीघ्र परमानन्दन मो पे नैककुमार ॥
 पर्यो रही जित चरन-तल, अर्यो प्रेम-दरवार ।
 प्रेम मिले मोय दुहुत के पद-कमलनि सुखसार ॥

(श्लोक ५)

श्रीराधा । द्रव देह मोहि तब पद-रज-अनुलान ।



जाते छह-पर-भोज में होय तबय बैरान ॥
 जोछहु की माया मिटे कटै सकल अवशोन ॥
 तुम बोलन के चलन को बन्दो रहै सजोन ॥
 जो कह्य तुम चाहौ करौ राधा-माधव । बोल ॥
 तुम्हारे मन की सहज रुचि चाह पु मेरी होत ॥
 सेवा को कछु काम जो हो मेरे अनुहार ॥
 छोटी-मोटी बकसि मोहि करौ कृपा-विस्तार ॥
 पर्यो रहौ नित चलन-तन, परसौ नित पदधर ॥
 गलबाली पौछत रहौ जल-जल सगरी भुल ॥

(श्लोक ५)

हे राधी रत्नेश्वरी । रसकी पूर्ण निधान ।
 हे गगन मणिमयी । अमित व्याम-सुख-स्थान ॥
 पाप-ताप-हारिणि, हरणि सत्वर सभी अर्थ ।
 परम दिव्य रस दायिनी पचम शुचि पुत्रपार्थ ॥
 यद्यपि हे सब भौत हम अति अवोध्य, अधबुद्धि ।
 सत्य कृपामयि । कीजिये प्रभु प्रसन्न की बुद्धि ॥
 अति उपार । अब दीजिये हमको यह वस्त्रान ॥
 मिले मंगरी का हमें वाली-वाली-स्थान ॥

(श्लोक ६)

करौ कृपा श्रीराधिका । यिनरी वारवार ।
 बली रहे स्मृति मधुर, शुचि, मंगलमय, सुखसार ॥
 प्रसा नित बढ़ती रहै, कटै नित विषयाल ॥
 अरुण हो अवधीध तब तीक्ष्णके रुच स्थाल ॥

(श्लोक ७)

स्वयन्स्यामिनी राधिके । करौ कृपा को वान ।
 सुख रहे सुरकी मधुर, मधुमय वाली कान ॥

राधा राधा

पद-पंकज-मकरन्द नित प्रियत रहे कुल-गुण ।
 करत रहे सेवा परम सतत शकल सुधि अंग ॥
 रसना नित प्राती रहे कुलम सुख प्रसाद ।
 बानी नित लेती रहे नाम-गुणनि-रस-स्वाद ॥
 हजो रहे मन अमरदल तुम में आती जग ।
 अन्त शक्ति सब लोप ही सुमिरत छवि अजिराम ॥
 बद्धा रहे नित पलनि-पम, दिव्य तुम्हारी प्रेम ।
 सम होवे सब भेद पुनि, बिरहे जोलछेन ॥
 शक्ति-सुति की सुधि मिटे, उछले प्रेम-तरंग ।
 राधा-माधव सरल सुधि करै तुरत शव-भंग ॥

(पद)

(राग भैरवी-ताल कहरवा)

हे राधे । हे ब्रह्म-प्रियतमे । हम हैं अतिशय पामर दीन ।
 भोज-रसमय, काम-कलुषमय मन प्रपच-रत, बिरह मलीन ॥
 शुचितम दिव्य तुम्हारा कुलम बह चिन्मय, रसमय दरबार ।
 श्रुति-गानी-बोलीका श्री नहीं वहाँ प्रवेश-अधिकार ॥
 फिर हम-वैसे पामर प्राणी कैसे इसमें करें प्रवेश ।
 मनको कुटिल, बनाये सुन्दर रूपरसे प्रेमीका वेश ॥
 पर राधे । यह सुनो हमारी वैज्यभरी अति करुण पुकार ।
 यदि एक कोने में जो हम बैठा सकें रसमय बरबार ॥
 अथवा प्रती साफ करें, झाड़ू डें-लौपो यह शुचि काम ।
 शक्यताके खनते ही होने नाश हमारे पाप तमाम ॥
 होना वरम दूर फिर पाकर कृपा तुम्हारीका कर-लेख ।
 जिससे हम श्री हो जायेंगे उछने भावक तब पद-वेश ॥
 जैसे-तैसे हैं, पर स्वामिनि । हैं हम राधा तुम्हारे पास ।
 तुम्हीं दया कर दोष हरो, फिर वे ही निज पद-तलमें वास ॥
 सहज ब्रह्मनिधि । ईश्वरसत्ता । ऐसा करो स्नेहका दाव ।
 जीवन-मशुप ग्रन्थ ही जिससे कर पद-पंकज-मधुक पाव ॥



श्रीराधा विषयक

(दोहा)

१. राधा मेरी स्वामिनी मैं राधा को बात ।
जन्म जन्म मोहि दीजिये श्री वृन्दावनवास ॥
२. मेरी श्रव श्रव हरी राधा बाजहि सोई ।
जा तन की झार्छ परे श्याम हरित तुति होई ॥
३. राधा राधा नाम जो लपने मेहु लेय ।
ताकी मोहन लोचन रिझी अपने को देव ॥
४. राधे राधे रटत ही सब बाधा गिट जाव ।
कोटी जन्म की आपदा राधा नाम ते जाव ॥
५. राधा राधा जे कहते ते न परे श्रव फंज ।
जासु कंद पर कमल कर धरे रहत वृजचन्द ॥
६. राधा राधा कहत है जो नर आठोवात ।
ते अव शिष्ट उल्लसिके वसत सब वृजधाम ॥
७. राधा श्री राधा रटु निसरिज आठो वाम ।
जा उर श्रीराधा बसे सोई हमारे धाम ॥
८. सब धारन कहु छाहिके आयो तेरे द्वार ।
अरी जानु की लाइसी मेरी और निहार ॥
९. अहो किशोरी स्वामिनी जौरी परम कवाल ।
तनिक कृपा की कोर लखिजकीजे मोहि निहाल ॥
१०. काहुके बल आपन को काहु के आधार ।
व्यास शरोले कृपरी के लोचन पांव पसार ॥
११. वृन्दावन के वृक्ष को गरम न जावेई कोई ।
हार पात फल फूल में राधा राधा होई ॥
१२. राधा रूप समुद्र में बह्यो पात मननील ।
मानसरोवर राधिका, मनहस हमारे किल ॥
१३. है राधा रानी सब, करहु कृपा कीकोर ।
कबहु तुम्हारे सब में, केहूँ तजकिशोर ॥

श्रीराधे

(दोहे - श्रीधाम विषयक)

१. धन कुन्दावन धाम है धन कुन्दावन नाम ।
धन कुन्दावन संस्थित है, जो सुन्दरे श्याम श्याम ॥
२. प्रातः चौरासी कोस में चार धाम निजधाम ।
कुन्दावन इस मथुरी वरनामो अन्य नाम ॥
३. मोर सुकट कटि कछनी कर मुरली उरगल ।
यह धानिक मो मन बसो सब विहारीजाल ॥
४. कर खुटकी मुरली बहे, तुलार चारे केस ।
यह धानिक मो दिव बसो श्याम मनोहर वेश ॥
५. ब्रह्मी हलाहल सब चारे श्वेत श्याम रतनाट ।
जियत भरत सुकि सुकि परत जिहीं चितवन एक बार ॥
६. ब्राह्मी चारे मोहना पक्षक झीपी तोही जेह ।
ना ते वैष्णु और को ते तोही वैष्णव वैज ॥
७. मोहनी मुरली श्याम की मो मन रही सजाय ।
जो मोहनी के पात ते लाली लक्ष्मी न जाय ॥
८. बालाहिं मेरे लाल की जित वैष्णु उतलाल ।
बालाहिं वैष्णव में बई में मो हो बई लाल ॥
९. चलो उखी तहां जाइये जहां बसे कुन्दावन ।
जो रस बंधन हारे मिले एक पद हो काव ॥
१०. मेरे चारे मोहना बली जेकु बजाय ।
तेरी बली मन हरयो हर शोभन न दूख ॥
११. बलन पात मोतियन लरी अथर ललाई पात ।
ताहुं पे हंसि हैरिजो को लखि बसे सुधान ॥
१२. सब सो मिल निरीकास मोत की कुन्दावन विधान ।
श्री राधा बल्लभ लाल की हवय श्याम मुखावाम ॥

- १३ मे जही वेस्तु और को मोंय न वेस्तु जौन ।
मे लित वेस्तोई कसरे तुम सोडवि सब और ॥
- १४ सुनी न काह की कहे कही न ब्रजनी बान ।
नारायण वा रस मे जनन रही दिन रात ॥
- १५ नारायण मूर्ति सबे खानपान विश्राम ।
मन मे मारी चटपटी कव लिख्यो मनश्चाम ॥
- १६ देह बेह की सुधि नही दूँट जाय जन धीनी ।
नारायण भावा फिरो प्रेम-भरे रस जीत ॥
- १७ फटि जाहू नैन जो और को बिहारे ।
जापी नलि जाय सधारमण ना मुकरे ॥
- १८ तनयन मिटि जाहू पगल तुम्हें वनि दितारे ।
शूलको न जाहू हाथ और पे पसारे ॥
- १९ नोहि मोंखि मोंखी न मोंबनी कहायो ।
सुनि सुभाष शील सुखन मीचन जल बायो ॥
- २० नारायण हरि लबन मे ये पांथो न भूयत ।
विषय मोन निवडा हीनी जगत प्रीति कहुयात ॥

हा ब्रजेश्वरी

। श्री राधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

प्रेम भरे दोहे

१. मधु मुखवान लिहारिके, धार धरत है कौन ।
नारायण के मन लजे, जो ब्रौल के लोच ॥
२. लबन तरे ठाडी कबहूँ, कबहूँ यगुन नीर ।
नारायण नैजन बरसी, नरति खान बरसर ॥



3. काजरीयों झिल्लावत में बस्थो रहत दिन-रात,
प्रीतम प्यारों हैं नख्खी ताने लीवर बात ॥
4. प्रीतम छवि नैनन बली, पर छवि कहा समाव,
अरी सरख रहीज लखि, आप पक्षिक फिरि जाय ॥
5. कबिरा काजर ऐछाहू, अब तो बई न जाव,
नैनन प्रीतम रनि रहा, पूजा कहाँ समाव ॥
6. या अनुरागी फिा की, बात समझी नहि कोय,
ज्यों ज्यों दूबे बखान रंग त्यों त्यों लखखल होय ॥
7. कीच लगी ब्रज खिरक की, इन लखिवत की धारि,
अन लगी कानी जलै, आछि नपु जल दूरि ॥
8. जमुना-जल झेंचयन करै, जमुना जल में नहाहि,
जहाँ-जहाँ जमुना बहै, तहाँ-तहाँ जल बाहि ॥
9. कामधेनु कलपत रही, तैं न भई ब्रज जाय,
राधा लेती दोहनी मोहन दुहते आव ॥
10. तीन ओक, चौबह भुवन, शोजन पुजयत जीव,
झारै देख्यो नन्द कं, मौनत मानखन रोव ॥
11. गल कृपा मानखन लिऐ, करत तोतरी बात,
हरै-हरै घुटलन चलत, देखत नैन लिरात ॥
12. जाके जगमें बल रही, मोहन की मुस्कान,
नारायण ताके शिये, और न जानत ज्ञान ॥
13. ब्रह्मादिक के शोभ सुख, विष सन जानत ताहि,
नारायण ब्रजचन्द्र की, लजन लकी है जाहि ॥
14. इन्हो राधेके स्वामिनी, नौरी परम क्वाल,
सदा बसो मेरे हिये, कलके कृपा कृपाल ॥
15. तैं काको जानो नही, न मोहि जाने कोय,
तुमसी प्रीति लकी रहे, हम तुम जावै दोय ॥
मैं जानो तुम नाय ॥



दोहे-श्री धाममहिमा

१. दुन्दावन की रेणुकी, सुरपति जायत माय,
जहाँ जाय भोपी भवे, श्री गोपेश्वर माय ॥
२. दुन्दावन में वास करि, राज पात जित स्थाल,
तिनके ज्ञाननिष्ठा निरखि, ब्रह्मानिक ललचात ॥
३. हम न भवे ब्रज में प्रकट, यही रही हम आस,
विशिष्ट निरखत दुगल छवि, करि दुन्दावन वास ॥
४. मुक्ति कहे भोपाल ते, मेरी मुक्ति कराइ,
वज्र-रज उदि मरतक लने, मुक्ति मुक्ति है वाइ ॥
५. कदम कृपु हे हो कवे श्री दुन्दावन मोहि,
ललित किशोरी लाडिले, विहरैने तेहि छौहि ॥
६. कथ कालिंदी कलकी, हैं ही तरवर-डार,
ललितकिशोरी लाडिले, जूने अमा डार ॥
७. कथ ही सेवाकुंज में, हे ही श्याम तमाल,
भतिका कर भति बिरमिहै, ललित लडैती लाल ॥
८. कथ कालिंदी कलकी हे, ही त्रिविध समीर,
पुनल डैल डैल लावितो, उडिहै लूतन भीर ॥
९. सुनन-यादिका विपिन महीं, हे ही कवह, फूल,
कोमलकर दोट जायते, छरिहै बीजा फूल ॥

संकेत

दुन्दावन-पुलिन-कुंज बाहर की, कोमल हवे हम कूक लचाऊँ।
प्रिय-पद-पंकज भाल मधुप है, मधुरे-मधुरे गुण सुनाऊँ ॥
कूकर है ब्रज कीधिन लीलू, बचे लील रसिकल के स्वाऊँ।
ललित किशोरी अल वही हम वज्ररज तजि छिन्न जनत न जाऊँ ॥

पद

दीनकन्धु दीनानाथ रमानाथ प्राननाथ
राधानाथ जो अनाथ की सहाय कीजिये ।
नात नात आत कुलदेव बुरखेव त्यागी
जातौ तुम ही सो जो विलय सुनि लीजिये ॥
रक्षिये निहारि केर कीजिये न झोपी कहूँ,
दीन दात जानि मोही आनाथ लीजिये ।



कीजिये कृष्ण कृपाल लीजिये बिहारीलाल
भोट बुरख बाल बाल बुलबाल कीजिये ॥

श्री राधे

आँखें पर सुकृट बोंछि चलिद्रका घटक देखि,
छवि की छटक देखि रूप रस पीजिये ।
लोचन विताल देखि बाले मुँजताल देखि,
अधर रसाल देखि चित चुप कीजिये ॥
कूटल हलनि देखि पलक बलनि देखि,
अलक बलनि देखि संखस कीजिये ।
पीताम्बर छोर देखि मुरली की छोर देखि,
लीजिये की ओर देखिदेखिबोर्ड कीजिये ॥

॥ श्री राधे ॥

अवाज अवाज सदा राधे आपुनि अवाज आई ।
प्रेमति फिरि अपनी लखिबनुजो प्यारी कहीं आई ॥
पुनःपुनः प्रीतिन अमल-नद श्री राधे-राधे-राधे ।
चतुर लखी वह वधा देखिके रही लखल मोन राधे ॥
आरई प्रीति कला न करावै क्यों न होय नति ऐसी ।
कह अमवान हित रातरात्र प्रभु खनन लखी तो ऐसी ॥

॥ श्रीराधे ॥

सोना

अवाज-लीर अजगरकिन्द पर जिसको पीर मचलते देखा,
नेत्र बान सुखबान मन्त्र पर कभी लोच सँभलते देखा ॥
अलिप्त किबोरी तुलल डीक में बहुरो का घर शलते देखा,
तूना प्रेमसिन्धु का कोई हमने नहीं उठलते देखा ॥

सुकृट की घटक लटक बिबि कुंडल की,
भीर की लटक नेक औंछिनु कित्वाहुआ ।
ऐसी बलवारी बोलवारी में तुम्हारी मेरी
जेल क्यों न आइ लेक नाइन चलाहुआ ॥
आजिल सुखान रूप गुनके निधान काजल,

बनसीकी बजाई तन तपसि बुझाउ जा।
नगलके किनोर चितधोर मोर-पंखवारै
बनसीवारै सौंदर्ये प्यारै झुत आउजा।

॥श्रीराधे॥

पद

भगवान की प्रतिज्ञा

मैं नित जतन हाथ बिकाऊँ ।
आँखें बाम रुख मैं राखू पलक बही बिजलजुँ ॥
भाऊनकी जैसी रुचि वैखी तैसोइ प्रेश बनाऊँ ।
दारी आपन बतन अत्त लखि तिनके बचन लिखाऊँ ॥
जैव-जीव सब काज शक्तके निजकर सकल बनाऊँ ।
रुच हौंको पन थोड़ बालन माजो छानि छयाऊँ ॥
मौजो जाँह बाम करु तिनते नहि करु तिनमे सताऊँ ।
प्रेम सहित जल पत्र पुष्प फल जोड़ दैव सोइ पाऊँ ॥
निज सम्पत्ति शक्तको सौंपी आपनो स्वप्न भुलाऊँ ।
शक्त कहै सोइ करौ निरन्तर मेघों ती बिक जाऊँ ॥

विशेष : एक भक्त की हार्दिक अभिलाषा

वसुधैव कुटुम्बकम् बनाये जायेंगे सागर मेरी मिलकी
लव जागीरों मोरी खूब लेगे खाक ये मिलके

१ मरने के पश्चात् २ प्याले ३ मिट्टी ४ होठ ५ प्यार ६ सुम्बन
(अर्थ)

सुजाताशरणमि श्यामकुन्दर? हे महावती श्री सारागणर कल मेरी श्री रूप
यही हार्दिक इच्छा आकांक्षा है कि मुझे भी वीर्य तन मिट्टी में मिल जावा चाहे भू जिस
मेरी मिट्टी के कुतार पत्र बनावे, शोष बालापुँ उस पत्र में वही जमावें और उस वसि के
पत्र सहित तुम मुँह से लगाये स्वाते शायते जाओ और मैं मिट्टी का पत्र सब तुम्हारे उलान
होती का मधुर मधुसूत पान करता रहूँ नाथ? मैं श्री कृष्ण से जानती

भक्त की अभिलाषा (पद)

कलजाकर? कलजा करि केनहि सुधि लीये ।
सहि न सकत जनत बाव तुरत क्या कीये ॥
हमरे अवबुझि नाथ सपने जनि केरुह ।
आपकी किस प्राणनाथ प्यारे अवरुह ॥
मैं तो सब शक्ति हीन कर कुदिल काती ।
कहत रहत धन-जन के चरन की बुलाती ॥
नहापाप पुष्ट दुष्ट धर्मोहि नहि जानी ।
साधन नहीं करत पुक तुमोहि शरण जानी ॥

ऐसा ही मैंने अब तुम्हें बख्श दिया।
कहा बिधि गस्ति भेद हम नो अब सारे ॥
हृषिकेश जगन्निष्ठ भक्तकी स्तुति कीजे।
होत आनि हरीचन्द बौद प्रकरि लोहे ॥

॥ श्रीराधे ॥

भक्त की अभिलाषा

जिह्वाकीध्वनिधन सवर नय कुलनुको,
पशु कीजे महाराज नन्दके प्रभारको।
जर कीज तौन जौन राधे राधे नाम रते,
तल कीजे वर कष्ट काजिलही कबार को ॥
इनसे ही ये कीजे जो कष्ट कुंठार कान्त,
राखवे न फेरि या हठी के झगार को।
गोपी-पद-प्रकट-धरण कीजे मलराज,
तुल कीजे लखरे ही नोकुल नगर को।

॥ श्री राधे ॥

भक्त की अभिलाषा

मानुष ही तो वही रखदानी
बसों प्रज नोकुल नाँव के ब्यारन को।
जो पशु ही तो कहा वसु मेरो
चरो जित जगत्की श्रेष्ठ महारन ॥
पादम ही तो वही जिह्वाको
जो धरथी कर सब पुरेवर-धारन।
जो रुख ही तो वसरे को करी मिलि
कालिन्दी कुल कदम्बरकी डारन ॥

॥ श्री राधे ॥

श्री राधेजी की महिमा

गाये जा राधे राधे

पद

भजे जा राधे राधे, कहे जा राधे-राधे।
श्री कृष्णधन धाम जगत्, रहे जा राधे राधे ॥१॥
गुन्दावन जलियों डोलें, श्री राधे-राधे बोलें।
याको प्रजम नफल हो जाय, रहे जा राधे-राधे ॥२॥



या ब्रज की रज सुन्दर है देवन का जो दुर्लभ है।
 सुक्ला रज शीश चढ़ाय, रटे जा राधे राधे ॥३॥
 ये वृन्दावन की लीला, नहीं जाने गुरु वा भेला।
 त्रासि-मुनि बड़े सब हार, रटे जा राधे-राधे ॥४॥
 वृन्दावन रात रचायो, शिव गोपी रूप बनायो।
 सब देवन करे विचार, रटे जा राधे राधे ॥५॥
 जो राधे राधे रटतों, दुख जनम-जनम को कटतों।
 तेरे बंधो होतो पार, रटे जा राधे राधे ॥६॥
 जो राधे-राधे गावे, सो प्रेम पदारथ पावे।
 जवलागर होवे पार, रटे जा राधे राधे ॥७॥
 जो राधा नाम न गाये, सो बिस्था जनम भयाये।
 वाको जीवन है धिक्कार, रटे जा राधे राधे ॥८॥
 जो राधा जनम न होतो, रसराज विचारो सेतो।
 होतो न कृष्ण अवतार, रटे जा राधे राधे ॥९॥
 मन्दिर की शोभा न्यासी, या में राजन राजकुमारी।
 बखोदी पर ब्रह्मा राजे, रटे जा राधे राधे ॥१०॥
 जेहि प्रेव पुराण बखाने, निरमलम पार न पावे।
 खाड़े वे राधाको दरबार, रटे जा राधे राधे ॥११॥
 तू गावा देख गूलायो, युधा ही जनम भयायो।
 फिर भटकेनो संसार, रटे जा राधे राधे ॥१२॥

॥ श्री राधे ॥

पद

आभी महीं लाले वृन्दावन नीको।
 धर-धर तुलसी वाकुर पूजा, बरषण ओविल्लजी को ॥१॥
 निरमल नीर यहत पमूना में भोजन दूध दही को।
 रतन सिंहासन आप बिलाये, मुकुट धरयां तुलसी को ॥२॥
 कुंजन-कुंजन फिरत राधिका, सबद सुगत मुरली को।
 'मीरा' के प्रभु निरधर नानर, आजन बिना नर फीको ॥३॥

॥श्री राधे॥

पद

राधे तेरे चरणों की.

राधे तेरे चरणों की, बर थूल ही मिल जाये।
राच कहती हूँ की मेरी, तकदीर ही बदल जाये।

राधे तेरे चरणों की...

राजने हैं तेरी श्रमात दिन-रात बरसाती है।
दूध धूँव ही मिल जाये, मन की कली खिल जाये।

राधे तेरे चरणों की...

ये मन बड़ा ही बचल है, कैसे तेरा भजन करूँ।
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचल जाये।

राधे तेरे चरणों की...

नजरो से बिरावा ना, चाहे जितनी श्री सेवा देना।
नजरो से जो बिर जावे, मुरिकल ही संजल पाये।

राधे तेरे चरणों की...

राधे इस जीवन में, बल इतनी तमन्ना है।
तुम सामने हो मेरे, मेरा कम ही निकल जाये।

राधे तेरे चरणों की...

॥श्री राधे॥

श्री बरसाने की महिमा

पद

- (१) जो रसबदल रहो बरसाने जो रस तीन लोक में जाही।
तीन लोक में जाही जो रस बैकुण्ठ हूँ मैं जाही ॥देव॥
सैंकरी बली बली पर्वत की, दही ले चली कुन्ति कीरणी की।
आगे भाव चरै निरधार की, बीजे सख्या सिखावे ॥जो रस॥
है जो वान कुँवरी मोहन की, तब छोड़ै तेरे मोहन की।
राज वाही वन में निरधार की, वन लेइये राख ॥जो रस॥

इसके लज सखी मग जाती, उनके संग सखा उल्लासी ।
 छोरी लई ब्यालिन रनमाती, मग में अति हरषाय ॥ जो रन ॥
 सुर तोतलन की मान बोरी आँख के बल्ले बिरज के ओरी ।
 देखी देखी या ब्रजकी खोरी, ब्रजनादिक ललचाय ॥ जो रन ॥

॥श्री राधे॥

पद

- (२) राधे राधे करुणामयी कृष्ण पिबारी ।
 मेरी सुध लीज्यो श्री वृषभान दुलारी ॥
 हे अलिल लोक पूजागणी किरली किशोरी ।
 वृष भूषण दर भूषण वृजचन्द चकोरी ॥
 वृज जीवन जीवनी वृज लखी मगी श्यामा ।
 आनन्दमयी आनन्दकन्द की आमा ॥
 वृज मण्डल की शोभा वृज की उजियारी ।
 मेरी सुध लीज्यो श्री वृषभान दुलारी ॥
 हे सर्वोद्धारिणी रासेश्वरी रस रूपा ।
 वृष विभासनी वृज वासिनी वृज यही भूमा ॥
 ललीतादिक लहचरी सर्वरस स्वरूपा ।
 निज प्रजाय प्रसन्ना स्वामिनी परम अनूपा ॥
 हे लोगवश गोपी वृज वरसाने वारी ।
 मेरी सुध लीज्यो श्री वृषभान दुलारी ॥

॥श्री राधे॥

पद

- (३) मल गूल मल जेयो, राधा राजी के चरण ।
 राधा राजी के चरण श्यामा प्यारी के चरण ।
 बाँके ठाकुर की बाँकी, ठाकुराजी के चरण ॥दे०॥
 वृषभान की किशोरी, लुकी गैया हूँ ते ओरी ।
 श्रीकी प्राप्ति के हूँ ओरी, मोठी राखीजी अरण ॥२॥
 जाक्युँ ब्याम दर हेर, राधे राधे राधे तेर ।
 गँसुरी मे बेर बेर, करे जान से रमण ॥३॥
 जयल प्रेसित बरदायी, जाकी मोहमा रलखायी ।

मिले जीवन्मृत मनजानी, कर प्यार से बरख ॥२॥
 डूरे सब मतवाले, छोड़ि दुनिया के झरे।
 राधा नाम के सहारे, शीघ्र जीवन मरण ॥२॥

॥श्री राधे॥

पद

(५) वृधभान की लली या सामलिया सौ नेह ललाय के चली
 अड़्यौ रे अहीर के तू हमरी बली
 चंदन छिड़कौली तेरी प्यारी ॥
 कोरी कोरी नटकी रही तू ते अरी
 रंग माल में श्री राधे पू लखी ॥
 हाथन में लजरे गुलाब की छड़ी
 तादे रहियो में लालजी कव की खादी ॥
 गैलन में कजरा मुख अर्यो पान
 दादी सी लगरियो राधे बहो ही गुमान
 पुनवसन की कुंजन में रख्यो है रास
 यह धुनि भावै स्वामी कान्हा दास ॥

॥श्री राधे॥

पद

(५) प्रबल प्रेम के पाले पड़ कर, प्रभु को निवस बनलते देख्यो ।
 उगवत मान टले टल जाये, जवा का मान न टलते देख्यो ॥
 जिनकी केवल कृपावृष्टि से, सकल सृष्टि को पलते देख्यो ।
 उनको औकुल के ओरस पर, सौ-सौ बार मचलते देख्यो ॥
 जिनके चरण-कमल, कमल करतल से न निकलते देख्यो ।
 उनको वृज करील कुंजों में, कंटक पथ पर चलते देख्यो ॥
 जिनका ध्यान विरधि शंभु, सनकादीक से न संभलते देख्यो ।
 उनको ध्यात सख्या-मण्डल में, लेकर भेद उछलते देख्यो ॥
 जिनको बंक भृकुटि के भय से, सानर सप्ता उछलते देख्यो ।
 उनको मी वशोदा के भय से, अशु विदु दुलकाते देख्यो ॥

(६) गहरी गुहरी लिखारी महाराज रे लौकिक निरधार।
 मोहे एक लिखारे आधार रे लौकिक निरधार ॥
 राखी पल प्रह्लाद की लियो तरलित अवतार।
 स्वयं फल प्रकट अये, ओ लतारयो भूमि को आर रे ॥
 पूँजी लोपी चन्दन मारी, तुलसी-माला सोने को मार रे।
 सींचो गहवो मेरो लौकिक, मेरी दीमत है इन्द्र करतार रे ॥
 अरे लता के बीच में, खड़ी वौपवी नार,
 लौकिक मेरी चौर प्रभो, ललितो मेरी साज,
 नहीं तो प्रायणी तिहारी साज रे लौकिक निरधार।
 माता के कठोर वचन से, पाँच बरस के बाल,
 ब्रज में जाकर तप कियो, मिले कृष्ण ओपाल,
 मोहे दर्शन हो जीवो चवश्चाम रे लौकिक निरधार।
 नरसी शक्त की दीवली मुनियो दीनद्वाल रे,
 चरण कमल मोहे राखियो, मोहे दीखी वृन्दावन बाल रे ॥

॥ श्री युगल महामंत्र ॥

राधे कृष्ण राधे कृष्ण,

कृष्ण कृष्ण राधे राधे।

राधे श्याम राधे श्याम

श्याम श्याम राधे राधे ॥

श्री युगल महामंत्र श्री ललकारादिक महामंत्रों का अलौकिक तथा आध्यात्मिक है। इसको जपने तथा बाने का एक ही नियम है कि इसका कोई नियम नहीं है। आप जिस भी अवस्था में हों, जिस किसी भी जगह बैठे हों, पवित्र हों या अपवित्र हों, स्नान किया हो या नहीं किया हो, चल रहे हों या बैठे हों, यात्रा में हों या विरत पर हों, इस मंत्र का आप चाहे जक जप कर सकते हैं।

प्रातः स्मरण पंचकम्

(१)

प्रातः स्मरामि जलनी-चरणारविन्दं,
संसार - सागर - समुत्तरणैक - हेतुम् ।
प्रातः स्मरामि गुरुदेव-पदारविन्दं,
अज्ञान धोरतिगिरावट-विनाश-हेतुम् ॥

(२)

प्रातः स्मरामि गणनाथ-पदारविन्दं,
देवैर्गुलं सकल-विघ्न-विनाश-हेतुम् ।
प्रातः स्मरामि भुवनेश-पदारविन्दं,
मुक्तिप्रदं सकल-कलमष-नाश-हेतुम् ॥

(३)

प्रातः स्मरामि गिरिजा-चरणारविन्दं,
कानादि-दोष-जल-पूर्ण-भावाब्धि-पोतनम् ।
प्रातः स्मरामि गिरिजेश-पदारविन्दं,
धर्मार्थकाम-भव-मोक्षा-विधायक-हेतुम् ॥

(४)

प्रातः स्मरामि भित्तेश-सुतादि-पद्मम्,
अज्ञान-नाश-हरी भक्ति-विक्रम-हेतुम् ।
प्रातः स्मरामि रघुनाथ-पदारविन्दं,
ब्रह्मा-सुरेश-शिव नारद-सेव्यमात्मन् ॥

(५)

प्रातः स्मरामि वृषभानु-सुतादिपद्मं,
प्रेमानृतैकमकरन्द औद्यपूर्णम् ।
प्रातः स्मरामि गधुसूदन-पाद-पद्मं,
प्रेमाखण्डं सजल-नेत्ररुद्रि मनोदाम् ॥

॥श्री राधे॥

पद

किबोरी तेरेचरण की रख पाऊँ ।
पड़ी रहूँ कुंजनके कोने ब्याज राधिका भाऊँ ॥
जेहि रज शिव मनकादिक दुर्लभ सोई रख बीबा चढाऊँ ।
व्यास स्वामिनी की छाँव निरखि देव विमल प्रभा भाऊँ ॥

॥श्री राधे॥

सवैया

दास लखै सुखचन्द प्रकाश चकोर समान न नेन हटावै ।
सात भस्मा धन धाम रखे तुमको तजि और करु न सुहावै ॥
राज रहै अनुमान भले नित प्रीति प्रीति प्रमोद बढावै ।
छाबल हिये यह लौघरी सुरति माधुरि मूरति बेगु बजावै ॥
सोंवत जानत छान रहै मन ब्यास स्वरूप नहीं बिसरवै ।
जाति स्वल्प रहै मन चंचल तबनि तुम्हें फिर जनत न पावै ॥
सुझी संपति लेहि बनाय बसाव के शीतर ही सुख पावै ।
छाबल हिये यह लौघरी सुरति माधुरि मूरति बेगु बजावै ॥

श्रीरसिकन प्राणधन श्री राधे जू

पद

भक्त की अन्तिम अभिलाषा

कर्म की छोट हो जगना का नद हो ।
अपने मुरली हो गावे पर मुकुट हो ॥
छाँदे हो आप एक बरकी अदा से ।
मुकुट जोकों में हो मोड़े हवाले ॥
जो आवे शीश में वन प्राणधारे ।
जसा हो खान चरणों में तुम्हारे ॥
और भरवत हुनककर पीत पद पर ।
खुलीरत जावें यह झोंखें मुकुट पर ॥
अनर दल तौर हो ताजम मेरा ।
तुम्हारा नाम हो ओ कान मेरा ॥

हो जकले^१ जल^२ धरवाली ने घेरा ।
 खदा हो सब लदा बलवाय^३ मेरा ॥
 पदे लीं और अजल^४ में आके तकरार ।
 लहे दोनों बरखर बार बार ॥
 वा बिगुड़ी हो कि अट पट तन से निकलूं ।
 यह मचली हो कि दर्शन करके निकलूं ॥
 नजर आ जाये छवि श्रीकी अवा की ।
 स्तुति होखे तो झोंकी हो अवा की ॥
 जो आवे जोख ने इस प्राण प्यारे ।
 लया हो ध्यान धरनों में तुम्हारे ॥

१. समय २. मृत्यु ३. सामान ४. प्राण ५. मृत्यु

भक्त की आर्त पुकार

मेरे जीवन धन? तुम्हें अब साष्टांग प्रणाम है। प्रिया व प्रीतम मुझे तुम भूल गत जाना—जैसी तैसी कुछ भी है, मैं तिहारी ही हूँ—तिहारी ही कहलाती हूँ।

।

बौद्ध धूहाये जात हो निबल जाबिको मोहि।

हिरदे ते अब जाहुने नई बजोगी नोहि ॥

प्यारे? जा तो रहे ही हो, अब मेरी अंतिम अभिलाषा और है—

मुरति यह माधुरी मेरे मनमें बसी रहे ।
 मम फँट लदा कृपानाम पे कसी रहे ॥
 लौ लादिले तुमसे लदा मेरी लबी रहे ।
 प्रभु-प्रीतिकी प्रतीति पकाम्बुज पबी रहे ॥
 राधा-रमण बाधा-हरण मंगल-करण कहूँ ।
 चाहे जहाँ कृपाजियो जिस वेध में रहूँ ॥
 राजा न कभी याद गुरु जन की मुरारे ।
 मन में रहे मोहन? रहो मुरली अथर धारे ॥
 सब भाँति से प्रभु-वरण-धारण हम हैं तुम्हारे ।
 माता पिता सरदा स्वजन तुम ही हो हमारे ॥
 ज्वाला तुम्हीं पे तन तथा मन और धव धारे ।
 यह मन्द-मन्द माधुरी मुसुकावि निहारे ॥



रसिकन की जीवन मूरि

पद - (भक्त का पूर्ण समर्पण)

आप सब बिछेर अरु दूरि की पछिचात हो
छिपी नाहि काहु कूर साहिब सहूर की।
बुझता निघात्री करि रात्री छिन ही में होत
करन ऐतरात्री न सुनिकै करसूर की ॥
तुम सों न दूररो क्यालु श्री बिहारीलाल
जाहि लाज आवै निज जनके आरकी।
भरती बिचारेको हारती दिये ही बले
माजो या न माजो यह मरती हुनूरकी ॥

...

॥ रसिक रसीलो ॥

पद

आगलों जो वेस्त्रो सुनो पदो अनो जीवन हरि
मेरे धनबलम मेरे चित्तलो शूलाहरे।
तेरे अवलोकन में शका जो न लटै फेरि
ऐसी महाघोर मोहि मूरख बनाहरे।
विराग जोय रख्य साज युनि स्वर लाह सम।
जो पै मन-मनिर में बौधुरी बजाहरे।
छक्रे फिरें तपस्व माधुरी को पाव कैके
प्रेमी मतवाला तू ज्वाला को बनाहरे।

श्यामसुन्दर? वास्तव में तो मुझमें कोई ज्ञान है ही नहीं, मैं तो सामान्य पतित-मूर्ख हूँ। परन्तु मुझे अपनी यह अभिमान भरी औछी-सी जानकारी ही सहान काष्ट दे रही है। तुम्हारे ध्यान में उनकी अगर-मगर, परन्तु किन्तु की शका उलती रहती है। प्यारे अब तो मुझे अपना ही मस्ताना दीवाना बना लो और जो कुछ जानता हूँ वह कृपा करके भुला दो। तुम्हारे सिये और कुछ ज्ञात ही न रहे?

- श्री ज्वालासिंह जी की मनन माला पुस्तक से उद्धृत

श्रीपादरूपगोस्वामी विरचित

श्रीकार्पण्यपंजिका स्तोत्र

(हिन्दी अनुवाद)

(अनुवादक—श्री चिमानलालजी गोस्वामी एन ९ शास्त्री गीता प्रेस, गोवर्धनपुर)

श्री वन्दावन के कुत्र में स्थित हुआ यह दीनजन वन्दावनेश्वर श्री कृष्ण तथा वृन्दानेश्वरी श्रीराधा के वरग कमलों में इस प्रकार निवेदन करता है। १।

श्रीकृष्ण की अंग कान्ति नयों नौलकमलों के लौन्दर्य को मात करती है तथा श्री राधा को गौर ध्रुव मनोहर गौराचन के गर्वपूर्ण गौरव का प्राप्त कर लेती है। श्रीकृष्ण का चमकीला पीताम्बर सुवर्ण की गोभा का तिरस्कार करता है और श्रीराधा के अंगों पर किरुक (रेसु के फूल) की कान्ति का हरा करने वाला लाल वरुण गोभा दे रहा है। श्रीकृष्ण जगत के समस्त किराग्वन्द के शिरोभूषण रूप में अवस्थित सरकत मांष के सदृश है तो श्रीराधा राज को अरण्य किरागियों के वृद्ध को सुशोभित करनेवाले मौलिका-पुष्प के तुल्य है। श्रीकृष्ण के मंगल विग्रह की गोभा भगवान् लक्ष्मीनन्ति नारायण प्रभृति अपने स्वरूपभूत ईश्वर विग्रहों के लौन्दर्य का अभिक्रमण कर जाती है और इन्हीं श्रीराधा की कमलोज्ज्वल भगवती लक्ष्मी की अपेक्षा भी अधिक सुन्दर वज्रगंगाओं के समूह का भी आश्चर्य से हुआ देने वाली है। श्रीकृष्ण के श्री अंगों को सारभ में श्रीराधा खिन्की हुई उनके समीप चली आती है और श्रीराधा के अंगों का दिव्य गन्ध श्रीकृष्ण को उन्नत करा देता है। श्रीकृष्ण की मुरली - ध्वनि श्रीराधा को तन्ति का अवरोध कर देती है और श्री राधा की गोणा का मधुर स्वा श्रीकृष्ण को मीहित कर लेता है। श्रीकृष्ण के नेत्र-प्रान्तों की चपलता श्रीराधा के धीर्यरूपी धन को चुरा लेती है और श्रीराधा को कटाक्ष-चातुरी तथा धमरी श्रीकृष्ण के हृदय कमल को चिकोटी लेती है। श्रीराधा की मार्मिक परिहासपूर्ण प्रीतिशक्ति श्रीकृष्ण को निरुत्तर कर देती है और व्रजेन्द्रपुत्र श्रीकृष्ण के नर्म वचन श्री राधा की अंग लता को समोहित कर देते हैं। श्रीकृष्ण दिव्य सद्गुणरूप साधक्य श्रेणी से समलंकित रत्नचय पतेत के समान हैं तो श्रीराधा के गुणमयूह जगन्जननी उमा आदि महादेवियों के हृदय में भी लोभ उत्पन्न कर देते हैं। २-९।



हे वृन्दावतेश्वर श्रीकृष्ण एवं वृन्दावनेश्वरि श्रीराध ! यह दोन जन आप दोनों के चरणों में सिर खाता हुआ निम्नोक्ति देव्योक्तियों के द्वारा आप से निनय करता है॥१०॥

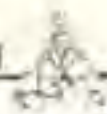
यद्यपि मुझ में आपको कृपा को प्राप्ति करने की कोई योग्यता नहीं है, फिर भी महाकृपालुओं के मुकुटमणि होने के कारण आप दोनों इस दोन पर अवश्य कृपा करें। हे लोकपालों के द्वारा वन्दित प्रिया-प्रियतम ! बड़े ही हर्ष को बात है कि इस जगत् में ऐसे महान कृपालु भी देखे जाते हैं, जो अयोग्य एवं अपराधी जन के प्रति भी दया से कातर हो जाते हैं। (फिर आप तो उन सब के शिरमणि ही रहते।) मैं जानता हूँ कि भक्ति हो आप के हृदय में करुणा का संभार करती है, किन्तु मुझ दोन में भक्ति के लेश का आभास भी नहीं है। फिर भी आप दोनों बड़े ही लीलात्मक एवं सर्व-समर्थ हैं, अतः इस जन पर अवश्य प्रसन्न होइये। हे प्राणेश्वर एवं हे प्राणेश्वरी ! इस पृथ्वी पर बहुत से ऐसे महान कौतुकी एवं महासमर्थ पुरुष दुष्ट एवं अभक्तों पर भी प्रसन्न होने देखे जाते हैं। यद्यपि यह प्राणी अधम होते हुए भी अपने को उन्नत समझता है, अज्ञानी होने पर भी अपने को पण्डित मान बैठता है, और दुष्टों का सरदार होकर भी अपने को शिष्ट माने हुए है और इस प्रकार यह आपका विशेष अपराधी है, फिर भी कभी-कभी यह आप दोनों के नामों का उच्चारण कर लेता है। अतः हे स्वामिन् एवं स्वामिनी ? मुझ पर आप दोनों अवश्य रोझ जायें, क्योंकि आपका नामाभास भी राशि-राशि लोगों से छुटकारा दिला देता है। एक बार भक्ति का लेखनात्र आचरण करने पर भी आपदोनों जिसे भ्रम न करे दे, ऐसा अपराध कहीं भी दृष्टिगोचर नहीं होता-इसी आशा को लेकर मैं आपके चरणों में यह वाचना कर रहा हूँ॥११-१॥

हाय ? हाय ? सर्वथा असमर्थ एवं सौंठपहोत होने पर भी इस जीव को कष्टों ने दौड़ बना दिया है, इसलिए हे स्वामिन् और स्वामिनी ? यह बार-बार आपसे प्रार्थना करने का दुःसाहस कर रहा है। इसे आपका यत्कीर्तित प्रसाद तो मिलना ही चाहिये। हे स्वामिन् और स्वामिनीज ? हाय, हाय यह पापी दीनों में तृण दबाकर उच्च स्वर से विलाप करता हुआ आप से कृपा की भौख मौंगता है, अतः इस दुःखी जीव पर आप अवश्य दरे। यह अभाग्य जन्तु हाहाकार करता हुआ आपसे करुणा की वाचना करता है। अतः हे ! स्वामिन् और हे स्वामिनीज ? आप मेरी इस क्लिप्त-बाणी को अवश्य सुनें, मेरी प्रार्थना पर अवश्य कान दे। मैं व्याकुल होकर सुबक-सुबक कर हा हा खाता हुआ दोन शब्दों से आपसे (कृपा की) वाचना करता हूँ, अतः हे करुणासागर प्रिया-प्रियतम ! इस अयोग्य जन पर भी आप अवश्य कृपा करें। मुँह में औंगुठा देकर यह जीव आर्तस्वर से विलाप कर रहा है। अतः हे



स्वामिसे एवं स्वामिसेषु । उम पर कल्याण का एक प्रान्त सा बना अक्षय्य दान
 है। अथवा मन्दबुद्धि है कल्याण करता हुआ दोन-बाणी से आप लगे है राधेरा
 करता है कि आप कल्याणार्थ इष्ट से कुछ पर करणा की एक राती से लहर
 अवश्य कहा है। (१५८-२३१) सम्पूर्ण जगत् में अतःकारण के विचारों की सहाय भावि
 है, उन सबमें आपके चरणों का प्रेम अभुल्लर है। अतः कृपया उन्हीं प्रेम का प्रसार
 हम जन को दो। हे देवशिराजसि तब लहरादी। मैं आज आपकी सेवा का ही
 चहना है और किसी वस्तु की पूर्ण अधिनाय नहीं है, अतः आप दोनों कुन
 करके मुझ दीन के प्रति प्रसन्न हो जायें। हे अनाम जनकाल प्रिया प्रियतम। मुझे
 आपसे कहना चाहो चाहता करतो है कि आप इस दोनवन को प्रसन्न होकर अपने
 प्रियतम सेवका की अधिकाय प्रदान की। मन्तक का अज्ञान अधिकाय वह दोनका
 आप दोनों से भीख भीगाता है कि एक बार हो सही, इसका मनोरथ अक्षय्य सिद्ध
 की। (१५८-२४१)

अहा। यह दिन कब होगा, जब कुन्दावन में आप दोनों के लोभों की
 निर्मल मन्य भूमिस्थित रूप से मेरी वरिद्धता में प्रविष्ट कर आपने अमृत्य गौरव से
 उम मल्लाली कर दी। अहा। क्या कभी हमों के कल्याण का भी विमर्श कर
 काले अक्षय्य दोनों के दुनरी की सधुसहितभूत जनकाय से हमों की अधिनाय करेगी।
 वह दिन कब होगा, जब कुन्दावन की भूमि पर चक्र कमल आदि मान सौभाग्य
 मूर्च्छा चिह्नों से युक्त आपके चरणों का दर्शन करके वह जन उन्नत हो जायेगा।
 हे प्रिय-प्रियतम। अक्षय्य से बरसकाल, जिन पर आपने के सम्पूर्ण दीन्य की
 वरम भीगा भी न्योदितता की जा सकती है। मेरे नेत्री की हाथ, जब अपूर्व आपन
 से मलाली कर लो? प्रिय-प्रियतम। क्या हम कर्म से वह शुभ अवसर मुझे प्राप्त
 होगा, जब आपके चरण कमलों का प्रत्यक्ष दर्शन करके इस दोनवन की चिरसेधुत
 आरा फलवती होगी। अहा। वह दिन कब होगा, जब कुन्दावन की किसी एकान्त
 कुन अथवा गोवर्धन की विभूत कुन्दरा में विहार करते हुए आप दोनों की
 सम्पत्तिगत हँसी का निहार से दर्शन करेगा। किशोरी-किशोरी रूप में बाल-पिता
 के पालन होने के कारण जब आप दोनों की एक दुनरी का दर्शन दर्शन होगा,
 उस समय एक दुनरी के संदेश रूप अमृतमय मधु का पान करकर मैं आप दोनों
 की कब अधिनाय करेगा? अहा। कुन्दावन के सहज प्रेक्षा में जब आप दोनों एक



दूसरे की अधीन होकर बैठ रहे होंगे, उस समय आपके मिलने के लिये मैं कब आप दोनों से अत्यन्त चित्ताकर्षक पुरस्कार प्राप्त करूँगा? आप दोनों जिस समय अपने अमूल्य हारों की धाती लगाकर खेल रहे होंगे और अपनी-अपनी चित्तों को धारणा करते हुए एक दूसरे के हाथ का खींचने के लिए व्यग्र होकर विवाद कर रहे होंगे, ऐसे अवसर पर आपके इस प्रेम-कलह का दर्शन करके मैं कब निहाल होऊँगा? जब आप किसी एकान्त कुंज में पुष्पाढानर्मित राग्या पर पौढ़ रहे होंगे। उस समय आप दोनों के चरणों का संवादन करके यह जन कब कृतकृत्य होगा? अहा! वह दिन कब होगा, जब किसी लता-मण्डल में प्रेमकलहजनित संघर्ष से दूरे हुए आपके अनुन्य हारों को पुनः धिरोने के लिए आप दोनों मुझे आदेश देंगे? हे वृन्दावनेश्वर एवं हे वृन्दावनेश्वरी! वह दिन कब होगा जब प्रेम-रस-प्रवाह से अमृत-व्यस्त आप दोनों के केश कलापों का मोरचण्डो के द्वार में शृंगार करूँगा? मिलन-रस-उदध आप दोनों के वदनारविन्द का शृंगार कब मिट जायेगा उस समय आपके ललाटेदरा को तिलक से अलंकृत करके मैं कब अपने मन की राधा पूरी करूँगा? हे देवीशरीरम्! कुंजमण्डप में आपके वक्षःस्थल को घनमानाओं से और हे देवि! आपके नेत्रों का काजल से यह दोन जन कब सम्मलकृत करेगा। सुनहले लाम्बुलदन्ती का चूर्ण रसा कर यह दोन जन कब आप दोनों के कमल सदृश मुखों में अपने हाथ से अर्पित करेगा? ॥२८-४२॥

कहाँ तो मैं बाधाकारी और कहाँ आपसे इस प्रकार की कृपा के लिए प्रार्थना करता। इन दोनों में कोई संगति नहीं है, परन्तु मेरा क्या बड़ा है, आप दोनों की अनुपम माधुरी यह चेतन वर्ग में से किसको उन्मत्त नहीं बना देती? जिस कृपा के कारण यह जीव सर्वथा अव्यग्न होने पर भी वृन्दावनवास कर रहा है। उसी कृपा से प्रेरित होकर हे स्वामिन् एवं स्वामिनी! मुझे अभिलषित सिद्धि प्रदान करें। हे वृन्दावन बिहारी ओशधा-कृष्ण! यद्यपि यह जन्तु इस कार्पण्य पत्रिका (दैन्योक्त) का केवल बाणी से ही उच्चारण कर रहा है (इतके भीतर दोनता का आभास भी नहीं है), फिर भी आप दोनों की कृपा से इसका मनोव्यव अवश्य पूर्ण हो ॥४३-४५॥

॥ श्री नन्दरूपगोस्वामी विरचित श्री कार्पण्य पत्रिका स्तोत्र सम्पूर्ण ॥

गोपी-गीत

(श्रीवद्वगवत् स्कन्ध १०, अध्याय ३५)

संगति

रूपकगीत के बाद यह 'गोपी-गीत' है। भगवान् ने गोपियों के हृदय के प्रेम का आविष्कार हीन कर दिया। परन्तु विहार में उनके मन में काम आने लगा। उन्हें सुखी यह क्षणिक आया। यह अल्प इसलिए कि प्रियतम पर से दृष्टि हटकार अपने पर चली गयी। यह प्रेम में विघ्न है। जो अपनेमें का लने लगा यह प्रेम का अधिकारी कौन?

श्रीकृष्ण ने सम्मान दिया गोपियों को, स्वयं उनके इशारे पर गावने लगे। गोपियों ने समझा कि हमारी सुन्दरता गधुरता का कारण से हमारे वर में हो गये हैं। 'आत्मनो मोक्षे लोका मानिन्द्याम्बुधिं मुनिः'

विद्यान के विल सयोग का रस आता ही नहीं। इस प्रकार सर्व-विघ्न को भट करके तथा सुप्रसन्न करने के लिए श्रीकृष्णचन्द्र वही अन्तर्धान हो गये। प्रसन्नता प्रसादात् तत्रैव लब्धवीर्यः।

अब जब गोपियों ने कहा कि हमारे प्रथम प्रियतम हमारे मध्य नहीं है तब ही वापस हो गयी- अपनी सब सुख-बुध भूल गयी। सयोग के समय उनके धार्मिक में भले ही कुछ अन्तर रहा हो, अब इस विद्योग में उनकी भाव सर्वथा एक हो गये हैं। सबकी-सब एक ही बात चाहती है। गहनमोहन श्रीरामसुन्दर शीघ्र प्रकट हो और उनकी मुख चन्द्रिका से हमारा यह ताप प्रशमित हो। इस प्रकार सब का भाव सब का चित्त एक हो जाने से उनकी संगीत का स्वर भी एक हो गया। उनकी हस्तों की बज उठी:

गोप्यः ऊचुः

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः

अयत्त इन्दिरा शशवदत्र हि।

दधित दृश्यतां दिक्षु तावक-

स्त्वयि धृतासदस्त्वां विचिन्वते ॥१॥

श्रीकृष्ण के विरह में व्याकुल हो प्रेमान्धी गोपियों माने लगी- हे प्रियतम! तुम्हारे प्रकट होने के कारण इस जगत् का गौरव वैकुण्ठ आदि दिव्यलोकों से भी अधिक हो गया है, तभी तो अखिल सौन्दर्य-माधुर्य की दिव्य गूर्ति श्रीलक्ष्मीजी अपने सित निवास वैकुण्ठ को छोड़कर इस जगत् को सुशोभित करती हुई यहाँ निरन्तर निवास कर रही हैं। इस महान् सुखसे पूर्ण सौन्दर्यमय जगत् में हम गोपियों हो ऐसी हैं जो तुम्हारे होकर भी तुम अपने प्राणों को पूर्णरूप से समर्पण करके भी वन-वन भटककर सब ओर तुम्हें ढूँढ़ रही हैं पर तुम मिल नहीं रहे हो। विरहज्वाला से जलती हुई मैं इसी आशाओं में सर्वथा मरम नहीं हो रही हूँ कि तुम सोप मिलोगे। अतएव अब तुम तुरन्त दिख जाओ ॥१॥

शरदुदाशये साधुजातसत्-

सरसिजोदरश्रीमुखा दृशा।

सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका

वरद निधनतो नेह किं वाः ॥२॥

हे हमारे रसिकरस! हे वर देने वालों में श्रेष्ठ! हम तुम्हारे बिना सोप की दासियाँ हैं। तुम शरदऋतु के रातोंपर में स्थित हुए उत्कृष्ट जाति के परम सुन्दर कमलकोशों की कणिका की सौन्दर्य सुग्मा को पुराने वाले अपने नेत्रों की मार से हमें मात्र चुके हो। इस जगत् में इस प्रकार नेत्रों से किसी को मार डालना क्या कष्ट नहीं है ? ॥२॥

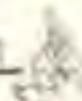
विषजत्साप्ययाद् व्यालराक्षसाद्

वर्षमारुताद् वैद्युतानसात्।

वृषमयात्मजाद् निश्वतोभया-

दृषम ते वयं रक्षिता मुहुः ॥३॥

हे पुत्र्यश्रेष्ठ! काष्ठिजहृदक विषमय जलपान के कारण होनेवाली मृत्यु से, अघोरसुरसे, इन्द्र की वर्षा, आँधी अथवा तूफानी दैत्यसे, तथा वज्रपातसे भीमस ज्वालालसे, अरिष्टसुर और मय के पुत्र व्योमासुर



आदित्य और इतनी प्रशंसा के अनेक मन्त्रों से तुमने जो जो बार-बार हमारी स्तुति की थी। फिर आज तुम्हीं अपनी विरह-ज्वाला से हमें क्यों भस्म कर रहे हो ? ॥३॥

न खलु गोपिकानन्दनो भवा-
नखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विस्वनसार्थितो विश्वगुणाय
सख उदेविजान् सात्वता कुल ॥४॥

हम जानती हैं कि आप निश्चय ही केवल यशोदा मैया के लाला ही नहीं हैं, अपितु समस्त प्राणियों के अन्तरात्मा के साक्षी हैं। ब्रह्मापीकी प्रार्थना सुनकर विश्व की रक्षा के लिये ही आप बहुकृष्ण अर्चिर्भूत हुए हैं। इस प्रकार विश्वभर की रक्षा के लिये अग्रतीर्थ होकर भी आप हमारे प्रति उतने निर्दय होकर हमें क्यों मार रहे हैं ? ॥४॥

विरचितामयं वृष्णिधुर्यं ते
घरणमीयुषां संसृतेभयात्।
करसरोरुहं कान्त कामदं
शिरसि घोष्ठि नः श्रीकरग्रहम् ॥५॥

हे गान्धर्वों में श्रेष्ठ! सरार से, जन्म-मरण के चक्र से भयभीत होकर जो प्राणी तुम्हारे घरणों की शरण में आ जाते हैं, तुम्हारे कर-कमल उन्हाड़ी अगम्य कर देते हैं। कीलझोली के कर-कमल को घारण करने वाला तथा सबकी समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला वह अगम्य कर-कमल हमारे शिर पर रख दो। शीघ्र दर्शन देकर हमें भी अगम्य कर दो ॥५॥

वज्रजनार्तिहन् वीर योषितां
निजजनस्मयध्वंसनरिगता।
भज सखे भवत्किंवरीः स्म नो
जलरुहाननं धारु दर्शय ॥६॥

हे वज्रजार्तिहर्ता के पुखी का नाश करने वाले वीरकिरोन्निधि! तुम्हारी मयूर मन्द मुसकान तुम्हारे प्रेमीजनों के गर्व का ध्वंस करने-वाली है। हे हमारे प्राणराज! हम सब तुम्हारी दासियाँ हैं, हमें अठशय प्रेमदान दो और हम सबलाओं को अजन्म मनोहर मुखजनल दिखलाकर सुखी करो ॥६॥

प्रणतदेहिनां धामकेशनं

तृणघरानुगं श्रीनिकेतनम्।

फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं

कृणु कुक्षेषु नः कृन्धि हृदयम् ॥९॥

तुम्हारे जो वरण-कमल शरण में आवे हुए मनुष्यों के समस्त पदों को नष्ट कर खतरे हैं जो समस्त सौन्दर्यश्री के धाम हैं- श्रीलक्ष्मीजी के धरम आश्रयभूत हैं जो प्राप्त करने वाले मो-वत्सों को पीछे पीछे धकेलते हैं तथा जिनमेंने कालिकानाग के कण्ठ पर चढ़कर मृत्यु किया था, उन अपने वरण-सरीजों को हमारे लक्ष्मण पर मधुरा दो। हमारे हृदय तुम्हारे विरह की ज्वाला से जल रहे हैं, इस प्रकार वरण-सरीजों को मधुरा कर उस जलन को मिटा दो। ॥९॥

मधुरया गिरा वल्गुवाक्यया

बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षणा।

विषिकरीरिमा दीर मुह्यती-

रघरसीधुनाऽऽप्यायस्व नः ॥१०॥

हे कमलनाभन! तुम्हारे वचन बड़े ही मधुर हैं, उनका एक-एक पद परम मनोहर है। बड़े-बड़े इन्द्रिय जी तुम्हारे नामों पर मुग्ध हो जाते हैं। उन वचनों से हम सब गोपियों मोहित हो रही हैं। हम सभी तुम्हारे चरणों की किंवदंतियाँ हैं। हमारे प्राण निकलने जा रहे हैं। हे दानवीर! तुम अपनी दिव्य मधुर आवाज-तुम्हारे कानों पर हम सबको आकर्षित करो और जीवनदान दो ॥१०॥

नय कथामृतं तप्ताजीवनं

कविभिरीडितं कल्मषापाहम्।

श्रवणमग्नं श्रीमदाततं

भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः ॥११॥

हे प्राणेश्वर! तुम्हारी लीला-कथा अमृतमयी है। वह खलत हुए प्राणियों को जीवनदान करती है। बड़े-बड़े ब्रह्मज्ञानी कविगण ने उसका नाम तथा स्तवन किया है, उसकी श्रवण-कीर्तन से सब पापों का नाश होता है। जो श्रवणमात्र से ही प्रेमस्वी परम सम्पत्ति का दाव करती हैं, ऐसी अत्यन्त विस्तृत कथा का पृथ्वी पर जो कीर्तन-माल करती हैं, वे जगत् में सबसे बड़े



जानी होगी है। वह तुम्हारे लीला-कथा को भविष्य है। तुम्हारे जीवन की महिमा को अवर्णनीय है ॥१८॥

प्रहसित प्रिय प्रेमवीक्षणं

विहरणं च तं ध्यानमहत्तरम्।

रहसि संविदां या हृदिस्पृशः

कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि ॥१९॥

हमारे ध्याते श्यामसुन्दर! तुम्हारे ध्यानमात्र से ही परम आनन्द प्राप्त होता है। फिर हमें तो तुमने अपनी मधुर हँसी, प्रेममयी दृष्टि तथा लीला-विहार का सुख प्रदान किया था। एकान्त में हमारे साथ हृदयस्पर्शी विनोद तथा प्रेममयी रासकेत-रेखें प्रती थीं। अरे छत्रिणा! आज ये ही तुम हमलोगों से छिप गये हो। तुम्हारी ये सभी प्रेममयी बातें इस समय कब आ रही हैं और हमारे मन को झुझा कर रही हैं ॥१९॥

चलसि यद व्रजाच्चारयन् पशून्

नतिनसुन्दरं नाथ तं पदम्।

शिलतृणाकुरः सीदतीति नः

कलिलतां मनः कान्त गच्छति ॥२०॥

हमारे प्रायःनाथ, जीवनसर्वस्व! तुम्हारे चरण अरुणिता, मृदुता तथा दिव्य सुगन्ध में कमल के समान अत्यन्त सुन्दर हैं; जिस समय तुम गौओंको चराते हुए व्रज से वन की ओर आते हो, उस समय यह सोचकर कि तुम्हारे उन अत्यन्त मृदु चरण-कमलों में कुशा, कोंटे, अंकुर तथा कंकड़ आदि गड़ते होंगे और कभी पीड़ा होती होगी, हमलोगों के मन में बड़ी ही व्याधा होती है। यह दशा तो दिन में वनगमन के समय होती है। इस सोच के समय तो वन मृदुल चरकों में विशेष पीड़ा ही रही होगी। इस चिन्ता से हमारे प्राण निकल जा रहे हैं। तुम सुरत वहीं आकर उनको दबा करो ॥२०॥

दिनपरिक्षये नीलकुन्तलै-

वंनरुहानन विभ्रटावृतम्।

घनरजरत्नं दर्शयन् मुहु-

र्मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि ॥२१॥

हमारे हृदयों को प्रेमबाण से बीच देने में तुम बड़े ही शूरवीर हो। राध्या के समय जब तुम वन से लौटते हो, तब हम देखती हैं कि तुम्हारे मुख

सरोजपर नीली गुच्छरली कलजावली धवी हुई है और वह मीनार में
 प्रस्रित हो रहा है उस समय तुम अपनी उस मुख-मधुरी की हमे बार-बार
 दर्शन कराकर हमारे मन में प्रेम-व्याधा का संचार कर देते हो। इस प्रकार
 नित्य ही तुम हमारे हृदयों को प्रेमवाण से बाँधा करते हो, पर क्षण तो उसकी
 स्वयं सीमा हो गयी है- याले तो हमें वेधुगान करके अपने पास बुलाया, हमारे
 साथ लीला-विहार किया और फिर यों छोड़कर चले गये ॥१२॥

प्रणतकामदं पद्मजापितं

धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।

चरणपङ्कजं शन्तमं च ते

रमण नः स्तनेध्वर्पयाग्निहन् ॥१३॥

अरेतु प्रियतम! हमारे मन की सारी व्याधा का हरण करने वाले भी
 एकनाम तुम्हीं हो। तुम्हारे चरण-कमल शरण में जाये हुए मनुष्यों के
 मनोस्थों को पूर्ण करने वाले हो। स्वयं ब्रह्माजी काका नित्य पूजन करते
 हो। विजय की सम्यग् ज्ञानवाय से ही वे समस्त विपत्तियों का नाश कर देते
 हैं और पृथ्वी के लो वे भूषण ही हैं। उन अपने चरण-सरोजों को, वे विहार-
 सुख देने वाले प्रियतम! हमारे वक्ष-स्थल पर गारा कर हृदय की सारी
 व्याधा का नाश कर दो ॥१३॥

सुरतज्वरं शोकनाशनं

स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम्।

इतरसाम्यवेस्मारणं नृणां

वितर दीर मस्तेऽधरामुत्तम् ॥१४॥

हृदय की व्याधा का हरण करने में समर्थ दीरशिरोमण! तुम्हारी
 अधर-सुधा दिया सम्भोग-रस को बढ़ाने वाली है, तुरंत ही समस्त शोक-
 संतापों का शमन करने वाली है, सुन्दर स्वरों में गान करने वाली पौन्दुरी
 उसे सदा मलीमौलि घूमती रहती है। जिसने एक क्षण के लिये एक
 बिन्दुनाउ भी कभी उसका ध्यान कर लिया, उसकी अन्य समस्त आसक्तियों
 लब्ध कामनाएँ सदा के लिये विलुप्त हो जाती हैं, ऐसी अपनी वह अद्वैतसुधा
 हमलोगों में वितरण कर दो- हम सब को पिलाकर कृतार्थ कर दो ॥१४॥

अटति यद् भवानहि काननं

त्रुटिर्युगायते त्वामपश्यताम्।



कुटिलकुन्तलं श्रीमुखं च ते

जड उदीक्षतां पद्मकृद् दशाम् ॥१५॥

प्रियतम! दिन के समय जब तुम गीतें पसने के लिये वन में चले जाते हो, जब तुम्हें देखे बिना हमारे अर्ध हाथ का समर भी घुन बन जाता है। फिर जब रात्रि के समय तुम वन से लौटो हो, तब तुम्हारे घुघराते वंशों के तुशोभित श्रीमुख का हम दर्शन करती हैं। उस समय पलकों का गिरना हमें अज्ञात हो जाता है, क्योंकि उसने समय तक तुम्हारे दर्शन से नेत्र उन्मिषित रहते हैं। इसलिये हमें जान पड़ता है कि नेत्रों पर पलकें बनाए जाता विधाता मूर्ख है ॥१५॥

पतिसुतान्वयग्रातृबान्धवा-

नतिविलङ्घ्य तेऽन्वध्युतामताः।

गतिविदस्तवोदगीतमोहिताः

कितव्योषितः कस्तवजेनिधिः ॥१६॥

प्रियतम! तुम कभी अपने प्रेम्भय स्वभावसे च्युत नहीं होते। तुम असुर शिरमणि भलीभाँति जानते हो कि हम सब तुम्हारे मधुरतम मुरलीधाम से मोहित होकर अपने पति-पुत्र, भाई-बन्धु, कुल-परिजन-सम्पत्ता त्याग करके तुम्हारी इच्छा का अतिरम्जन करके तुम्हारे पास आये हैं। फिर भी तुम हमें छोड़कर चले गये। अरे कपटी! इस प्रकार की घोर रात्रि के समय शरण में आयी हुई तरुणियों को तुम्हारे अतिरिक्त और कौन लक्षण सकता है ॥१६॥

रहसि सविदं हृदययोदयं

प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।

बृहदुरः त्रियो वीक्ष्य घाम ते

महुरतिरपृहा मुह्यते मनः ॥१७॥

प्रियतम! तुमने एकान्त में हमसे प्रेमभरी बातें कही हैं, तुम्हारा वह प्रेमात्मक, प्रेम की जानना को उदीक्षित करने वाला तुम्हारा मुरलीधाम हुआ मुख कमल, तुम्हारी प्रेम भरी तिरछी चितवन, लक्ष्मीजी का चिलानिवासघाम तुम्हारा विशाल बदन-स्थल इन सभी को देखकर, इनका स्मरण करके हमारी तुम्हारे मिलने की साखरा अत्यन्त बढ़ गयी है और हमारा मन लायिकाधिक मुख हो रहा है ॥१७॥

व्रजवनीकसां व्यक्तिरङ्ग ते
वृजिनहन्त्यलं विश्वमङ्गलम्।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्मनां
स्वजनहृदुजां यन्निषूदनम् ॥१८॥

प्रियतम! तुम्हारे यह व्रज में अतिमौल्य व्रज-वासिनों के समस्त दुःखों का नाश करने और विश्व का परम कल्याण करने के लिये हैं। हमारे हृदय में समस्त मंगोत्थ एकमात्र तुम्हीं में केन्द्रित हो गये हैं। हम तुम्हारे सिवा और कुछ चाहती ही नहीं। हम तुम्हारे अपनी ही हैं, हमें अब थोड़ी-सी वह वस्तु दो, जो तुम्हारे निजजनो के हृदयशरीरों को सर्वथा नाश कर दें ॥१८॥

यत्ने तुजातचरणाम्बुरुहं स्तनेषु
भीताःशनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित्
कूर्यादिभिन्नमति धीर्भगदायुषां नः ॥१९॥

प्रियतम! तुम्हारे चरणकमल अत्यन्त सुसुगम हैं, हम उन्हें अपने उरोजी पर भी बहुत ही धीरे से रखती हैं, हमें खर लगता रहता है कि हमारे कटोर उरोजी से उन कमल पद-कमलों को कहीं घोट न लग जाय। उन्हीं सुसुगम चरणों से आज हम से छिपकर तुम वन-वन भटक रहे हो। कंकड़-पत्थरों की नोक लगकर उनमें बड़ी पीड़ा हो रही होगी। हमारी बुद्धि इसी विन्ता है, व्याकुल होकर चक्कर खा रही है। प्यारे! हमारे जीवन के जीवन तो एकमात्र तुम्हीं हो हम तुम्हारे लिए जी रही हैं, हम तुम्हारी ही हैं ॥१९॥

श्री शुक-उवाच

इति गोप्यः प्रगायन्त्यः प्रलयन्त्यश्च चित्रघा
रुन्दुः सुस्वरं राजन् कृष्णदर्शनलालसा ॥१॥
तासामादिरभूच्छरीरिः स्मयमानमुखाम्बुजः
पीताम्बरधरः स्त्रग्वी साक्षान्मन्त्रायमन्मथः ॥२॥

बिक्कीडितं वज्रव्यूहिरिदं च शिष्णोः

श्रद्धान्वितोऽनुशृणुयादथ वर्णयेदः॥

भक्तिं परां भगवति प्रतिलभ्य कामं,

हृद्रोगमाश्रयपहिनोत्पद्मिरेण भीरः॥

(श्रीमद्भागवत १०/३३-४०)

बोलिये श्री रास रासेश्वरी च रास रासेश्वर श्री राधामाधव
भगवान की जय हो । जयजयकार हो ।

ॐ नमः

॥ शिक्षागुरु श्रीकृष्ण की शिक्षा-प्रणाली ॥

दृष्टान्त : शास्त्रीय महारास के प्रसंग में जब भगवान् अन्तर्धान के
परवाना प्रकट हुए, तब राजाजनाओं ने उनसे तीन कठ-प्रश्न किये हैं-

'इक सज्जे को भर्जे, एक दिन भजते भजती ।

कहो काक ते कौन, जो इन दोउन तजही ॥'

भगवान् सब प्रश्नों के उत्तर देते हुए तीसरे प्रश्न के उत्तर में बोले-
जो किसी को भी लगी भजते हैं, वे बार प्रकार के हैं, आत्मागत, आनन्दगत,
अकृतज्ञ और गुरुदोषी। प्रश्न हुआ कि 'आप को कौन-सी कौन सी तरह
जान ?' तुम्हारा उत्तर मिला- 'किसी में भी नहीं ? मैं इन बातों से बाहर हूँ'
गोपी- 'तो आप महासिद्ध हैं ?' कृष्ण- 'नहीं, मैं महादयालु हूँ ?' गोपी- 'तो
हमको क्या- मारने का नाम ही क्या दिया है ?' कृष्ण- 'तो सिद्ध में ऐसा क्यों
कल्लो हो ? भूल जाओ न मुझे ?' गोपी- 'यह प्रेम भूलने नहीं देता ।' कृष्ण-
'अच्छ तो यह बताओ कि- यह तुम्हारा प्रेम मेरे स्लावे से घट तो नहीं गया ?'
गोपी- 'घबरे की तो बात ही क्या ? यह तो और बढ़ गया है ।' कृष्ण- 'जब पूँजी
बढ़ी, घस बढ़ तो-सुख आनन्द भी बढ़ ? यह सोचें हैं या लग ?' गोपी- 'लग
ही है ।' कृष्ण- 'तो मैंने तुम्हारे प्रेम की पूँजी को बढ़ाकर तुम्हारा प्रमाण किया
है या अपकार ? गोपियों तिरस्कार हो गयी । तब श्रीकृष्ण बोले- 'गोपियों ! मैं
कृतघ्नी या गुरुदोषी नहीं हूँ, परमस्नेही और सुख हूँ । मैं कलौर कर नहीं,
अपितु जल कोशल हूँ । मैंने, तुम्हारे प्रीति के कारण एवं कथाई को पकड़कर
उसे बहुत पकड़स बना दिया है ।' गोपी 'तब लोकवेद की दुर्भेद कृष्ण को
छिन्न-भिन्न कर तुम्हारे रासीप आई हैं- हमारी प्रीति में ऐसी क्या कथाई की
कि जिसे पकड़ने के लिए हमें इतना ताप सहना पड़ा ?' कृष्ण- 'गोपियों ! आप
की कथाई कथाई को आप नहीं जान सकती, माली ही जान सकते हैं, जिनको

[illegible]

यह है विवागुरु श्रीकृष्ण की शिक्षा प्रणाली। यह है कलसागर की कलश का स्वरूप! स्वयं भगवान् अर्जुन को प्रति कहते हैं- 'विश्व पर मैं प्रभुत्व करता हूँ, उसकी ध्वज-सम्पत्ति का हस्त उसकी मनु-बाबली में विभक्त, तब वैश्विक सूर्य-साधनों में हस्त करके उसका जीवन दुःखमय बना देता हूँ।' (इतनी मार पर भी यदि वह सुरु से प्यार नहीं छोड़ता, तब मैं प्रलय होकर अपना देण्डलस पद उसे प्रदान करता हूँ।)

कल्याणव्यवस्थापनसमितिच्या वतीने या कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात आले आहे.

-: श्री राधाकृष्ण दर्शन प्रार्थना मंत्र :-

॥ ज्ञः शिवोऽयं सत्यं ब्रह्मणो जगत्पतिः ॥
 सर्वोपकारदायकः सदाकृष्णः शुभः ॥
 इति सत्यसुखादयः सत्यं प्रपन्नं शिवम् ॥

वाञ्छित फल प्राप्तोति विद्वत्प्राज्ञमप्यहम्।

भक्ति शार्दा अवेष्टलोकः नित्यहर्षिणः कान्तकः।

:- अनन्तर श्रीराधाकृष्ण दर्शन प्रार्थना मन्त्र :-

से औरही विधायी आगच्छे नकलकर हो आप ब्रह्मजी को पर देने वाली है। आप देनी चाहें, जहाँ की लम्बी दायदूरी करके जाने लगेह। ईश्वरकृपा रहस्य है। हम सब का पाठ करके सब बार अध्यायी को प्रभाव करे और प्रभावक है विचलन करे। जहाँ बाधित फल को प्राप्त कर के मुक्ति आनी होकर विचलन है। और प्रभाव होता है।

(continued from page 10)

● ● ●

श्री श्रीराधिकादेवताः

श्रीश्रीराधिकासहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीश्रीराधिकृत्यै नमः

श्रीपार्थस्युवाच

देवदेव जगन्नाथ भक्तानुग्रहकारक ।
 यद्यस्ति मयि कारुण्यं यद्यस्ति मयि ते दया
 यद्यत् त्वया निगदितं तत्सर्वं नै श्रुतं प्रभो ।
 गुह्याद् गुह्यतरं यत्तु यत्ते मज्जसि काशते ।
 त्वया न जदितं यत्तु यत्नै करौ कदापि न
 तस्मात् कवय देवेश सहस्रं नाम वीतमनम् ।
 श्रीराधाया महादेव्या गोप्या भक्तिप्रसाधनम् ।
 ब्रह्माण्डकर्त्री हर्त्री सा कव्य गोपीतदनाजिता ।

શ્રીમહાદેવ ઉવાચ

शृणु देवि विचित्रायां कथां पापहत्यां शुभाङ्ग ।
वासि जन्मानि कर्माणि तस्या ब्रूय नन्देभ्यारि ॥

यदा हरिस्वरिजानि कुल्लो कामगौरजत् ।
तदा विद्यते रूपाणि हरिसानिध्यराधिनी ॥
तरसा गोपीत्वनावस्य कारणं गदितं पुरा ।
इदानीं शृणु देवेशि नाम्नां चैव सहस्रकम् ॥
यन्मया कथितं नैव तन्नेष्ट्यापि यदाघ्न ।
तव स्नेहात्प्रवक्ष्यामिभक्त्याधार्य मुमुक्षुभिः ॥
सम प्राणसना विद्या भाष्यते मे त्वहर्निशम् ।
शृणुष्व गिरिजे नित्यं वदस्व च यथागति ॥
यस्याःप्रसादात् कृष्णस्तुगोलोकेशः परः प्रभुः ।
अस्या नामसहस्रस्य ऋषिर्नास्ति एव च ।
देवी राधा परा प्रोक्ता चतुर्वर्णप्रसाधिनी ॥

अथ सहस्रनामस्तोत्रम्

श्रीराधा राधिका कृष्णवल्लभा कृष्णसेवुता ।
वृन्दावनेश्वरी कृष्णप्रिया मदनमोहनी ॥
श्रीमती कृष्णकान्ता च कृष्णानन्दप्रदायिनी ।
यशस्विनी यशोगन्दा यशोदानन्दवल्लभा ॥
दानोदरप्रिया गोपी गोपानन्दकरी तथा ।
कृष्णानुवाशिनी हृद्या हरिकान्ता हरिप्रिया ॥
प्रधानगोपिका गोपकान्ता त्रैलोक्यसुन्दरी ।
वृन्दावनविहारिणी पिकारितनुस्वाम्बुजा ॥
गोकुलानन्दकर्त्री च गोकुलानन्ददायिनी ।
गतिप्रदा गतिजन्या गमनगमनप्रिया ॥
विष्णुप्रिया विष्णुकान्ता विष्णोरङ्गीवासिनी ।
यशोदानन्दपत्नी च यशोदानन्दभेदिनी ॥
कामारिक्कान्ता कामेशी कान्तालारविन्दहा ।
जयप्रदा जया जीवा जीवानन्दप्रदायिनी ॥
नन्दनन्दनपत्नी च वृषभानुसुता शिवा ।
समाध्यासा जगदध्यासा जयं गतिरनुत्तमा ॥

कञ्जलाभा हेमलाभा कञ्जलाभदधारिणी ।
 अशोकाशोकरोहिताविशोका शोकनाशिनी ॥
 मायत्री वेदमाता च वेदातीता विदुत्तमा ।
 नीतिशास्त्रप्रिया नीतिर्नीतिनीतिरभीष्टदा ॥
 वेदप्रिया वेदगर्भा वेदमार्गप्रवर्द्धिनी ।
 वेदसन्ध्या वेदपरा विचित्रकनकोज्ज्वला ॥
 तथोज्ज्वलप्रदायित्या तदैवोज्ज्वलगात्रिका ।
 नन्दप्रियानन्दसुताराध्याऽऽनन्दप्रदा शुभा ॥
 शुभाङ्गी धिमलाङ्गी च विलासिन्यपराजिता ।
 जवनी जल्लशून्या च जल्लमृत्युजरापहा ॥
 गतिर्गीतिमतां धात्री धाम्यानन्दप्रदायिनी ।
 जगन्नाथप्रिया शैलवासिनी हेमसुन्दरी ।
 किशोरी कमला पद्म पद्माहस्ता पद्मोददा ।
 पद्मदिवली पद्मोदाङ्गी पवित्रा सर्वमङ्गला ॥
 महाजीवप्रदा कृष्णकान्ता कमलसुन्दरी ।
 विचित्रवासिनी चित्रवासिनी चित्ररूपिणी ॥
 विर्गुणा सुकुलीना च निष्कुलीना विराकुला ।
 गोकुलान्तरगेहा च योगानन्दकरी तथा ॥
 वेणुवादा देवुरतिर्वेणुवाद्यपरायणा ।
 गोपालस्य प्रिया सौम्यरूपासौम्यकुलोद्भवा ॥
 मोहामोहा विमोहा च अतिलिप्ता गतिप्रदा ।
 गीर्वाणवन्द्या गीर्वाणा गीर्वाणगणसेविता ॥
 ललिता च विशोका च विशाखा चित्रमालिनी ।
 जितेन्द्रिया शुद्धसत्त्वा कुलीना कुलदीपिका ॥
 दीपप्रिया दीपदात्री दिमला विमलोदका ।
 कान्तारवासिनी कृष्णा कृष्णचन्द्रप्रिया गतिः ॥
 अनुत्तरा दुःखहन्त्री दुःखकर्त्री कुलोद्भवा ।
 अतिर्लक्ष्मीर्धृतिर्लज्जा कानिका ।

पुष्टिः स्मृतिः क्षमा ॥

दीरोदशादिनी देवी देवारिगुलमर्दिनी ।
 वैष्णवी च महालक्ष्मीः कुलपूज्या कुलप्रिया ।
 सहस्री सर्वदेत्यानां सावित्री वेदशासिनी ।
 वेदातीता विरालम्बा विरालम्बगणप्रिया ॥
 विरालम्बजनेः पूज्या विरालोका विराश्रया ।
 एकाग्रैः सर्वमा सेव्या ब्रह्मपत्नी सत्यवती ॥
 रासप्रिया रासगम्या रासाधिष्ठतृदेवता ।
 रसिका रसिकानन्दा स्वयं रासेश्वरी पय ॥
 रासगण्डलमावस्था रासगण्डलसोभिता ।
 रासगण्डलसेव्या च रासकीडाननोहरा ॥
 पुण्डरीकाक्षजिलया पुण्डरीकाक्षजोहिनी ।
 पुण्डरीकाक्षरोव्या च पुण्डरीकाक्षानलभा ॥
 सर्वजीवेश्वरी सर्वजीववन्दा परात्परा ।
 प्रकृतिः शम्भुकान्ता च सदाशिवमनोहरा ॥

क्षुत् पिपासा दया बिदा

शान्तिः शान्तिः क्षमाकुला ।

वधूत्पदा गोपपत्नी भारती सिन्धुयोगिनी ॥
 सत्यरूपा नित्यरूपा जित्वाग्ने विजयलोहिनी ।
 त्याज्यदात्री तथा धात्री महालक्ष्मीः स्वयंप्रभा ॥

सिन्धुकन्याऽऽस्थानदात्री

ह्यात्मवासिनी तथा ।

बुद्धिः स्थितिः स्थानरूपा सर्वकारणकारणा ॥
 भक्तप्रिया भक्तगम्या भक्तगण्डप्रदायिनी ।
 भक्तकल्पद्रुमातीता तद्यतीतगुणा तथा ।
 मनोऽधिष्ठतृदेवी च कृष्णप्रेमपरवन्ता ।
 निरामया सौम्यदात्री तथा जगज्जोहिनी ॥
 एकाग्रराशिवा क्षमा दुर्गा दुर्गातिज्जिह्वी ।



इन्द्यरी सखंबन्धा च गोपनीया शुभङ्करी ॥
 पालिनी सर्वभूतानां तथा कामादहारिणी ।
 सद्योमुक्तिप्रदा देवी वेदसार परात्परा ॥
 हिमालयासुता सर्व पार्वती गिरिजा सती ।
 दक्षकन्या देवमातामन्दलज्जा हरेस्तनूः ॥
 वृन्दारण्यप्रिया वृन्दा वृन्दावनविलासिनी ।
 विलारिणी वैष्णवी च ब्रह्मलोकप्रतिष्ठिता ॥
 लक्ष्मिणी रेवती सत्यभामा जाम्बवती तथा ।
 सुलक्ष्मणा मित्रविन्दा कालिन्दी लङ्कुकन्यका ।
 परिपूर्णा पूर्णतरा तथा हैमवती गतिः ।
 अपूर्वा ब्रह्मरूपा च ब्रह्माण्डपरिपालिनी ॥
 ब्रह्माण्डभास्वन्मध्यस्था ब्रह्माण्डभाण्डरूपिणी ।
 अण्डरूपाण्डमध्यस्था तथाण्डपरिपालिनी ॥
 अण्डबाह्याण्डसंहर्त्री शिवब्रह्महरिप्रिया ।
 महाविष्णुप्रिया कल्पवृक्षरूपा गिरन्तरा ॥
 साठभूता रिवरा गौरी गौरीश्री शशिशेखरा ।
 स्येतत्तपकवर्णाभा शशिखेटिसमप्रभा ॥
 मालतीमाल्यभूषाब्जामालतीमाल्यधारिणी ।
 कृष्णस्तुताकृष्णकान्तावृन्दावनविलासिनी ॥
 तुलस्यधिष्ठितदेवी संसारार्णधारदा ।
 सारदाऽऽहारदाम्भोदा यशोदा गोधनन्दिनी ॥
 अतीतजनका गौरी पराबुद्धकारिणी ।
 करुणार्णवसम्पूर्णा करुणार्णवधारिणी ॥
 नागवी नागवसनोहारिणी श्यामवल्लभा ।
 अन्धकारभयघ्स्ता माल्या महलप्रदा ॥
 श्रीगर्भा श्री प्रदा श्रीला श्रीनिवासप्युतप्रभा ।
 श्रीरूपा श्रीहरा श्रीदा श्रीकामा श्रीस्वरूपिणी ॥
 श्रीदामासन्ददात्री च श्रीदामेश्वरवल्लभा ।

श्रीवितम्बा श्रीलणेशा श्रीस्वरूपारिक्ता कुति ।
 श्रीकियारूपिणी श्रीला श्रीकृष्णभजनान्विता ।
 श्रीराधा श्रीमती श्रेष्ठ श्रेष्ठरूपा धृतिप्रिया ।।
 लोभेशी योगमाता च योगार्तीता सुमप्रिया ।
 योगप्रिया योगनम्या योगिनीगणवन्दिता ।।
 जपाकुसुमसंकाशा दाहिमीकुसुमोपमा ।
 लीलाम्बरधरा धीरा वैद्यरूपधराभूतिः ।।
 रत्नसिंहासनस्था च रत्नकुण्डलभूषिता ।
 रत्नालंकारसंयुक्ता रत्नमालाधरा परा ।।
 रत्नेन्द्रसारहाराद्या रत्नमालाविभूषिता ।
 इन्द्रनीलमणिव्यस्तपादपद्मशुभा शुचिः ।।
 कार्तिकी पौर्णमासी च अमावस्या भयापहा ।
 गोविन्दराजगृहिणी गोविन्दगणपूजिता ।।
 वैकुण्ठनाथगृहिणी वैकुण्ठपरमालया ।
 वैकुण्ठदेवदेवाद्या तथा वैकुण्ठसुन्दरी ।।
 मदालता देववती सीता साखी पतिव्रता ।
 अन्नपूर्णा सदानन्दरूपा कैवल्यसुन्दरी ।।
 कैवल्यद्वारिणी श्रेष्ठ गोपीनाथमनोहरा ।
 गोपीताम्रेश्वरी चण्डी नायिकानन्दनान्विता ।।
 नायिका नायकप्रीता नायकानन्दरूपिणी ।
 शेषा शेषवती शेषरूपिणी जगदम्बिका ।।
 गोपालपालिकामायाजायाऽऽनन्दप्रदातया ।
 कुमारी यौवनानन्दा युवती गोपसुन्दरी ।।
 गोपमाता जानकी च जनकानन्दकारिणी ।
 कैलासवासिनी रम्भा वैराग्यकुलदीपिका ।।
 कमलाकान्तगृहिणी कमला कमलालया ।
 त्रैलोक्यमाताजगतामपिष्ठत्रीप्रियाम्बिका ।।
 हरकान्ता हररता हरानन्दप्रदायिनी ।

हरपती हरप्रीता हरलोचनातपरा ॥
 हरेश्वरी रामरता रामा रामेश्वरी रमा ।
 श्यामला चित्रलेखा च तथा भुवममोहिनी ॥
 सुगोपी गोपवनिता गोपराज्यप्रदा शुभा ।
 अक्षरपूर्णा माहेयी मत्स्याराजसुता सती ॥
 वगैमारी नारसिंह च वाराही नवदुर्गिका ।
 वज्रलावण्यलामोदा नारी भुवमसुन्दरी ॥
 दक्षयज्ञहरा दासी दक्षकन्या सुलोचना ।
 रतिरुपा रतिप्रीता रतिश्रेष्ठा रतिप्रदा ।
 रतितक्षणनेहस्या विरजा भुवमेश्वरी ।
 शङ्खास्पदा हरेजाया जामातृ कुलवन्दिता ॥
 वकुला वकुलामोदागारिणी यमुनाजया ।
 विजया जयपत्नी च यमलार्जुनभञ्जिनी ॥
 वकेश्वरी वक्तरुपा वक्त्रीक्षणवीक्षिता ।
 अपराजिता जगन्नाथा जगन्नाथेश्वरी यतिः ॥
 स्नेहरी स्नेहरसुता स्नेहरत्नप्रदायिनी ।
 विष्णुवर्णःस्थलस्या च विष्णुभावनतपरा ॥
 चन्द्रकोटिसुगात्री च चन्द्रानजममोहरा ।
 सेवा सेव्याशिवाक्षेमा तथा क्षेमकरी वधूः ॥
 यादवेन्द्रप्रभूः शैव्या शिवभक्त शिवान्विता ।
 केवला निष्कला सूक्ष्मा महाभीमाभयप्रदा ॥
 जैमूतरुपा जैमूती जितामित्रप्रमोदिनी ।
 गोपालवनिता नन्दा कुलजेन्द्रनिवासिनी ॥
 जयन्ती यमुनाङ्गी च यमुनालोषकारिणी ।
 कलिकल्मषभञ्ज च कलिकल्मषनाशिनी ॥
 कलिकल्मषरुपा च नित्यानन्दकरी कृपा ।
 कृपावती कुलवती कैलासाचलवासिनी ॥
 वामदेवी वामभग्ना गोविन्दप्रियकारिणी ।

नरेन्द्रकन्या योगेशी योगिनी योगरूपिणी ॥
 योगरिद्धा सिद्धरूपा सिद्धक्षेत्रनिवासिनी ।
 क्षेत्राधिष्ठातृरूपा च क्षेत्रातीता कुलप्रदा ॥
 केशवानन्ददात्री च केशवानन्ददायिनी ।
 केशवा केशवप्रीता केशवी केशवप्रिया ॥
 रासकीड़ाकरी रासवासिनी राससुन्दरी ।
 गोकुलाब्धितदेहा च गोकुलत्वप्रदायिनी ॥
 लवङ्गनाभनी वारङ्गी वारङ्गकुलमण्डना ।
 एलालकाकर्पूरमुखवासमुखान्विता ॥
 मुख्या मुख्यप्रदामुख्यरूपा मुख्यानेवासिनी ।
 नारायणी कृपातीता करुणामयकारिणी ॥
 कारुण्या करुणा कर्णा गोकर्णा नागकर्णिका ।
 सर्पिणी कौलिनी क्षेत्रवासिनी जगदन्वया ॥
 जटिला कुटिला नीला नीलाम्बरधरा शुभा ।
 नीलाम्बरविधात्री च नीलकण्ठीप्रिया तथा ॥
 मणिनीभाशिनीभोग्या कृष्णभोग्या भगेश्वरी ।
 बलेश्वरी बलाराध्या कान्ता कान्तनितम्बिनी ॥
 नितम्बिनी रूपवती युवती कृष्णपीवरी ।
 विभावरी चैत्रवती संकष्टा कुटिलालका ॥
 नारायणप्रिया शैला सूक्क्ष्णीपरिमोहता ।
 दक्षपातमोहिता प्रातराशिनी ववनीतिका ॥
 नवीना नवनारी च वारङ्गफलशोभिता ।
 हेमी हेममुखी चन्द्रमुखी शशिशुशोभना ॥
 अर्द्धचन्द्रधरा चन्द्ररत्नभा रोहिणी तमिः ।
 तिमिरिणिकुलामोदमत्सररूपाङ्गरिणी ॥
 कारिणी सर्वभूतानां कार्यातीता किशोरिणी ।
 किशोरयल्लभा केशकारिका कामकारिका ॥
 कामेश्वरी कामकला कालिन्दी कूलदीपिका ।



कलिनन्दनयतीत्यारिणी	तीरजेहिनी	॥
कादम्बरीपालपरा	कुसुमामोदधारिणी	।
कुमुदा कुमुदानन्दा कृष्णेशी कामवल्लभा		॥
नर्काली वैजयन्ती च निम्बदाडिम्बरुपिणी		।
विल्ववृक्षप्रिया कृष्णाम्बरा विल्वोपमस्तनी		॥
विल्वात्मिका विल्ववर्षुर्बिल्ववृक्षनिवासिनी		।
तुलसीतोषित्तन तैलिलानन्दपरितोषिका		।
गजमुक्ता महामुक्ता महामुक्तिफलप्रदा		।
अनङ्गमोहिनी शक्तिरूपा शक्तिस्वरूपिणी		॥
पद्मशक्तिस्वरूपा च शैशवानन्दकारिणी		।
गजेन्द्रगात्रिणी श्यामलतानद्वालता तथा		॥
योषिच्छक्तिस्वरूपा च योषिदानन्दकारिणी		।
प्रेमप्रिया प्रेमरूपा प्रेमानन्दतरङ्गिणी		॥
प्रेमहारा प्रेमदात्री प्रेमशक्तिमयी तथा		।
कृष्णप्रेमवती धन्या कृष्णप्रेमतरङ्गिणी		॥
प्रेमभक्तिप्रदा प्रेमा प्रेमानन्दतरङ्गिणी		।
प्रेमक्रीडापरीताज्ञी प्रेमभक्तितरङ्गिणी		॥
प्रेमार्थदायिनी सर्वस्येता नित्यरङ्गिणी		।
हावभावविता तैद्रा रुद्रानन्दप्रकाशिनी		॥
कपिला शृङ्गला केशपाशसम्बन्धिनी घटी		।
कुटीरवारिणी धूसा धूसकेशा जलोदरी		॥
ब्रह्माण्डावरा ब्रह्मस्वरूपिणी भवभाविनी		।
संसारनाशिनी शैवा शैवलानन्ददायिनी		॥
शिशिरा हेमरागाक्ष्य मेघरूपातिसुन्दरी		।
मनोरमा वेलवती देगाक्ष्या देवदाहिनी		॥
दयाविता दयाधारा दयारूपा सुसेविनी		।
किशोरसङ्गसंसारिणी गौरचन्द्रानना कला		॥
कलाधिनाथवदना कलानाथविरोहिणी		।

विरागकुशला हेमपिङ्गला हेममण्डला ॥
 भाण्डीरतालवनजा कैवर्ती पीवरी शुकी ।
 शुक्लदेवगुणातीता शुक्लदेवप्रिया सखी ॥
 विकलोत्पत्तिर्षिणी कोषा कौशेयाम्बरधारिणी ।
 कौषावरी कोषरूपा जगदुत्पत्तिहारिणी ॥
 सृष्टिस्थितिकरी संहारिणी संहारकारिणी ।
 केशहैवलपात्री च चन्द्रगात्रा सुखोमला ॥
 पद्माङ्गरागसंरगा विन्ध्याद्रिपरियासिनी ।
 पित्त्यालया श्यामसखी सखीसंसाररागिणी ।
 भूता भाविष्या भव्या च भव्यगात्रा भवतिगा ।
 भवनाशान्तकारिण्याकाशरूपा सुवेशिनी ॥
 रतिरङ्गपरिव्यागा रतिवेगा रतिप्रदा ।
 तेजस्विनी तेजोरूपा तैलवत्यपयदा शुभा ॥
 भक्तिहेतुर्गुक्तिहेतुलीहिनी लज्जामाया ।
 विशालनेत्रा वैशाली विशालकुलसम्भवा ॥
 विशालगृहवासा च विशालवदरीरति ।
 भक्त्यतीता भक्तिगतिभक्तिदा शिवभक्तिदा ॥
 शिवभक्तिस्वरूपा च शिवास्त्राविहारिणी ।
 शिरीषकुसुमामोदा शिरीषकुसुमोज्ज्वला ॥
 शिरीषमृद्वी शैरीषी शिरीषकुसुमाकृतिः ।
 वामाङ्गहारिणी विष्णोः शिवभक्तिसुखान्विता ॥
 विजिता विजितामोदा जणना जणतोषिता ।
 हवास्या हेरम्बसुता जणनाता सुखेश्वरी ॥
 दुःखहन्त्री दुःखहरा सेवितेष्टितत्त्वदा ।
 सर्वज्ञत्वविधात्री च कुलदेवनिवासिनी ॥
 लवणा पाण्डवसखी सखीमध्यनिवासिनी ।
 ग्राम्यगीता गया गम्या गमनातीतनिर्भरा ॥
 सर्वाङ्गसुन्दरी गङ्गा गङ्गाजलमयी तथा ।



गङ्गेरिता पृतमात्रा पवित्रकुलदीपिका ॥
 पवित्रगुणशीलाद्या पवित्रानन्ददायिनी ।
 पवित्रगुणसीमाद्या पवित्रकुलदीपिनी ।
 कल्पमाना कंसहृत् विज्याचलनिवासिनी ।
 गोवर्द्धनेश्वरी गोवर्द्धनहास्या हृद्यकृतिः ॥
 भीमायतारा भीमेशी गजवेशी ह्या गजी ।
 हरिणी हरिणी हार्यारिणी कलकाकृतिः ॥
 विद्युत्प्रभा विप्रमता गोपमता गणेश्वरी ।
 गणेश्वरी गणेशी च गवीशी गतिदासिनी ॥
 गतिज्ञा गीतकुशला दनुजेन्द्रनिवारिणी ।
 निर्वाणघात्री नैर्वाणी हेतूयुक्ता गयोत्तरा ॥
 पर्वताधिनिवासा च निवासकुशला तथा ।
 संन्यासवर्माकुशला संन्यासेशी शरच्चन्द्रा ॥
 शरच्चन्द्रमुखी श्यामहारा दोत्रनिवासिनी ।
 वसन्तरागसंरागा वसन्तवसनाकृतिः ॥
 चतुर्भुजा षड्भुजा च द्विभुजा नीरविकला ।
 सहस्रास्या विहास्या च मुद्रास्या मुद्रदायिनी ॥
 प्राणप्रिया प्राणरूपा प्राणरूपिण्यपाकृता ।
 कृष्णप्रीता कृष्णरता कृष्णतोषणतत्परा ॥
 कृष्णप्रेमरता कृष्णभक्ता भक्तफलप्रदा ।
 कृष्णप्रेमा प्रेमभक्ता हरिभक्तिप्रदायिनी ॥
 चैतन्यरूपा चैतन्यप्रिया चैतन्यरूपिणी ।
 उग्ररूपा शिवकोडा कृष्णकोडा जलोदरी ॥
 महोदरी महादुर्गाजन्तारसुस्थवासिनी ।
 चन्द्रावली चन्द्रकेशी चन्द्रप्रेमतटीणी ॥
 समुद्रमयलोद्भूता समुद्रजलवासिनी ।
 समुद्रामृतरूपा च समुद्रजलवासिका ॥
 केशवशरता निद्रा क्षुधा प्रेमतरङ्गिका ।

दूषादिलश्यामतनुर्दूषादिलतनुषुखविः	॥
नागरी नागरारागा नागरानन्दकारिणी	॥
नागरालिङ्गपरा नागरभूषणमङ्गला	॥
उच्छ्वनीया हैमवतीप्रिया कृष्णतरङ्गदा	॥
प्रेमालिङ्गनासिद्धातीसिद्धसाध्याविलासिका	॥
मङ्गलामोदजज्जी मेरालामोदधारिणी	॥
रत्नमञ्जीरभूषाङ्गी रत्नभूषणभूषणा	॥
जम्बालमालिका कृष्णप्राणा प्राणविमोघला	॥
सत्यप्रदा सत्यवती सेवकानन्ददायिका	॥
जगद्योनिर्जगद्बीजा विचित्रनन्दिभूषणा	॥
राधारमणकान्ता च राध्या राघनक्षत्रिणी	॥
कैलासवासिनी कृष्णप्राणसर्वस्वदायिनी	॥
कृष्णादतारनिरता कृष्णभक्तफलार्थिनी	॥
याचकायाचकानन्दकारिणीयाचकोज्ज्वला	॥
हरिभूषणभूषाद्याऽऽनन्दयुक्ताऽऽर्द्रपादगा	॥
है-है तालपरा ये-ये-शब्दशक्तिप्रकाशिनी	॥
हे-हे शब्दरवल्पा च ही-ही-वाक्यविशारदा	॥
जगदानन्दकर्त्री च सान्द्रानन्दविशारदा	॥
पण्डिता पण्डितगुणा पण्डितानन्दधारिणी	॥
परिपालनकर्त्री च तदा स्थितिविभोदिनी	॥
तथा संहारशब्दाद्या विद्वज्जनमनोहरा	॥
विदुषां प्रीतिलबनी विद्वत्प्रेमविवर्द्धिनी	॥
नादेशी नादरूपा च नादविन्दुविधारिणी	॥
शून्यस्थानस्थिता शून्यरूपपादप्रवासिनी	॥
कार्तिकव्रतकर्त्री च वसनाहारिणी तदा	॥
जलाशया जलतला जिलातलनिवाहनी	॥
क्षुद्रकीटाशंखगां सःशुद्धोषविनाशिनी	॥

कोटिकंदपंखावण्या कोटिकंदपंखुन्दरी ।
 कंदपंकोटिजलनी कामबीजप्रदायिनी ॥
 कामशास्त्रविनोदा व कामशास्त्रप्रकाशिनी ।
 कामप्रवासिका कामिन्ध्यागिनाद्याटिनिदिदा ॥
 यामिनी यामिनीनायवदना यामिनीन्धरी ।
 यामयोगहरा भुक्तिमुक्तिदात्री हिरण्यदा ॥
 कपालमालिनी देवी घामलपिण्यपूर्वदा ।
 कृपान्विता गुणागौण्या गुणातीतफलप्रदा ॥
 कूष्माण्डभूतवेतालनाशिनी शरदाश्रिता ।
 शीतला शबला हेला लीला लावण्यमङ्गला ।
 विद्यार्थिनी विद्यमाता विद्या विद्यास्वरूपिणी ।
 आब्दीक्षिकीशास्त्ररूपाशास्त्रसिद्धान्तकारिणी ॥
 वामेव्दा वागमता व कीडाकौतुकरूपिणी ।
 हरिभाववशीला व हरितोषणतत्परा ॥
 हरिप्राणा हरप्राणा शिवप्राणा शिवान्विता ।
 वरकामवसंहर्त्री वरकामवनाशिनी ॥
 नरेश्वरी नरातीता नरसेव्या नराङ्गना ।
 यशोदानन्दनप्राणवल्लभा हरिवल्लभा ॥
 यशोदानन्दनारण्या यशोदानन्दनेश्वरी ।
 यशोदानन्दनाकीडा यशोदाकोट्यासिनी ॥
 यशोदानन्दनप्राणा यशोदानन्दनार्यदा ।
 यत्सला कोरला कला कल्पगार्ग्यरूपिणी ॥
 स्वर्गलक्ष्मीभूमिलक्ष्मीर्द्रोपदी पाण्डवप्रिया ।
 तयार्जुनसखी गौरी भैमी भोगकुलोद्भवा ॥
 भुवनामोहना क्षीना पानातप्ततरा तथा ।
 पानार्थिनी पानपात्रा पानपानन्ददायिनी ॥
 दुग्धमन्थनकर्माद्या दधिमन्थनतत्परा ।
 दधिभाण्डार्थिनीकृष्णकोटिनी कन्दनादना ॥

धृतलिप्ता तन्कुक्ता चगुनापारकौतुका ।
 विचित्रकथका कृष्णहास्यभाषणतत्परा ।
 गोपाङ्गनावेष्टिता च कृष्णसङ्गर्षिणी तथा ।
 रासतक्ता रासरतितरुवातक्त्यासुता ॥
 हरिदा हारिता हरिष्यानन्दार्पितप्रेतजा ।
 निश्चैतव्या च निश्चेता तथा दारुहरिद्रिका ॥
 सुबलस्य स्यता कृष्णभार्या भाषातिवेगिनी ।
 श्रीदामस्य सखी दाम दामिनी दामधारिणी ॥
 कैलासिनी केशिनी च हरिदम्बरधारिणी ।
 हरिसाविध्यदात्री च हरिकौतुकमङ्गला ॥
 हरिप्रदा हरिहारा चगुनाजलवासिनी ।
 जैत्रप्रदा जितार्थी च पतुरा चातुरी तमी ॥
 तनिसाऽऽतपस्व्या च रौद्ररुपा यशोऽर्चिनी ।
 कृष्णार्चिनीकृष्णकलाकृष्णानन्दविधायिनी ॥
 कृष्णार्चवासना कृष्णरामिणी भवभाविनी ।
 कृष्णार्चरहिता भक्ता भक्तभक्तिशुभप्रदा ॥
 श्रीकृष्णरहिता दीना तथा विरहिणी हरेः ।
 मथुरा मथुराराजगेहभावनभावना ॥
 श्रीकृष्णभावना मोदा लथोन्मादविशायिनी ।
 कृष्णार्चव्याकुला कृष्णसारवर्मधरा शुभा ।
 अलकेश्वरपूज्या च फुवरेश्वरवल्लभा ।
 धनधान्यविधात्री च जाया काया हया हयी ॥
 प्रणवा प्रणवेशी च प्रणवार्चस्वरूपिणी ।
 ब्रह्मविष्णुशिवार्धाहरिणी शैवशिंशपा ॥
 सखसीनाशिनी भूतप्रेतप्राणविनाशिनी ।
 सकलेष्टितदात्री च सखी साध्वी अलन्धती ॥
 पतिव्रता पतिप्राणा पतिवाक्यविजोदिनी ।
 अशेषासाधिनी कल्पदाशिनी कल्परूपिणी ॥

देखते हैं और अपने को आत्मन दीप्त और दूसरे को भी अनुभव करते हैं, क्योंकि विद्युत् देसका वही सम्भाव है।

रस-साहित्य में अधिकांश रचनाएँ ऐसी ही उपलब्ध होती हैं, जिनमें श्रीकृष्ण प्रसाद के रूप में और श्रीराधा प्रेमिका के रूप में चित्रित की जाती है। इन सोलह गीतों में आठ पद ऐसे हैं, जिनमें श्रीकृष्ण श्रीराधा को अपनी प्रेमास्पदा मानकर उन्हें प्रेम की साभिनी और अपने को प्रेम का कराल स्वीकार करते हैं और उनके उत्तर - राधा में आठ पद श्रीराधा के द्वारा कहे गये हैं, जिनमें श्रीराधा अपने को अत्यन्त दीप्त और श्रीकृष्ण को प्रेम के धनी रूप में स्वीकार करती हैं। इस प्रकार इन सोलह पदों में प्रतिफल दीप्त और प्रेमास्पद की महत्ता का उत्तरोत्तर विकास दृष्टिगत होता है।

पाठक विशेष महत्वाद् में आकर इन पदों के भावों को ग्रहण करने का प्रयास करेंगे तो उन्हें पता लगेगा कि श्रीकृष्ण के प्रेम का सात्विक किन्ताव प्रतिश्रुत, सर्वोत्कर्ष तथा दिव्य है। इसी प्रेम को आदर्श मानकर प्रेमास्पदों के साधक अपना मार्ग विरच्य करें और श्रीराधा-साधक के चरणों में प्रेम प्राप्त करें, इसी हेतु इन पदों का प्रकाशन किया गया है।

श्रीराधा

‘श्रीराधा-साधक-रस-रूपा’ के षोडशगीतों के अध्ययन, गणन एवं नियमों के प्रति परम विद्युत्, पूर्ण स्वात्मन, समवेक्षण तथा निःस्वार्थ भगवत्प्रेम के अनुभूत भाव, विद्वान् तथा सभी आधर्मों के सर-सारी बहुत लोचि दिखाने रहे हैं। विद्वत् के अनेकों विद्वानों के इन गीतों के भावों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। भावसम्पन्न हृदय से इन गीतों का प्रतिदिन नियमित पाठ करने से अनेकों प्रेमी साधकों को विशेष लाभ हुआ है। अनेक स्थानों पर अनुभूत भक्त इन गीतों का स्मरण में ३ होते ही ५५ तक उच्च करते हैं तथा स्वल्प-स्वल्प पर लक्ष्य करके अपनी सुविधा से इन गीतों का नियमित पाठ करते हैं। सतत की सुविधा से पाठ करने वाले व्यक्तियों से तीन प्रवृत्तियाँ अज्ज्ञा लक्ष्यी हैं-

- (१) आरम्भ की उदया एवं उपसंहार की पुष्पिका के सहित प्रतिदिन पूरे १६ गीतों का एक का एक से अधिक पाठ।
- (२) आरम्भ की उदया एवं उपसंहार की पुष्पिकासहित श्रीकृष्ण के प्रेमीद्वारा का एक गीत और श्रीराधा के प्रेमीद्वारा का एक गीत प्रतिदिन पाठ करना। इस प्रकार ८ दिनों में सोलह गीतों का एक पूरा पाठ।
- (३) प्रतिदिन एक गीत का पाठ करना। इस प्रकार सतत और पुष्पिकासहित सोलह गीतों का १६ दिनों में पूरा एक पाठ।

जिनकी स्ति हो, वे इनमें किसी प्रवृत्ति के अनुसार पाठ कर सकते हैं।

॥ श्री राधा ॥

पुज्यश्री नित्यलीलालीन श्री भाईजी श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दार के सदुपदेश

इस उपदेशों से चिकीर्ण होने वाली किरणें मानव जीवन को मानस को दुर्लभ प्रकाश पुंज से आलोकित करती रहेगी इसका अनन्त प्रकाश साधक जीवन का सम्बल होगा :-

दिखाने करो भगवान सदा ही तुम्हारे अत्यन्त समीप हैं, तुम्हारी प्रत्येक परिस्थिति को जानते हैं, तुम्हारी हर बात सुनते हैं, बस विश्वास पूर्वक पुकारने की देर है वह तुरन्त तुम्हारी पुकार सुनेंगे वरुण से छुड़ा देंगे ।

अपने हृदय को सदा पैनी लजर से देखते रहो याद रखो जहाँ मन है तुम वहीं हो। मन्दिर में रहो या वन में मन यदि कारखाने या बाजार में है तो तुम भी वहीं हो ।

श्री गंगाजी पापों को क्षय कर देती हैं। चन्द्रमा ताप को शमन करने में समर्थ है और कल्पवृक्ष दैन्य को नष्ट कर देता है

किन्तु सल मरुपुरुष हो पाय, लप और देखा हुन रागी को लप करने में रागव्य होते है।

संसार में भली-बुरी दोनों ही चीजें हैं। जो जिसका चाहक है उसे पत्ती मिलती है। तुम बुरी को छोड़कर भली के वास्तव बली, फिर देखो तुम्हें भली मिलेगी। हाट उसी लाल की लपना करती है जिसके खरीददार होते हैं।

कम दोलो, कम सुनो, कम देखो, कम मिलो-जुलो। यह सब उतना ही करो जितना अत्यन्त जरूरी है। एक पल भी बिना जरूरत इन कामों में मत लगाओ।

घर में अतिथि की ज्यों रहो, कुछ भी अपना मत समझो। रोका कराने का संकोच करो, हर-हर कर व्यवहार करो। सबका हित चाहो। किसी को दुःख न पहुँच जाये, इस बात का ख्याल रखो। ममता मत बढ़ाओ। अतिथि को घर से चले ही जाना है, इस बात को याद रखो।

पूछते हो, कैसे पुकारें ऐसे ही पुकारो जैसे अवलम्ब-आश्रित मातृपरायण बच्चा पूरे विश्वास से माँ को पुकारता है। पुकारता तो तुम जानते हो, परन्तु विश्वास नहीं करते, इसी से नहीं पुकार पाते। पूर्ण विश्वास से दोपदी ने पुकारा था, जगन्नाथ ने पुकारा था।

विश्वास कन्ठ-सरलता, कोमलता तथा भरोसे से हृदय को भर लो फिर पुकारो। तुम्हारी पुकार व्यर्थ नहीं जायेगी।

जो मनुष्य लोभ के दश होकर धर्म को छोड़ देता है और धन बटोरने में लग जाता है, वह जानो सोने के ढेर को छोड़कर मुट्ठी भर राख के लिये लपकता है।

अन्त रत्नय में धन कुछ भी काम नहीं आता। जीवन भर खड़े हुए धन पर दूसरे मालिक बल देखते हैं। अपने द्वारा किया हुआ धर्म ही एक ऐसा सहायक है जो मरने के बाद भी साथ जाता है।

यदि पापों का बोझ ज़ख्मों हो, मन तो बरह जे करवा चाहते हो और भगवान की कृपा चाहते हो तो बड़ा एवं भक्तिपूर्वक भगवान के दिव्य अंगलमय वस्त्रों का भजन करो ।

विचार करो, केवल भगवान का विश्वास करो। संसार का विश्वास करो तो बोझा खाओगे। भगवान-सा विश्वास प्राप्त जब तुम्हें सुलभ है, तो क्यों दर-दर मारे-मारे फिर रहे हो ?

विचार करो- भगवान तुम्हारे भारी से भारी दोषों को भी क्षमा कर देगे, यदि तुम उनके लिये पश्चात्ताप करोगे और अविध्य ने वैसी दोषों को करना छोड़ दोगे।

अधुष्य जन्म बहुत ही दुर्लभ है, जन्म मृत्यु के बहुत लम्बे मार्ग को तय करने पर फली भगवान की कृपा से ही प्राप्त होता है, इसे यदि नष्ट कर देना आत्महत्या से बढ़कर पाप है।

काद रखो ओजों में सुख या आनन्द नहीं है। सुख केवल भगवान में ही है और भगवान तुम्हारे (हमारे) अपने हैं। भगवान पर विश्वास रखो वे सदा तुम्हारे (हमारे) साथ हैं, वे स्वयं तुम्हारी (हमारी) सहायता करते हैं। इस दृढ़ विश्वास से विचर्य ही उनके कौशल कर का स्पर्श पाकर कृतार्थ हो (जाओगे) जावेंगे।

एक मात्र भगवत्कृपा की ही बात देखते हुए भगवान का भजन करो मन के दोष वंचना, विषयों में अरुणति आदि व निन्दे तो निराश मत होओ, भजन के बल से सब दोष अपने आप दूर हो जाएंगे।

दूरारे के दोषों का न प्रचार करो, न चर्चा करो और न उन्हें याद करो। तुम्हारा हरी में परम लाभ है। भगवान सर्वानुरागी हैं वे जिसके किस परिस्थिति में किस निराश से क्या क्या किया है, सब जानते हैं और वे ही उसके फल का विधान करते हैं।

काद रखो-अधुष्य जीवन की सच्ची सम्पत्ति भगवान की प्रेम को प्राप्त करने में ही है। भगवत्प्रेम की प्राप्ति किसी भी साधन से नहीं होती। यह तभी मिलता है जब भगवान स्वयं कृपा

करके देते हैं।

उपदेश करो अपने लिये, तभी तुम्हारा उपदेश सार्वक होगा। जो कुछ दूसरों से करवाना चाहते हो, उसे पहले स्वयं करो। नहीं तो तुम्हारा उपदेश माछक के अभिनय के सिवा और कुछ भी नहीं है।

किसी से डरो मत! डरो बुरे आचरण से, अपने हृदय की जन्दगी से और भगवान के प्रति होने वाले अविश्वास से। जिनके मन से भगवान का विश्वास उठ गया, यह निश्चय समझो कि उसकी आध्यात्मिक मृत्यु ही हो गयी।

सेवा करके भूल जाओ, कराके याद रखो, दुःख पाकर भूल जाओ, देकर याद रखो, मला करके भूल जाओ, कराके याद रखो, बुरा करके भूल जाओ, करके याद रखो।

विश्वास करो तुम पर भगवान की बड़ी कृपा है, तभी तो वह मनुष्य देह और विशेष कृपा से भजन करने की बुद्धि और सुअवसर मिला है।

‘यदि तुम ईश्वर के प्रीतिपात्र होना चाहते हो तो ईश्वर जिस स्थिति में रखना चाहे उसी में सन्तुष्ट होना सीखो।’

राधा याद रखो—जिस पर ईश्वर की कृपा होती है, सांसारिक सुखों का उसी को अभाव होता है। जो विपत्ति में भगवत्कृपा का दर्शन करते हैं वे ही भगवत्कृपा के सदाय अधिकारी हैं।

भगवत्प्रेम अत्यन्त दुर्लभ होने पर भी सहज ही प्राप्त हो सकता है, यदि कोई अनन्य उद्योग के साथ इसके लिये भगवान पर निर्भर हो जाय।

जीवन बहुत छोड़ा है। सबसे प्रेमपूर्वक हिल-मिलकर चलो, सबसे अच्छा कर्ताव करो, अनृत का वित्तार कर जाओ, विष की बूंद कहीं भी न डालो। तुम्हारा प्रेमपूर्ण व्यवहार अनृत है और वैषम्यपूर्ण व्यवहार ही विष है।

याद रखो जिस कार्य के परिणाम में अपना और दूसरों

का हित हो, वही धर्म है और जिसके परिणाम में अपना और दूसरों का अहित हो, वही पाप है।

प. पू. श्री भाईजी की अतुल सम्पत्ति :-

- १) सबमें भगवान को देखना ।
- २) भगवत्कृपा पर अटूट विश्वास ।
- ३) श्रीभगवान का अनन्य आश्रय ।

शरमाइये मत । दोनों हाथ ऊपर उठकर बोलिये
जय जय श्री राधे, जय जय श्री राधे, जय जय श्री राधे,

* ॐ नमःश्रीराधिकायै *

ऋग्वेदीय श्रीराधिकोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता मनो मे वाचि प्रतिष्ठितामिरादीन्द्र
एधि। वेदस्य न आर्णीत्यः श्रुतं मे न प्रहृत्सीः अनेन धितेनाहोरात्रान् संव्रजाम्युतं
यदिध्यामि। सत्यं यदिध्यामि। तन्मायवतु। तद्वत्तारमवतु। अयतु मानवतु
वत्तारमवतु। यत्तारम्॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

ओमद्योर्ध्वमन्विन ऋषयः सप्तकाण्डा भगवन्तं हिरण्यगर्भमुपासित्वांशुः
देव काः परमां देवः का वा तच्छक्तयः, तासु च का-वरीयसी भवतीति
सृष्टिहेतुभूता च कोति॥ सद्योवाच। हे पुत्रकाः शृणुतेदं इवाव गुह्याद् गुह्यं
तस्मै प्रकाश्यं, यस्मै जन्मै न देवम्। लिङ्गाय, ब्रह्मादिने, गुरुभज्जाय, देवमन्त्रया
दातुर्गुह्यपदम्वदतीति। कृष्णां ह वै हरिः परमो देवः षड्विधैश्वर्यं परिपूर्णो भगवान्
गोपीगोपसेव्यो वृन्दाऽराधितो वृन्दायनाधिनाथः, स एक एवेश्वरः। तस्य ह्यै हेततनु

नारायणोऽखिलब्रह्मात्मकोऽपि रतिनेकोऽहः प्रकृतः प्राचीनो नित्यः। एवं हि तस्य शक्तयस्तदनेकत्वात्। आह्वादिनी-सन्धिनी-ज्ञानेच्छा-क्रियाद्याः बहुविधाः शक्तयः। तास्वाह्वादिनी वरीयसी प्रस्मान्तरङ्गभूता तथा कृष्णेन आरुच्यता इति तथा चक्षुषं समारुध्यति सदेति सविषा गान्धर्वेति। अन्तर्दिश्यते इति। अस्या एव कायव्यूहस्या गोप्यो महिष्यः श्रोतव्येति। येयं तथा यश्च कृष्णो रसाब्धिर्देहेनैकः क्रीडनाथो द्विगोऽभूत्।

एषा वै सर्वेश्वरी सर्वविद्या सन्नातनी कृष्णमन्त्रादिदेवी चेति, विविक्ते वेदाः स्तुवन्ति, चस्या गति ब्रह्मभागा वदन्ति। महिमाऽस्याः स्वायुर्मानेनापिकालेन यक्तुं न शीत्ताहे। सैव यस्य प्रसीदति, तस्य कर्तृत्वात्कलितम्यस्यमेति। एतामप्यज्ञाय यः कृष्ण मास्वयितुमिच्छति, स मूढनामोमूढतमश्चेति। अथ हैतानि नामानि गायन्ति श्रुतयः।

तथा सर्वेश्वरी स्यात् कृष्णमन्त्रादिदेवता। सर्वाद्या सर्ववन्द्या च पुन्यवन्दितारणी। पुन्यवन्त्या तन्मोक्षोपयोगिण्युक्तिः। तां च सत्यं सत्यनाम्ना श्रीकृष्णकल्पा। दृष्टमानुसुता गोपी मृतप्रवृत्तिरेश्वरी। गान्धर्वं सधिका स्यात् रुक्मिणी परमेश्वरी। परात्पराया पूर्णा पूर्णवन्दनीमानसा। मुक्तिमुक्तिप्रदा नित्यं भक्त्याभिषिन्नाक्षिणी।

इत्येतानि नामानि यः पठेत् स जीवन्मुक्तो भवति इत्याह तिरुण्णगनी भगवानिति। सन्धिनी तु धामभूषणशय्यासनादिमित्रभृत्यादिरूपेण परिणता मृत्युलोकाधतरणकाले मातृ-पितृ रूपेण पाऽसीदित्यनेकावतारकारणा ज्ञानशक्तिस्तु क्षेत्रज्ञशक्तिरिति, इच्छानामूता माया सत्त्वरजस्तमोमयीबहिर्ना जगत्कारणभूता सैवाऽविद्यारूपेण जीवबन्धनभूता क्रिया शक्तिस्तु लीलाशक्तिरिति। य इमामुपनिषदमधीते, सोऽवती वतीभवति, स वायुपूतो भवति, स सर्वपूतो भवति, स्यात्कृष्णप्रियो भवति, स आरुच्यक्षुः पातं पक्तीः पुन्यति। ॐ तत्सत्।

“इति श्री श्रीमद्भगवदे ब्रह्मसूत्रे परमरहस्ये श्रीराधिकोपनिषद् सम्पूर्णा”

भावार्थ : सर्वरिता सनकादि महर्षियों ने भगवान् श्रीब्रह्माजी की स्तुति करने का पूछा है देव! सर्व प्रधान देवता कौन है और उनकी कौन कौन सी शक्तियाँ हैं। उन शक्तियों में सृष्टि का सर्व श्रेष्ठ कारण कौन सी शक्ति है? इनकी उचन सुनकर श्री ब्रह्माजी बोले है वेदा! श्रुतों, किन्तु इसमें अति गोप्य बातों को

प्रकट ना करने और ऐरे-गैरे को इसे मार बताना। हाँ, जो स्नेही हो, ब्रह्मवादी हो, गुरुभाक्त हो, उन्हें अवश्य देना, नहीं तो देने वाले को महान पाप लगेगा। श्री हरि श्रीकृष्ण ही परम देव हैं, ये छोटी ऐश्वर्यों से परितुर्ण श्रीभगवान हैं, यह गोपियों और गोपों के सेवक हैं, ये वृन्दा के द्वारा जगत्पति हैं, ये श्रीवृन्दावन के अधीश्वर हैं और ये ही एकमात्र सर्वेश्वर हैं। उनकी श्रीहरि के नारायण भी एक रूप हैं, जो अखिल ब्रह्माण्डों के अधीश्वर हैं। ये ही एक श्रीकृष्ण स्वभावतः प्रकृति से परे और नित्य हैं। इस प्रकार इनकी शक्तियों भी अनेक हैं। अणुविनी, सन्धिनी, ज्ञानेश्वर, क्रिया आदि बहुत सी इनकी शक्तियाँ हैं। उन आङ्गादिनी सर्व प्रधान शक्ति हैं, ये परम अन्तरात्मा मुता है, 'ये राधा' हैं, जिनका आराधन श्रीकृष्ण भी करते हैं।

श्रीराधा श्री श्रीकृष्ण का सदा आराधना किया करती है। ये इसीलिए यह राधिका कहलाती है। श्रीराधिका की गान्धर्वा भी कहते हैं। दुर्गा श्रीराधिका के शरीर से गोपियाँ, श्रीकृष्णकी महिलायों और लक्ष्मीजी उत्पन्न हुई हैं। ये जो श्रीकृष्ण हैं, ये रक्त सागर श्रीकृष्ण ही एक रूप से दो रूप हो गये हैं। यह श्रीकृष्ण का युगल स्वयम् भक्तोद्धारिणी कीकाके निमित्त ही हुआ है। यह श्रीराधा सर्वेश्वर भगवान् श्रीकृष्ण के सदा सर्वेश्वरी हैं। ये श्रीकृष्ण की समस्त विद्याओं में सनातनी हैं। वे श्रीकृष्ण की प्राणायिका प्रेमसी हैं- ऐसा एकान्त में चारों ओर भी स्तुति किया करते हैं, और जिनकी गति ब्रह्मवादी अबि जानते और कहते हैं। इनकी महिमा को हम (ब्रह्मा) अपने आयु पर्यन्त भी वर्णन करने में सर्वथा असमर्थ हैं। वे ही श्रीराधा जिस पर प्रसन्न होती हैं, उसके हाथ में परम धाम आ जाता है। इन (राधा) की अवज्ञा करके जो मात्र श्रीकृष्ण का आराधन करने की इच्छा करता है, वह भूदतम है। इन (श्रीराधा) के ये नाम हैं -

१. श्रीराधा, २. लक्ष्मी, ३. रम्या, ४. कृष्णमन्त्राधिकारिणी, ५. सर्वोद्या,
६. सर्ववन्दा, ७. वृन्दावनविहारिणी, ८. वृन्दावाद्या, ९. रमा,
१०. अशेषगोपीमण्डलपूजिता, ११. राधा, १२. सत्यपरा, १३. सत्यमाना,
१४. श्रीकृष्णवल्लभा, १५. वृषभानुसुता, १६. गोपी, १७. नृलज्ज्वली, १८. ईश्वरी,
१९. गान्धर्वा, २०. राधिका, २१. आरम्या, २२. रत्निनी, २३. परमेश्वरी,
२४. परातपस्तरा, २५. पूर्णा, २६. पूर्णवन्दनिमानना, २७. भुक्तिमुक्तिप्रदा,
२८. भवयाधिदिनारिणी।



इन (सप्तविंशति) २८ नामों को जो पढ़ते हैं, वे जीवनमृत्यु को जीते हैं ऐसा भगवान् श्रीकृष्णजी ने कहा है। इस प्रकार श्रीकृष्ण की आकाशदिनी शक्ति श्रीराधा का वर्णन किया, अब श्रीकृष्ण की सन्धिनी शक्ति का वृत्तान्त सुनी। यह (सन्धिनी) शक्ति, ध्यान, मूषण, जप्या, आसन आदि तथा निज मृत्यादि रूप से परिणाम को प्राप्त होती है और मृत्युलोक में अवतार लेने के समय माता और पिता रूप से परिणाम को प्राप्त होती है। यही अनेक अवतार का कारण है। ज्ञान शक्ति को ही सेवज्ञ शक्ति कहते हैं और इच्छा शक्ति को अन्तर्भूत नाकशक्ति है। यह सत्त्वगुणतमो गुण रूपा है और बहिरङ्ग है, जड़ है। जड़ होने के कारण श्रीभगवान् की दृष्टि पड़ने से अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों को उत्पन्न करती है और यही माया अविद्या रूप से जीव का बन्धन करती है। क्रियाशक्ति ही लीलाशक्ति है। जो इस उपनिषद् को पढ़ते हैं, वे अग्रही भी ब्रती हो जाते हैं, वे समस्त तीर्थों में स्नान हो जाते हैं, वे अग्निपूत हो जाते हैं, वे वायुपूत हो जाते हैं, वे सर्वपूत हो जाते हैं, वे श्रीराधाकृष्ण को प्यारे हो जाते हैं और वे जहाँ तक दृष्टिपात करते हैं, वहाँ तक सबकी पवित्र कर देते हैं। ॐ तत्सत्।

अथर्ववेदीय श्रीराधिकातापनीयोपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षिभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाग्म सस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्वतोदाः।
स्वस्ति नस्तारक्षसो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्ति:!!!

वसुधादिनां वदन्ति, कस्मादाधिकामुपासते आदित्योऽभ्यद्रवत् ॥१॥
शुभ्य ऊचुः सर्वाणि रुचिजन्या देवतानि सर्वाणि मृतानि राधिकमुपासतां



नमामः॥३॥ देवतागतभानि कमनीयं राधाया इत्यन्ति नृपयन्ति च
सर्वोपि कलादेवतानि। सर्वपापक्षयार्थेति व्याहृतिभिर्दत्ताऽथ राधिकायै नमामः॥३॥
नारायणायः कृष्णदेवोऽपि गौरी उवाच देवदेवन्दगीत प्रमत्तः भृङ्गः कनका
कोकिलकञ्चुकि गौरारत्नां राधिकां दिव्यधात्रीं नमामः॥४॥ यस्या अगम्यता श्रुत्या
सात्त्वयोजीया वैदान्ताणि ब्रह्मभाषं यदन्ति। न यां मुरगानि विदन्ति सम्यक् तां
राधिकां देवधात्रीं नमामः॥५॥ जलदुर्भु विषा संनोहनस्य श्रीकृष्णस्य
प्राणतोऽधिकारिणि। वृन्दास्यै स्वेच्छदेवी च निदं तां राधिकां वनवात्रीं
नमामः॥६॥ यस्या रेणु पादयोर्विश्वमतीं पारयते मुनिं रहसि प्रेमयुक्तः। खस्तरेणु
कवरीं न रनरेद्यल्लीनः कृष्णः कीतवतुतां नमामः॥७॥ यस्या लीला चन्दमा
देवपान्थीं दृष्ट्वा माना आत्मनो न स्मरन्ति। वृन्दास्यै स्वादत्ता जलभास
भाताविष्टा राधिका तां नमामः॥८॥ यस्या अङ्गे विलुण्ठनं कृष्णदेवी गोलोकाख्य
नैव सस्मात् धामपदं साक्षा कमला गौराधुनी तां राधिकां शक्तिधात्रीं नमामः॥९॥
खरे गौनेश्च त्रिभिर्मूर्च्छनाभिगीता देवी राधिकाः प्रेमयुक्ता। बाढीं निहा
याऽतर्नादेकलक्ष्म्या वृन्दास्यै राधिकां तां नमामः॥१०॥ जगदिदृक्ता द्विभुजा
कृष्णदेहा वरीरन्ध्रैर्वाद्यानासपत्रे। यस्यामृता
कुन्दमन्तलुधैर्माताकुत्साऽनुनयेदेवदेवः॥११॥ यैव तया गङ्गा कृष्णो
रसाब्धिर्देहाधैकः वीङ्गनाथं द्विजऽमृतं। दत्तो यथा जगदया शोभमानः शृण्वन् पठन्
याति उद्धाम दुद्धाम॥१२॥ वीरिण्यै न गृहस्थतिं चारीण्यथापयति
वज्रनाभस्तथापि नित्यमहः॥१३॥

॥ इति श्रीमद्भक्त्यर्थवेदीय श्रीराधिकातापनी उपनिषद् ॥

अथर्ववेदीय श्रीराधिकातापनी उपनिषद्

भावार्थ- उक्तवादी अधिपति को चित्त में वह तर्क उत्पन्न हुआ कि अन्य
उपनिषद्वादी को छेड़ श्रीराधिका की ही उपासना कदी की जाती है? उसी क्षण
एक तेज का पुङ्गु प्रकट हुआ। वह तेज भूतियों का समुदाय ही था ॥१॥ भूतियों
ने कहा-



सम्पूर्ण उपासक देवताओं में देवत्व शक्ति श्रीराधिकाजी से ही अभिभूत होती है, अतएव समस्त अभिभूत और अधिदेवी की जननी श्रीराधाजी को हम सब नमन करती है ।१२॥

श्रीराधिकाजी की कृपा के सत्ता मात्र से देवता आनन्दित हो-होकर हँसते और नृत्य करते हैं और उनकी भक्तियों के गेज पक होने मात्र से थर-थर काँपते रहते हैं। अतः हमें किसी प्रकार के दुष्पन न उभा लेने, इसीलिये व्याकृतियों से स्तब्ध करती हुई हम श्रीराधाजी को नमन करती हैं ।१३॥

इन्द्रनील गणियों के समान भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र का श्याम विग्रह भी जिसकी कानि से गौर प्रतीत होता है। काकादि जैसे क्रूर कर्म प्राणी भी जिसकी दृष्टि से पुनीत बन जाते हैं, उन विश्व माता श्रीराधिकाजी को हम सब नमन करती हैं ।१४॥

जिसका हम श्रुतियों और साक्षात् योग, वेदान्त भी पार नहीं पा सकते एवं पुराण भी जिसका वर्णन नहीं कर सकते, उन बहुस्वरूपिणी श्रीराधिकाजी को हम प्रणाम करती हैं ।१५॥

जगन्निगन्ता विश्वविमोहन श्रीनन्दनन्दन की प्राणाप्राण अपनी चरनोपास्या, शरणागती को अनन्य देने वाली श्रीराधिकाजी को हम सब प्रणाम करती हैं ।१६॥

ऐसे परमेश्वर विश्वम्भर श्रीनन्दनन्दन उस कति में जिनकी चरण रज को भी भरतक घर घर लेते हैं और जिनके प्रेम में अपनी नुस्ती-सफुट आदि विभूतियाँ को भी मुला देते हैं एवं स्वयं निकट हुए से प्रतीत होते हैं, उन श्रीराधिकाजी को हम नमन करती हैं ।१७॥

गुन्दावन में जिसकी अद्भुत लीला देखकर चन्दना और देवाह्वानों निमग्न होकर अपने शरीर की सुधि-बुधि भूल जाती हैं और प्रमोन्मत्त घर भी अघर की भाँति सबा बन बैठते हैं, उन श्रीराधिकाजी को हम सब प्रणाम करती हैं ।१८॥

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जिनकी अङ्गुली शय्या के आगे शक्तिदानन्द रूप्य अपने गोलोक का भी स्मरण नहीं करते, लक्ष्मी और पावती आदि सभी शक्तियाँ जिनकी अंशस्वरूपा हैं, उन शक्तिसिन्धु श्रीराधिकाजी को हम सब प्रणाम करती हैं ।१९॥



सखियों वर राधा और सुखदेवियों के द्वारा जिनके गुणों का ज्ञान करती है और उनको इस के वशीभूत हो जिनसे अपनी एक सखि से इन्द्रावन में बाढ़ी लड़ि रह दी। अर्थात् राधा-विलासा की आनन्द सुधा का अतिभिन्न रूप से पान कराया, उन श्रीसखिकाजी को हम प्रणाम करती है ॥१०॥

कभी छिभुज श्रीकृष्ण का रूप धारण करके सुन्दर लगी पर मुकुल अंगुलि रखकर मुस्ती बजाती है और श्रीनन्द-नन्दन कुन्द कल्पवृक्ष आदि के पुष्पों से जिनका भंडार करते हैं, उन श्रीसखिकाजी को हम नमस्कार कराती है ॥११॥

श्रीराधा और श्रीकृष्ण दोनों एक ही रस के समुद्र हैं, कंचल नाभि जो आनन्द देने वाली लीलाजी के लिये ही तो रस बने हैं। वस्तुतस्तु ये दो रूप श्री देह और छाया के समूह ही हैं। कभी किसी दल में भी इनका विद्वान् नहीं होता। इनको चरितानूत को जहाँ ज्ञान पीकर भक्तजन विह्वलपद की प्राप्ति कर लेते हैं, अर्थात् राधा के लिये जन्म बन जाते हैं ॥१२॥

अब इस विद्या की गुरु परम्परा बजते हैं। यह तत्त्व ज्ञान अद्वैत से वशिष्ठ को, उनसे बृहस्पति को, उनसे उनके शिष्य कण एवं इन्द्रादि को प्राप्त हुआ ॥ इति ॥

श्रीराधारसमञ्जरी

कुन्द-कलह-भठरां कंसखिलीनमाका

विपुलतरनितम्बा पल्लविम्बापरोष्ठी।

पुण्यमयिवरया-स्कन्ध-विन्दारलहरता

निधुवनरसपुत्रं कति राधा निकुञ्जम् ॥१॥

रामनिरुपमलालारम्भसम्भावनरीया

रतिरुमराभीरुभीरुनारीपु वीर।

निकटविनयबद्धोद्धृतकान्तरप्रजापत

नखविधत्पुत्री कति राधा निकुञ्जम् ॥२॥

श्यामप्रेमविन्दोदितो मधुरिमावालयरे स्नेहिनी
 गौरी प्रेमवती शुभा च सुमगा प्रेमाधिरुचिनी ।
 गण्डे मण्डितकुण्डला कटितट पारो मुदा किंकिणी
 लौलाकाङ्क्षदेहिनी विजयते वृन्दावन-स्थायिनी ॥५॥
 बुद्धस्यर्पणविहङ्गिनी परितरास्तवप्यस्तम्भोहिनी
 तामारुनविलासिनी मधुरिमावालयरे वशिनी ।
 कृष्णप्रेमतर्पणी निरवधि प्रेमानुतालापिनी
 श्यामप्रेमविन्दोदितो विजयते सदा सुखदेहिनी ॥६॥
 राधेयं नवयौवनाय युवयवोत्पलासेन सौन्दर्यिता
 सुरमराधरविम्वयन्दादना हेमद्विकान्तयुज्ज्वला ।
 नित्यं कल्पवृक्षे निवसिता वसेन मूषामयी
 मानाशक्तिसमन्विता वितनुते प्रेमप्रवृत्तिं सदा ॥७॥
 नानामीतविलासनृत्यर भरीशपूरित विडमुखं
 गौरी चन्द्रमुखी सहाजनयनी कन्दर्पसम्भोहिनी ।
 रम्भाचालनितम्बिनी साकली प्रेमानुताप्यासिनी
 राधा काञ्चनदेहिनी विजयते वृन्दावन-स्थायिनी ॥८॥
 यक्त्रे चन्द्रविलसिनी नयनयोः प्रेम्णा कृपापाणिनी
 विम्बोपधस्तन्तुकिविलसन्मुक्तावलीवन्दिना ।
 दीर्घकाङ्क्षिसगुल्लरात्युलकिनी सन्यासविन्यासिनी
 राधा काञ्चनदेहिनी विजयते कालव्यकल्पोहिनी ॥९॥
 या श्रीः सत्पति स्वर भरावती प्रेमानुसङ्गादिनी
 या नित्या मधुनागिणी सुखमयी संतोषरुचिनी ।
 या राधा शुद्धिया युधारसमयी कृष्णप्रिया दुर्लभा
 सा जीवन्ति शितिवन्दते प्रियतमा वृन्दावनावासिनी ॥१०॥
 प्रेमोदयारिदृगन्तवीक्षणलतामाजीरवन्ती परा
 मानाभावविकासिनी सुमधुरा स्नेहातिव्यानगाम्
 प्रोद्यत प्रोद्युतिशतकुम्भसदिकादेहा मनोहारिणी
 श्रीमन्नागन्तारस्त्वजलवि श्रीराधिकामाश्रये ॥११॥
 श्रेय विधाति परिनिन्दितहेमजानी



अत्यन्तादनुत्तनुन्ती चित्तसुधावाक्यामृतं सखिका॥
 ईशद्वार्यमुखी करानवनी गौरी सुधासारिणी
 प्रेमानन्दविलासिनी विलनुते प्रेमप्रवृत्तिं मुहुः॥१७॥
 श्रीराधा रतीमादमुग्रहृदया लीलायमानेक्षणा
 पाणी पुष्पधनुः सखी भवदवती वृन्दावने ज्वेदति।
 आश्चर्यरमिधुम्बने रतिवत्सलापैश्च सन्निविता
 गोविन्देन समं सखीगणवृता सखीवत्सव कुर्वती ॥१८॥
 श्यामालिङ्गितागौरुहस्ततया मधस्थविद्युक्कपि
 निन्दनी विकचान्बुजद्वयरुचि पद्म्या तिस्कुर्वती।
 सखीसा रतिकैलिनन्दचतुरस्रीणां शिरोमूषणा
 श्रीमन्तामररासरत्नजलधि श्रीसयिकामाश्रये ॥१९॥
 रसोल्लासदिलास-गालु-रसिवाता सौन्दर्यसीमाश्रया
 रता प्रेममयी रति च कुर्वते वृन्दावने सुन्दरी।
 श्रीकृष्णेन समं प्रफुल्लकुरसुगैर्षाद्विरेफ्युता
 श्रीवृन्दावनदेवता विजयते राधा सुधामञ्जरी ॥२०॥
 प्रेमानन्द-विलास-हृदय-रसिका श्यामा सखीवत्सना
 गोपीमण्डलमण्डिता वरतनुः सितदूरसीमन्तिनी।
 श्रीवृन्दावनरासकौतुककरा पीनरतनोल्लासिनी
 श्रीकृष्णस्य दिनोदिनी दिजयते श्रीलक्ष्मणा मादिनी ॥२१॥
 उत्तप्तहेमरुचिरा वृषभानुकम्पा
 आकर्णनैत्रयुगला वृत्तपद्यहस्ता।
 स्वर्णदिनूरणमुता नवलमस्तजी
 संख्यातहस्तसखिमिजयतीह राधा ॥२२॥
 तप्तकाञ्चनगीशंगी राधा वृन्दावनेश्वरीम्।
 वृषभानुसुता देवी प्रजमानि हरिप्रियाम् ॥२३॥
 राधायाः कलावीतगौरविरणीवृन्दावनान्तर्गता
 कृष्णमत्तमयूरकोकिलगणा भृङ्गाः कुरजः शुफलाः।
 कृष्णव्यादनुत्तनुता-रास-रसिका श्रील्लासनुग्याशया